

श्री वर्द्धमानाय नम ।

॥ श्री आवश्यक सूत्र ॥

॥ प्रथम भाग ॥

(श्रावक प्रतिक्रमण)

हिंदी पदार्थ और भावार्थ कर्त्ता,
जैन मुनिश्री उपाध्याय आत्मारामजी (पंजाबी)

प्रकाशक,
श्रीमान् लाला मुन्शीराम जि़लेदार (कपनाल)
मिष्टर कशोरीलाल गार बी.एस.सी (गलासगो)
स्टेट इंजनीयर, रयास्त फरीदकोट (पंजाब)

श्री महावीरनिर्वाणाब्द २४४१ ॥ ई स १९१५ ॥

प्रथमावृत्ति प्रत १०००

अहमदाबाद
यह पुस्तक टंकशालमें धी युनियन प्रिन्टींग प्रेस कंपनी लीमीटेडमें
मोतीलाल सामळदासने छापा

FORE WORD.

This treatise has been very kindly written by Upadhyaya Shree Atma Ramji, to meet the long-felt want of the Jain community for having a well-compiled Hindi *Avashyaka Sutra* (Jain prayer book), at the request of S S Jain Sabha, Punjab The contents will assure the Jain public of its superiority in true and idiomatic Hindi translation to such other publications The reader will admire the true sense of the well considered commentary where ever required The S S Jain Sabha Punjab, some time ago, resolved to get it published for the use of the Jain public and sent the manuscript to Ajmer for consultation It was by that time that Lala Munshi Ram Zilladar and Mr Kishori Lal Gair B Sc State Engineer, Faridkot, undertook to get it published at their own expenses out of deep love for Jain religion The S S Jain Sabha Punjab is very much indebted to the author, Upadhyaya Shree Atma Ramji as well as to the publishers This publication will do immense good to the community as regards its daily prayers (नित्यकर्म) and I am sure that the reader will be benefitted by its perusal The book is to some extent new in its style etc, and is worth reading as well as committing to memory for those who hold a religious bent of mind S S Jain Sabha is also thankful to Lala Munshi Lal M. A., Government Pensioner, Lahore, for the labour of love he took in rendering this book into pure Hindi

KASUR
Dist Lahore

PERMANAND B A.
Pleader, Chief Court,—Punjab

Opinion of Shriman Lala Munshi Lal Ji, M A.

Government Pensioner, Lahore

I have gone through the Hindi of the book named Avashyaka Sutra, written by Jain Muni Shri Upadhyaya Atma Ram Ji The book is, in deed, a very useful one for the Sadhus and the Shrawakas. It lays down rules for the performance of daily worship and puts stress on the fact that our contemplation of the Supreme soul should be pure and uncontaminated and that we should lead a life of virtue and truth and be compassionate to all creatures Such books are really worthy of being read and patronised by the general public

MUNSHI LAL M A,
Government Pensioner,
LAHORE

अर्हम्

लेखककी प्रस्तावना ॥

प्रिय महोदयवर ! आत्मोन्नतिके लिये नित्य क्रिया करनी आवश्यकीय हैं-क्योंकि इसके द्वारा जीव अपनी उच्च पदवीके योग्य हो जाता है,-सो प्राणी मात्रके हितके लिये श्री अर्हन् देवने धर्मक्रिया वर्णन की हैं, जिनके धारण करनेसे इस लोक और परलोकमे जीव सुदर फलको अनुभव करता है। अपितु अगसूत्र व उपाग सूत्र, च्छेद सूत्र, मूल सूत्र, कालिक सूत्र, उत्कालिक सूत्र इत्यादि सूत्रोंसे व्यतिरिक्त श्री भगवान् वर्द्धमान स्वामीने आवश्यक क्रियाओंको प्रतिपादन करनेवाला आवश्यक सूत्र रचा है जिसमें साधु साध्वी श्रावक श्राविकाओंके नित्य कर्मका सुदर प्रकारसे वर्णन किया गया है, जिसके षट् अध्याय हैं—जैसेकि—सामायिक १, चतुर्विंशति स्तव २, वदना ३, प्रतिक्रमण ४, कायोत्सर्ग ५, प्रत्याख्यान ६, यही षट् आवश्यक अवश्य करणीय हैं जिनका फल श्री उत्तराध्ययन सूत्रके २९ वे अध्यायमे निम्न प्रकारसे लिखा है—

तथा च पाठः ॥

सामाइएणं भंते जीवे किं जणयइ सामाइएण सावज्ज जोगं विरइं जणयइ ॥ उ० सू० अ० २९ सू० ८ ॥

अर्थ—हे भगवन् ! सामायिक करनेसे जीव क्या फल उत्पन्न करता है ? हे गौतम ! सामायिकके करनेसे जीव सावद्य (पापके) योगोंकी निवृत्ति करता है, क्योंकि समतारूप (सामायिक) के करनेसे पापके योगोंकी निवृत्ति होती है। फिर आत्मा सम्वरमे प्रवेश करके पापकर्मोंके बंधनसे छूट जाता है ॥ यह प्रथम आवश्यकका फल वर्णन किया ॥

अथ द्वितीय आवश्यक विषय ॥

चउवीसत्थएण भंते जीवे किं जणयइ। चउवीसत्थएणं दसण विसोहिं जणयइ ॥ उ० सू० अ० २९ सू० ९॥

अर्थ—हे भगवन्! चतुर्विंशति स्तव (लोगस्स उज्जोयगरे)के पठन करनेसे जीव क्या फल उत्पन्न करता है? हे गौतम! चतुर्विंशति स्तवका पाठ करनेसे जीव सम्यक्त्वकी विशुद्धि करता है क्योंकि—चतुर्विंशति तीर्थकरोंकी स्तुति करनेसे जीव शुद्ध श्रद्धायुक्त हो जाता है॥

अथ वंदना आवश्यक विषय॥

वंदणएणं भंत्ते जीवे किं जणयइ वंदणएणं नीया गोयं कम्मं खवेइ उच्चा गोयं कम्मं णिबधइ सोहग्ग चणं अप्पडिहय आणाफलं निव्वत्तेइ दाहिण भावं चण जणयइ॥ उ० सू० अ० २९ सू० १०॥

अर्थ—वंदना करनेसे हे भगवन्! जीवको क्या लाभ होता है? वंदना करनेसे हे गौतम! आत्मा ऐसे कर्मोंका नाश कर देता है जिनसे नीच घरानेमें जन्म हो, और ऐसे कर्मोंको उपार्जन करता है जिनसे उच्च घरानेमें जन्म हो, फिर लोग उससे प्रीति करने लगते हैं और इसका परिणाम यह होता है कि वह अधिकारी वा माननीय पुरुष समझा जाता है, और सब लोग उसकी भलाई चाहते हैं तथा उसके अनुकूल हो जाते हैं॥

अथ *प्रतिक्रमण आवश्यक विषय॥

पडिक्कमणेणं भंत्ते जीवे किं जणयइ पडिक्कम

---

* स्थानांग सूत्रके पंचम स्थानके द्वितीय उद्देशमें आस्रवके पंच द्वार लिखे हैं जैसेकि–मिथ्यात्व १, अविरति २, प्रमाद ३, कषाय ४, योग ५। और पंच सम्वरके द्वार हैं जैसेकि–सम्यक्त्व १, विरति २, अप्रमाद ३, अकषाय ४, और अयोग ५॥ इनको धारण करना और पहिले पांचोंको दूर करना इसका नाम भी प्रतिक्रमण है। तथा ठाणांगजीके पंचम स्थानमें पांच प्रकारसे प्रतिक्रमण और भी वर्णन किया है॥ यथा–पंचविहे पडिक्कमणे प० तं० आसवद्दार पडिक्कमणे १, मिच्छत्त पडिक्कमणे २, कसाय पडिक्कमणे ३, जोग पडिक्कमणे ४, भाव पडिक्कमणे ५, तथा षष्टम स्थाने, छव्विहे पडिक्कमणे प० तं० उच्चार पडिक्कमणे १, पासवण पडिक्कमणे २, इत्तरिते ३, आवकहिते ४, जंकिं

णेणं वयच्छिद्दाइं पिहेइ पिहिय वयच्छिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असवल चरित्ते अट्ठसु पवयण मायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ ॥

उ० सू० अ० २९ सू० ११ ॥

अर्थ—प्रतिक्रमणके करनेसे हे भगवन्! जीव क्या फल उपार्जन करता है? प्रतिक्रमणके करनेसे हे गौतम! जीव व्रतोंके छिद्रोंको ढाप देता है। फिर वह जीव निरालवी हो जाता है और उसका चारित्र भी निर्दोष हो जाता है ॥ वह अष्ट प्रवचन दया मातासे भी युक्त हो जाता है अर्थात् ५ समिति ३ गुप्ति करके युक्त हो जाता है, और संयमके योगोमे तत्पर हो जाता है, फिर संयमको बडी सावधानीसे पालन करता है ॥

अथ कायोत्सर्ग आवश्यक विषय ॥

काउसग्गेणं भंते जीवे किं जणयइ काउसग्गेणं तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ विसुद्ध पायच्छित्तेय जीवे निव्वुयहियए ओहरिय भरुव्व भारवहे पसत्थज्झाणो वगए सुहं सुहेणं विहरइ ॥

उ० सू० अ० २९ सू० १२ ॥

चिमिच्छा ५, सोमणतित्ते ६, अर्थात् आस्रवद्वारोंसे निवृत्ति १, मिथ्यात्व और कषाय योग अशुभ भावासे भी निवृत्ति करना उसका नाम भी प्रतिक्रमण है। तथा षट् प्रकारसे भी प्रतिक्रमण वर्णन किया गया है जैसेकि–विष्टा मूत्रके पश्चात् ईरिया वहियादिको पढकर लोगस्सका ध्यान किया जाता है वह भी प्रतिक्रमण है और जो देवसी राइसीको प्रतिक्रमण किया जाता है वह भी प्रतिक्रमण है यावत् जीव पर्यन्त महाव्रतरूप प्रतिक्रमण वा अनशन व्रतको धारण करना वह भी पापसे निवृत्ति रूप प्रतिक्रमण है। मिथ्याचरणसे पीछे हटना वह भी प्रतिक्रमण है और जो शयन करनके पीछे ध्यानादिक क्रिया की जाती है उसका नाम भी प्रतिक्रमण है ॥

अर्थ—कायोत्सर्ग (ध्यान) के करनेसे हे भगवन्! जीवको क्या फल होता है? हे गौतम! कायोत्सर्गके करनेसे भूतकाल और वर्तमान कालके अतिचारोंकी §शुद्धि होती है, फिर अतिचारोकी शुद्धि होनेपर जीव स्वस्थ चित्तवाला हो जाता है, जैसेकि—भारवाहक ‡भारको उतारकर स्वस्थ चित्त हो जाता है, अन फिर वह सुदर ध्यानयुक्त होकर सुखपूर्वक विचरता है ॥

अथ प्रत्याख्यान आवश्यक विषय ॥

पच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ पच्चक्खाणेणं आसव दाराइं निरुंभइ पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ इच्छानिरोहंगएयणं जीवे सव्व दव्वेसु विणिय तण्हे सीयलभूए विहरइ ॥ उ०सू०अ०२९ सू०१३॥

अर्थ—प्रत्याख्यान करनेसे हे भगवन्! जीवको क्या लाभ होता है? हे गौतम! प्रत्याख्यानके करनेसे जीव आस्रवके मार्गोंको दाप देता है और इच्छाका निरोध कर देता है। फिर जब इच्छाका निरोध हो गया तब सर्व द्रव्योसे उस जीवकी निवृत्ति हो जाती है अपितु निवृत्ति होनेपर फिर वह जीव शान्तिरूप होकर विचरता है ॥

सो यह† षट् आवश्यक अवश्य करणीय है क्योंकि इनके करनेसे आत्मा अपने निज स्वभावमें प्रवेश करने लग जाता है। पुन श्री अनुयोग द्वारजी सूत्रमे आवश्यक सत्रके चार निक्षेप किए हैं जैसेकि—नामावश्यक १

---

§ योगाभ्यास भी इसका एक अग है ॥

‡ सूत्रकर्ताने सर्व जीवोंको सुगम रूप उदाहरणोंसे प्रतिबोधित किया है जैसेकि—इस स्थानपर भारवाहकका उदाहरण ॥

† जो प्रतिक्रमणमें लघुमत गुर्जर भाषामें लिखे गये है वे इस देशके प्रथानुसार हैं किन्तु जो षट् मतोंके अतिचार हैं उनसे भी ध्यान किया जा सक्ता है ॥

स्थापनावश्यक २ द्रव्यावश्यक ३ भावावश्यक ४ । सो भावावश्यक उभय (दोनो) काल अवश्य ही करणीय है किन्तु शोकसे लिखना पडता है कि अनेक विपत्तियोंके कारण सूत्रज्ञान अल्प हो गया, फिर मतभिन्नताके कारण बहुधा आवश्यक सूत्रमें अनेक गच्छधारियोंने अपनी २ आम्नायानुकूल अनेक प्रकारके पाठ संग्रह कर दिए, किसीने संस्कृतमे, किसीने प्राकृतमें और किसीने गुर्जर भाषामे। फल इसका यह हुआ कि—गच्छ २ का आवश्यक सूत्र बन गया, और कतिपय जनोंने तो इसकी वृद्धि करनेका ही ध्यान रक्खा कि—आवश्यक सूत्रकी श्लोक संख्या अतीव हो। सो इसका परिणाम भी यही निकला कि लोगोंने दोनो समय आवश्यक सूत्र (पडिक्कमणा) करना ही छोड दिया, क्योंकि—यह स्वाभाविक ही बात हे कि नित्यकर्मका पाठ अल्प हुआ करता है जिसको बालसे वृद्ध पर्य्यन्त सुखपूर्वक पठन कर सके। इस लिए यह आवश्यक सूत्र दोनो समय सुखपूर्वक पठन हो सक्ता हे और इसके पठन करनेसे अपने करणीय कार्योंका पूर्ण बोध हो जाता है। और इसको करते समय चार वस्तुओंका ध्यान अवश्य ही कर लेना चाहिए, जैसेकि—द्रव्य शुद्ध १, जो आवश्यक करनेके साधन योग्य हैं जैसे कि—आसन, रजोहरण, रजोहरणी, मुखपत्ति, अन्य वस्त्रादि शुद्ध होने चाहिए॥ क्षेत्र शुद्ध २, स्थान भी शुद्ध होना चाहिये जैसेकि—जिस स्थानमें असमाधि होवे वहापर आवश्यक भी शुद्ध नहीं हो सकेगा, इस लिए शुद्ध स्थानकी भी आवश्यकता है॥ काल शुद्ध ३, जो आवश्यक करनेका समय है वह उल्लंघन न करना चाहिये॥ भावशुद्ध ४, अन्त करणसे पडिक्कमणा करना चाहिए जैसे कि श्री अनुयोग द्वारजी सूत्रमे भावावश्यक विषय निम्न प्रकारसे लिखा है—

तथा च पाठः॥

सेकिंतं लोगोत्तरिअं भावावस्सयं जणं समणे वा समणी वा सावयो वा साविआ वा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवसिते तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तद-

प्पिअकरणे तब्भावणा भाविते अणत्थ कथ्थइ मण अकुव्वमाणे उवउत्ते जिण वयण धम्माणु रागरत्ते तम्मण्णे उभयोकाले आवस्सयं करेति सेत्तं लोगोत्त-रियं भावावस्सयं सेत्तं नोआगमतो भावावस्सयं सेत्तं भावावस्सयं। इमे एगट्ठिआ णाणा घोसा णाणा वंज णाणा मधेज्जा भवंति तंजहा आवस्सय अवस्स क-रणियं धुव निग्गहो विसोहीय अज्झयणं छक्कवग्गो नाओ आराहणमग्गो ॥ १ ॥ समणेणं सावएणय अ-वस्स कायव्वं हवति जम्हा अंतो अहो निसस्सय तम्हा आवस्सय नाम ॥ सेत्तं आवस्सयं ॥

अर्थ—शिष्यने प्रश्न किया कि हे भगवन् ! लोकोत्तर भावावश्यक कौनसा हे? तब गुरुने उत्तर दिया कि भो शिष्य! जो साधु, साध्वी, श्रा-वक, श्राविका, एकाग्र चित्तसे एकाग्र मनसे एकाग्र अध्यवसायोसे अर्थका उपयोग करते हुए, ओर आवश्यकमें पूर्ण प्रीति रखते हुए उसीकी पूर्ण भावना करते हुए अन्य कही भी मनको न करते हुए उपयोगपूर्वक जिन वचन और धर्ममे रगे हुए जो दोनो समय आवश्यक करते है उसे लोगो-त्तर नोआगम भावावश्यक कहते है ॥ और आवश्यक सूत्रका एक ही अर्थ है किन्तु नाना प्रकारके उदात्तादि घोष हैं और नाना प्रकारके ही इसके व्यंजन है और यह अवश्य करणीय है, ध्रुव हे, निग्रह करनेवाला है, न्याय पूर्वक हे, आराधक होनेका मार्ग हे, और रात्रिदिवसके अतरमें दोनों काल साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाओको अवश्य करणीय है, इस लिये ही इसका नाम आवश्यक हे । सो इस आवश्यक सूत्रके दो भाग हे। द्वितीय भागमें साधु साध्वीके षट् आवश्यक और इस प्रथम भागमे श्रावक श्राविकाओके अवश्य करणीय षट् अध्याय लिखे गए हैं। और श्री श्री श्री पूज्य १००८ श्री अमरसिंहजी महाराजकी आम्नायानुसार है, क्योंकि—श्री श्री श्री आ-

चार्य अमरसिंहजी महाराजकी आम्नाय सूत्रानुसार है जैसेकि—श्री ज्ञातासूत्रके पचम (पाचवे) अध्यायमें पथकजीने कार्तिक चौमासीको दो प्रतिक्रमण किए थे—

तथा च पाठ ॥

तत्तेणं से पंथए कत्तिय चाउम्मासियंसि कय काउसग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कमिओ कामे सेलयं रायरिसिं खामणठयाए सीस्सेणं पाएसु सघट्टए तत्तेणं से सेलए पंथएणं सोस्सेणं पाएसु संघट्टिए समाणे आसुरत्ते जावमिसि मिसेमाणा उठेत्ति२ एवं वयासीसे केसण भोएस अपत्थिय पत्थएजा ववज्जिए जेणं ममं सुहपसुत्तं पाएसु सघट्टेति तत्तेणं से पंथए सेलएणं एव वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिए करयलकट्टु—एवं वयासी अहणं भत्ते पंथए कय काउसग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंत्ते चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं वंदमाणे सीस्सेणं पाएसु मम संघट्टेमि त तुम्हं देवाणुप्पिया मम अवराहं तुमणं देवाणुप्पिया खमंतु मारुहंतुणं देवाणुप्पियाणात्ति भुज्जो २ एव करणयाए त्तिकट्टु सेलय अणगारं एयमट्ठं सम्मंविणयणं भुज्जो २ खामेइ। इति वचनात् ॥

अर्थ—तत्पश्चात् पथकजीने कार्तिक चातुर्मासीके दिन जबकि कायोत्सर्गका समय था उस समय देवसी प्रतिक्रमण किए पीछे और चातुर्मासी प्रतिक्रमण करनेकी आकाक्षा करते हुए शैलक राजऋषिको क्षमावनाके वास्ते अपने शिरसे उनके चरणकमलोंका स्पर्श किया, तब शैलक ऋषि अपने चरणोंको स्पर्शित हुआ जानकर तथा क्रुद्ध होकर बैठ गए। पुन इस

२

प्रकार कहने लगे—कौन है मृत्युकी इच्छा करनेवाला और हीन लक्षणोंका धनी, जिसने मुझ शयन किये हुएके चरणकमलोका स्पर्श किया है? इस प्रकार शैलक ऋषिके भयानक वचन सुनकर पथकजी भयको प्राप्त हुए और विनयपूर्वक दोनो हाथ जोडकर निम्न प्रकारसे विज्ञप्ति करने लगे कि—हे भगवन्! मै पथक नामक साधु प्रतिक्रमण कर रहा हू, मैंने देवसि सम्बन्धि पडिक्कमणा कर लिया है और चातुर्मासी सम्बन्धि प्रतिक्रमणकी क्षमापना करके आपको वदना कर रहा हू, इसी लिए ही मैंने आपके चरणकमलोका स्पर्श किया है, अत हे भगवन्! मेरे अपराधको क्षमा कीजिये, आप क्षमा करने योग्य हैं, मै फिर ऐसा अपराध नहीं करूगा ॥ इस प्रकारके शीतल वचनो करके शैलक ऋषिजीको शान्त किया ॥ तात्पर्य यह है कि नित्यम् प्रति प्रतिक्रमण करनेकी प्रथा न होने पर भी दो प्रतिक्रमण किए जाते थे। जब प्रतिक्रमण अवश्य करनेकी प्रथा है तब तो चातुर्मासी और सम्वत्सरीको दो प्रतिक्रमण अवश्य ही करने सूत्रोंसे सिद्ध हैं तथा यही आम्नाय श्री पूज्य* अमरसिंहजी महाराजकी है, और पचम आवश्यक अर्थात् पक्षीको १२ लोगस्स उज्जोयगरेका ध्यान, चातुर्मासीको २०, और सम्वत्सरीको ४० लोगस्सका ध्यान करना, क्योकि यह कथन पच व्यवहारानुकूल है और चातुर्मासी वा सम्वत्सरीको प्रथम देवसी प्रतिक्रमण फिर चातुर्मासी वा सम्वत्सरी प्रतिक्रमण करने चाहिये ॥

इस लिए ही मैने श्रीश्रीश्री १००८ परमपूज्य आचार्यवर्य श्री सोहनलालजी महाराजकी आज्ञासे तथा श्रीश्रीश्री १००८ गणावच्छेदक वा स्थविर पदविभूषित श्री स्वामी गणपतिरायजी महाराजकी आज्ञासे षडावश्यकका हिंदी भाषायुक्त अर्थ लिखा है। आशा है भव्य जन विधिपूर्वक आवश्यक सूत्रके पठनपाठनसे अपने अमूल्य मानुष जन्मको सफल करेंगे ॥

उपाध्याय जैन मुनि आत्माराम ॥

* श्री पूज्य अमरसिंहजी महाराजका नाम वर्तमानकालमें विख्यात होनेसे ही पुन २ लिखा गया है ॥

आवश्यक करनेकी विधि ॥

सुदर स्थानमे पवित्रतापूर्वक एक आसनपर स्थिति करके श्री सीमदर स्वामीजीको वंदना करके या वर्तमानमें अपने गुरुओंको वदना नमस्कार, तिक्खुत्तोके पाठसे तीन वार करके फिर, चोवीसत्था करनेकी आज्ञा लेकर निम्न लिखित पाठ पढे ॥ अरिहंतो महदेवो, फिर, इच्छाकारेण, फिर, तस्सोत्तरीका पाठ पढके एक लोगस्सका ध्यान करे, फिर नमो अरिहंताण कहके ध्यान पारे, फिर एक चउविसत्था उदात्त स्वरसे पढे, फिर वामा जानु ऊचा करके दाहिण जानु भूमिपर रखकर दो नमोत्थुण के पाठ पढे–प्रथम सिद्धोका द्वितीय अरिहंतोका, फिर तिक्खुत्तोके पाठसे वदना करके प्रतिक्रमण करनेकी आज्ञा लेकर प्रथम–आवस्सही इच्छाकारेण, यह पाठ पढे, फिर नवकार मंत्र, फिर, करेमि भत्ते सामाइय, फिर, इच्छामि ठामि का पाठ, फिर, तस्सोत्तरी करनेका पाठ, फिर, ध्यान करे। ध्यानमें ९९ वे अतिचार और इच्छामि आलोइय पर्यन्त ध्यान करे। ध्यानमे–जो मे देवसि (राईसि) अइयारकउ चिंतउ–ऐसे कहे, फिर नमो अरिहंताण कहके ध्यान पूर्ण करे। फिर तिक्खुतोके पाठसे वदना करके लोगस्स उज्जोयगरेका पाठ पढे। फिर वदना करके इच्छामि खमासमणोका पाठ दो वार पढे। फिर तिक्खुतोके पाठसे चतुर्थ आवश्यककी आज्ञा लेकर वही सर्व अतिचार §पढे। फिर तिक्खुतोके पाठसे वदना करके श्रावक सूत्र पठन करे। फिर दो वार इच्छामि खमासमणोका पाठ पढके यथाशक्ति पचपदोको वदना नमस्कार करके फिर अनत चौवीसीका पाठ पढे। फिर सर्व जीवोंको खमावना करके आवस्सही इच्छाकारेण, नमोकार मत्र, करेमि भत्तेका पाठ, इच्छामि ठामि काउस्सग्ग, फिर तस्सोत्तरीका पाठ पठन करके कायोत्सर्ग

§ किन्तु सर्व पाठोंके अंतमें जो मे देवसि अइयारकउ तस्स मिच्छामि दुक्कड, ऐसे कहे ॥

करे। नित्यम् ‡प्रति ४ लोगस्सका ध्यान करे, फिर नमो अरिहंताणं पढ़कर एक लोगस्स उज्जोयगरेका पाठ और दो वार इच्छामि खमासमणोका पाठ पढकर, फिर तिक्खुत्तोके पाठसे वंदना नमस्कार करके यथाशक्ति प्रत्याख्यान करे। यदि गुरु प्रत्याख्यान करवाए तो वोसिरामि आप कह लेवे। फिर पूर्व विधिपूर्वक दो नमोत्थुणके पाठको पढे और समय धर्म ध्यानमें व्यतीत करे। जब सामायिक पूर्ण हो गइ ज्ञात करे तब "इच्छाकारेण" इत्यादि सूत्र पढके "तस्सोत्तरी करणेण" के पाठको पठन करे। तत्पश्चात् एक "लोगस्स उज्जोयगरे"का ध्यान करे, फिर "नमो अरिहताण" ऐसे कहके ध्यान पार करे। एक लोगस्स उज्जोयगरेके पाठको उच्च स्वरसे पढ। फिर प्राग्वत् दो नमोत्थुण पढके नवमा सामायिक व्रत इस सूत्रको पढे। एतावन् मात्र सूत्रोंके पठन करनेसे सामायिककी आचना हो जाती है। फिर चतुर्दश नियम धारण करे जिनके करनेसे महान् कर्मोंका आस्रव निरोध होता है, सो सर्वथा आस्रवका निरोध हो जानेपर जीव मोक्षाधिकारी बन जाते हैं॥

॥ इति विधि समाप्त ॥

---

‡ पक्खिके १२, चातुर्मासिकी २०, सम्वत्सरीको ४० का ध्यान करना चाहिये ॥

|| णमोत्थुण समणस्स भगवतो महावीरस्सणं ||



श्रावक प्रतिक्रमण ||

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगल देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥१॥

हिंदी पदार्थ—(तिक्खुत्तो) तीन वार (आयाहिण) गुरु महाराजजीकी दक्षिण ओरसे लेकर (पयाहिण) प्रदक्षिणा (करेमि) करता हू (वंदामि) स्तुति करता हू (नमसामि) नमस्कार करता हू (सक्कारेमि) सत्कार देता हू (सम्माणेमि) सन्मान देता हू। गुरुदेव कैसे हैं (कल्लाण) कल्याणकारी (मगल) मगलकारी (देवय) धर्मदेव (चेइय)§ ज्ञानवत, यह चारो ही नाम गुरु महाराजके हैं, सो मैं (पज्जुवासामि) ऐसे गुरु महाराजकी मन वचन काया करके सेवा करता हू और (मत्थएण) मस्तक करके (वंदामि) वंदना करता हू ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमें यह वर्णन है कि गुरु महाराजके दक्षिण पासेसे लेकर तीन प्रदक्षिणा करके नमस्कार करे और गुरु महाराजको सन्मानादि भली प्रकारसे देवे, मस्तक नमाकर वंदना करे, किन्तु (तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण) यह दो सूत्र वंदनाके विधि विधान कर्त्ता हैं, अपितु (करेमि) जो कि संस्कृत भाषामे 'करोमि' शब्द उत्तम पुरुषका एक वचन है, वहासे ही वंदना करनेका मूल सूत्र जानना। और इस सूत्रके द्वारा गुरु

§ चिति सज्ञाने धातुसे तद्धितका ष्य प्रत्यय लगकर चैत्य शब्द बनता है और प्राकृतमें चेइय ऐसे रूप होता है किन्तु चेइय शब्द द्वितीयाका एक वचन ही है ॥

महाराजकी तीन वार वदना करके चतुर्विंशति स्तवकी आज्ञा लेकर स
क्त्वके विशुद्ध्यर्थे निम्न लिखित सूत्र पढे ॥

अथ मूल सूत्रम् ॥

**अरिहंतो महदेवो जावज्जीवाय सुसाहु सुगुरु
जिणपण्णत्तं तत्तं एसम्मत्तं मे गहियं पंचेंदिय सं
रणो तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो चउविह कस
यमुक्को इय अट्ठारस्स गुणेहिं संयुत्तो पंचमहव्व
जुत्तो पंचविह आयार पालण समत्थो पंच समिअ
त्तिगुत्तो छत्तीस्स गुणो गुरु होइ सो गुरु मज्झं ॥१**

हिंदी पदार्थ—(अरिहंतो) अर्ह् पूजाया धातुसे जो शतृ प्रत्यय
होकर अर्हत् शव्द बनता है, तिसका नाम प्राकृत भाषामे अरिहत है। य
अर्ह् ऐसा धातु है फिर (सद्धृद्वत्स्यल्लृटोवाऽनिनौ) शाकटायन व्या
रणके इस सत्रसे अर्ह् पूजाया धातुको शतृ प्रत्यय हो गया। फिर श
ऋकारकी इत्सज्ञा करके पुन (यस्येत्सज्ञा तस्य लोप) अर्थात् लोप क
अर्हत् ऐसे रूप बन गया। फिर (शत्रानश)प्राकृत व्याकरणके इस सू
शतृ प्रत्ययके तकारको न्त आदेश हो गया तब अर्हन्त ऐसे हुआ । फि
(उच्चार्हति) प्राकृत व्याकरणके इस सूत्रसे अरिहत अरुहत अरहत ऐ
तीन रूप सिद्ध हुए। अपितु यह शब्द प्राकृत भाषामे अजत हो गया। फि
(अत सेर्डो) इस सूत्रसे (अरिहंतो) यह रूप हुआ सो अरिहत ([1]मह
मेरे (देवो) देव हैं (जावज्जीवाय) यावत्काल मेरी आयु है, फिर ताव
त्काल ही (सुसाहु) सुसाधु जो है सो (सुगुरुण) मेरे गुरु हैं (जिण
ण्णत्त) जिनेन्द्र देवका प्रतिपादन किया हुआ जो (तत्त) तत्त्व है सो

1 मे मइ मम मह मह मज्झ अम्ह अम्ह ङसा ॥ प्रा० अ० ८ पा० ३
सू० ११३॥ अस्मदोङसा षष्ठ्येक वचनेन सहितस्य एतेन यादेशा भवति ॥

मरा धर्म है (ए सम्मत्त) यही सम्यक्त्व (मे) मेरे (गहिय) गृहीत है अर्थात् देव गुरु धर्मकी जो पूर्ण निष्ठा है सो मेरा सम्यक्त्व है। और गुरु मेरे वह है जो (पचिंदिय सवरणो) पाच इन्द्रिय यथा श्रोत्र, घ्राण, चक्षु, रस, स्पर्श, इनको जो वश करनेवाले है (तह) तथा (नवविह) नवविधिके (बभचेर गुत्तिधरो) ब्रह्मचर्यकी गुप्तिके धरनेवाले जैसे कि जिस स्थानमें स्त्री पशु नपुसकका निवास होवे ऐसे स्थानको छोड देवे मूपक बिडाल (मार्जार) का दृष्टान्त १, स्त्रीका व्याख्यान न करे नींबूका दृष्टान्त २, स्त्रीसे सघट्टा भी (स्पर्श भी) न करे उष्ण भूमिकामें घृतका दृष्टान्त ३, स्त्रीके सागोपागको भी न देखे नेत्रोंके रोगीको सूर्यको हेतु ४, पूर्व क्रीडाकी स्मृति न करे तक्र वा सुदर अनिष्ट वार्ताओका दृष्टान्त ५, स्त्रीके समीपकी वस्तीको भी छोड देवे जैसे बादल गरजते हुए समय मयूरके नृत्य करनेका दृष्टान्त ६ प्रणीत आहारको भी न आसेवन करे जीर्ण वस्त्रका दृष्टान्त ७, फिर अतीव आहार भी न करे स्वल्प भाजनमे बहुत वस्तुका दृष्टान्त ८, शरीरका भी शृगार न करे मलीन वस्त्रमें रत्नका दृष्टान्त ९, सो जो गुरु उक्त विधिसे ब्रह्मचर्य पालनेवाले हैं और (चउविह कसायमुक्को) चतुर्विधिकी कषायोसे भी मुक्त है जैसे क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ (इय अठारस्स गुणेहिं सयुत्तो) इन १८ गुणो करके जो सयुक्त है, फिर (पच महव्वय जुत्तो) पाच महाव्रतो करके सयुक्त है जैसेकि—अहिंसा १ सत्य २ दत्त ३ ब्रह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ इनको पालनेवाले, फिर (पचविह) पाच विधिके (आयारपालण समत्थो) आचार पालणमें समर्थ है जैसेकि ज्ञानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ वलवीर्याचार ५ फिर (पच समिओ) पाच समिति करके भी युक्त है जैसेकि (ईर्या समित) विना देखे न चलना (भाषा समिति) विना विचारे न बोलना (एषणा समिति) निर्दोषाहार लेना (आयार भडमत्त निख्खेवणा समित) विना यत्न वस्तुका न रखना न उठाना (उच्चार पासवण खेल सिंघाण जल्ल मल परिठावणिया

समिन) पुरीष, मूत्र, थूक, श्लेष्म, स्वेद, मलादि जो गेरने योग्य वस्तु हैं उनको विना यत्न न गेरना, फिर (तिगुत्तो) त्रिगुप्त जैसेकि मन, व चन, काया सो जो ३६ (छत्तीस गुणो होई सो गुरु मज्झ) गुणों करके युक्त है वे ही मरे गुरु हैं॥

भावार्थ—इस सूत्रमें यह वर्णन हे कि देव गुरु धर्मका पूर्ण स्वरूप ज्ञात करके फिर समग्र प्रकारसे देव गुरु धर्मोपरि निश्चय करना यही सम्यक्त्व है और वही धर्म सत्य है जो सत्य पदार्थोंका सम्यक् प्रकारसे उपदेश है। पुन अहिंसा सत्य परोपकार ब्रह्मचर्य क्षमा दया दान तप भाव मृदुता ऋजुभाव इत्यादि पदार्थोंका पूर्ण नीतिसे वर्णन करनेवाला हे ॥ देव वही है जो राग द्वेषादि अतरग शत्रुओंसे मुक्त होकर सर्वज्ञ वा सर्वदर्शी है। गुरुका स्वरूप मूल सूत्रके पदार्थमे किंचित् मात्र लिख चुका हूं जैसे-कि—अहिंसा, सत्य, दत्त, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, इनको धारण करनेवाले, मन, वचन, कायाको वश करनेवाले, क्रोध मान माया लोभको त्यागनेवाले, ज्ञान दर्शन चरित्रके पालनेवाले, पाच इन्द्रियोको दमन करनेवाले, वैराग्य मुद्रा सौम्य प्रवृत्ति इत्यादि गुण करके जो युक्त हैं वही गुरु है। सो देव गुरु धर्मका पूर्ण विधिसे आराधन होना चाहिये ॥

इस सूत्रको पढके फिर श्रावक निम्न लिखित सूत्रको पठन करे।

अथ मूल सूत्रम् ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं प-डिक्कमामि इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहि-याए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्क-मणे हरियक्कमणे उसा उत्तिंग पणग दग मट्टीमक्कडा संताणा संक्कमणे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया

त्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किला-
मिया उद्दविया ठाणा उठाणं संकामिया जीवियाउ
ववरोविया जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा
मि दुक्कडं ॥ २ ॥

हिंदी पदार्थ—(इच्छाकारेण) आपकी इच्छापूर्वक (संदिसह) वा आपकी आज्ञानुसार (भगवन्) हे महा भाग्यवान् (इरियावहियं) जो चलनेके समय हिंसादि क्रिया हुई है सो उस क्रियासे मैं (पडिक्कमामि) पीछे हटता हू अर्थात् हिंसादि क्रियाओंसे निवृत्ति करता हू। तब गुरु कहने लगे (पडिक्कमह) हे शिष्य! सावद्य क्रियाओसे शीघ्र ही पीछे हटो। तब शिष्यने कहा (इच्छं) आपकी आज्ञा मुझे स्वीकार है और मैं भी यही (इच्छामि) इच्छा करता हू। यह सर्व सूत्र सामायिक कर्त्ताके विनयके ही सूचक हैं किन्तु आलोचनाके निम्न लिखित सूत्र हैं—(इरिया वहियाए) मार्गमे चलते समय जो गेरेसे विना उपयोग (विराहणाए) विराधना हुई हो अर्थात् विना उपयोग चलते समय किसी भी जीवकी विराधना यदि हुई हो तो मैं उस विराधनासे (पडिक्कमिउं) निवृत्ति करता हू क्योंकि विराधना (गमणागमणे) आने जानेसे ही होती है सो यदि गमनागमनसे (पाणक्कमणे) प्राणी उपरि आक्रमण हो गया हो, इसी प्रकार (बीयक्कमणे) बीजो-परि (हरियक्कमणे) हरिउपरि (उसा) ओसोपरि (उत्तिंग) कीड़ियोके भवनोपरि (पणग) पाच प्रकारकी§ वनस्पति (दग) पाणी (मट्टी) वा स-चित मृत्तिका उपरि (मक्कडा) कोई जीव विशेष (संताणा) वा जालोपरि (संकमणे) आक्रमण हुआ हो (जे) जो (मे) मेरेसे (जीवा) जी-वोका उक्त विधिसे नाश हुआ हो जैसे कि—(एगिंदिया) एकेन्द्रिय जीव पृथिवी पाणी अग्नि वायु वनस्पति (बेइंदिया) द्विइन्द्रिय जीव जैसे गडो-

§ पांच वर्णकी सूक्ष्म वनस्पति होती है जैसे कि निगोदादि, सो पांच वर्ण निम्न प्रकारसे हैं—कृष्ण १ पीत २ रक्त ३ हरित ४ श्वेत ५॥

लादि (तेइंदिया) त्रिइंद्रिय जीव जैसे कुथुवा, जूं, लीखादि (चउरिंदिय
चतुरिंद्रिय जीव जैसे मतसरादि (पचिंदिया) पचेन्द्रिय जीव जैसेकि–ज
चर, स्थलचर, खेचर, सर्व जातिके पचेन्द्रिय इत्यादि जीवोंकी विराधन
कारण शास्त्र वर्णन करते हैं जैसे कि–(अभिहया) सन्मुख आते हुए
विना उपयोग पीड़ित हुए हो (वत्तिया) रज उनोपरि आच्छादन
गई हो (लेसिया) भूमिकामे मसले गए हो (सगट्टिया) परस
सघट्टित हुए हो (परियाविया) परितापना उन जीवोंको हुई
(किलामिया) वा किलामना (उद्दविया) अथवा उपद्रव
जीवोंको किया हो वा (ठाणा उठाण) एक स्थानसे (सकामिआ) दू
स्थानोपरि सक्रमण किया हो वा (जीविआउ) जावकी जो आयु
(ववरोविया) उससे व्यवरोपित हुए हों अर्थात् वह जीव मृत्यु हो गये
(जो) जो (मे) मैने (देवसि) दिन सम्बन्धि (अइयार) अतिचार (कओ
किया है (तस्स) उस अतिचाररूप (मिच्छा मि दुक्कड) पापसे मैं पी
हटना हू ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमे प्रथम तो सामायिक कर्ताका विनय धर्म सि
किया है, फिर सामायिक करनेवाला जीव यह विचार करता है कि मैने
सामायिक करनेके लिए गमनागमन किया है, यदि उक्त क्रिया करते हु
कोई भी जीव मेरे विना उपयोग दुखित हुआ हो या रक्षा करते २ मेरे
मृत्युको प्राप्त हो गया हो और मैने उसको किसी प्रकारकी पीड़ा दी
तो मैं उस पापका पश्चात्ताप करता हू, क्योंकि मै पाप कर्मको मिथ्यारू
मानता हू ॥ सो श्रावक उक्त सूत्रको पढके फिर कायोत्सर्गकी शुद्धि
वास्ते निम्न लिखित सूत्र पढ़े ॥

अथ मूल सूत्रम् ॥

**तस्स उत्तरी करणेणं पायच्छित्त करणेणं विसोहि
करणेण विसल्ली करणेणं पावाणं कम्माण निग्घाय
णट्ठाय ठामि काउसग्गं अन्नत्थ उससिएणं निस**

स्सिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वाय-निसग्गेण भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अग संचालेहि सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि सचालेहि एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउसग्गं जाव अरिहंताणं भगवंताण नमोक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेण मोणेणं ज्झाणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥ ३ ॥

हिंदी पदार्थ—(तस्स) पुन आत्माकी शुद्धि अर्थे (उत्तरी करणेण) प्रधान जो कृत है उसको उत्तरीकरण कहते हैं, फिर (पायच्छित्त करणेण) पापोके दूर करनेके वास्ते तथा (विसोहि करणेण) आत्माको विशुद्ध करनेके लिए पुन (विसल्ली करणेण) शल्योंके दूर करने वास्ते और (पावाण) पापकर्मोंके (निग्घायणट्ठाय) नाश करनेके वास्ते (ठामि) एक स्थानोपरि (काउसग्ग) पापकर्मोंके दूर करनेके वास्ते कायोत्सर्ग करता हू, किन्तु (अन्नत्थ) इतना विशेष जो आगे कहे जाते हैं इनके विना कायाको हिलाऊगा नहीं अपितु यह भी आगार स्ववशके नही हे जैसेकि—(उससिएण) ऊचे श्वासके आने पर अथवा (निससिएण) नीचे श्वासके होने पर वा (खासिएण) खासीके होने पर, इसी प्रकार (छीएण) छीक (जभाइएण) जभाई [अवासी] (उड्डुएण) डकार (वायनिसग्गेण) अधो वायुके निकलने पर (भमलिए) चक्करके आने पर (पित्तमुच्छाए) पित्तके उच्छलने पर (सुहुमेहिं) सूक्ष्म (अग सचालेहिं) अंगके सचालन होनेपर (सुहुमेहि) सूक्ष्म (खेल सचालेहिं) श्लेष्मणके सचालन होनेपर (सुहुमेहिं) सूक्ष्म (दिट्ठि सचालेहिं) दृष्टिके चलने पर (एवमाइएहिं) इत्यादि अन्य कई आगारो [प्रतिज्ञाओ] करके यदि मेरा शरीर ध्यानावस्थामें कपायमान हो जावे तो मेरा ध्यान (अभग्गो) भग न होगा (अविराहिओ) विराधित न होगा

किन्तु इन प्रतिज्ञाओ करके (हुज्ज) होवे (मे) मेरा (काउसग्ग) कायोत्सर्ग। सो कायोत्सर्गके कालका परिमाण निम्न प्रकारसे है जैसेकि–(जाव) यावत् काल में (अरिहंताणं) श्री अरिहंतों (भगवंताणं) भगवंतो को (नमोकारेणं) नमस्कार न करू तावत्काल पर्य्यन्त (कायं) कायाको (ठाणेणं) एक स्थानमें रक्खूगा, पुन (मोणेणं) मौन वृत्तिमें तथा (झाणेणं) एकाग्र ध्यानवृत्तिमे (अप्पाणं) अपनी कायाको वा अपनी आत्मासे पापकर्मको (वोसिरामि) [व्युत्सृजामि] छोडता हू ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमें यह विधान है कि–पापकर्मके नाश करनेके वास्ते ध्यान करे और जो प्रतिज्ञाए सूत्रमें वर्णन की गई है उनके विना ध्यानमे कायाको सचाल्न न करे। पुन ध्यानका नियम यावत् काल नमो अरिहताण ऐसा पाठ न पढे तावत् काल ध्यान ही रक्खे। यह सर्व उक्त सूत्रमे आत्माकी विशुद्धिके लिए ध्यानविधि प्रतिपादित की गई है अपितु ध्यानमे निम्न लिखित सूत्र पढे ॥

अथ मूल सूत्रम् ॥

लोगस्स उज्जोयगरे[1] धम्मतित्थयरे जिणे अरिहंते कित्तइस्सं[2] चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजियं च वंदे संभवमभिणदणं च सुमइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च विमल मणंतं च जिणं

१ टाणे–शस्येत ॥ टादेशेणेशसिचपरे अस्य एकारो भवति ॥ टाण–षच्छेण–शस–वच्छे–वृक्षान्। इसी प्रकार लोकस्य उद्योतकरान्॥ सो आगे भी इस प्रकार जानना चाहिये ॥

२ मे स्स ॥ प्रा० व्या० अ० ८। पा० ३। सू० १६९।

धातो परो भविष्यति काले [illegible] ॥ [illegible]

त्तइस्स इत्यादि ॥

धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणि-सुव्वयं नमिजिणं च वंदामि अरिट्ठनेमिं पासं तह वद्ध-माण च ॥ ४ ॥ एवं मए अभित्थुआ विहुय रयमला पहीण जरमरणा चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरोग्ग बोहिलाभं समाहिवर मुत्तमदिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयास-यरा सागरवर गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

हिंदी पदार्थ—(लोगस्स) लोकके विषय (उज्जोयगरे) उद्योत करनेवाले और (धम्मतित्थयरे) धर्म रूपी तीर्थके स्थापन करनेवाले पुन (जिणे) रागद्वेषके जयकर्त्ता (अरिहते) ऐसे जो श्री अरिहत है (कित्त इस्सं) तिनकी कीर्ति करता हू (चउवीसपि) और ऋषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरोंके नाम लेकर स्तुति करता हू। अपि शब्दसे अन्य जिनन्द्रोंका भी ग्रहण करना। पुन २४ तीर्थंकर कैसे है (केवली) केवल ज्ञानके धारक हैं॥१॥ अथ चतुर्विंशति तीर्थंकरनामानि। (उसभ) ऋषभदेवजीको (अजिय) (च) पुन अजितनाथजीको (वदे) वदना करता हू (सभव) सभवनाथजी-को (अभिणदण) अभिनदननाथजीको (च) और (सुमइ) सुमतिनाथजीको (च) पुन (पउमप्पह) श्री पद्मप्रभुस्वामीजीको (सुपास) श्री सुपार्श्व नाथजीको (जिण) रागद्वेषके जीतनेवाले (च) और (चदप्पह) चद्रप्र भुजीको (वदे) वदना करता हू ॥ २ ॥ (सुविहिं) सुविधिनाथजीको (च) पुन इनका द्वितीय नाम (पुप्फदत) पुष्पदतजीको (सीयल) शीतलनाथजीको (सिज्जस) श्रेयासनाथजीको (वासुपुज्ज) वासुपूज्यस्वामी जीको (च) और (विमल) विमलनाथजीको (अणत) अनतनाथजीको (च) और (जिण) रागद्वेषके जीतनेवाले (धम्म) धर्मनाथजीको (च)

पुन (संति) शान्तिनाथजीको (वदामि) वदन करता हूं ॥ ३ ॥ (कुंथुं) कुंथुनाथजीको (अर) अरनाथजीको (च) और (मल्लिं) मल्लिनाथजीको (वंदे) वंदना करता हूं (मुणिसुव्वय) मुनि सुव्रत स्वामीजीको (नमिजिणं) नमिनाथजीको रागद्वेषके जीतनेवाले (च) और (वंदामि) वंदना करता हूं (अरिट्ठनेमि) अरिष्टनेमिजीको (पासं) पार्श्वनाथजीको (तह) तथा (वद्धमाण) वर्द्धमानस्वामीजीको अर्थात् श्री महावीरजीको वंदना करता हूं। (च) पाद पूर्णार्थे है ॥ ४ ॥ (एवं) इस प्रकारसे मैंने (अभित्थुआ) अरिहंतोंकी स्तुति की है क्योंकि अरिहंत कैसे हैं (विहुय) जिन्होंने दूर करी हे (रयमला) कर्मोंकी रज तथा मल फिर (पहीण) क्षय किया है (जरमरणा) जरा और मृत्यु ऐसे जो (चउवीसपि) चतुर्विंशति तीर्थंकर हैं वा अन्य केवली भगवान् हैं वे सर्व (जिणवरा) जिनवर (तित्थयरा) वा सर्व तीर्थंकर देव (मे) मेरे ऊपर (पसीयंतु) प्रसन्न हो। यह सर्व व्यवहार नयके मतसे प्रार्थनारूप वचन हैं ॥५॥ श्री तीर्थंकर देव (कित्तिय) कीर्तित (वंदिय) वंदित और (महिय) पूज्य हे, अपितु महिड् धातु पूजा वा वृद्धि अर्थमे व्यवहृत है सो इस स्थानोपरि भावपूजाका ही विधान है, (जे) जो (ए) यह प्रत्यक्ष (लोगस्स) लोगमें (उत्तमा) उत्तम (सिद्धा) सिद्ध है सो मुझको (आरोग्ग) रोगरहित निर्मल ऐसा जो सिद्ध भाव है वा (बोहिलाभ) बोधबीज सम्यक्त्वका लाभ ओर (उत्तम) उत्तम (समाहि) समाधि (वर) जो प्रधान है सो मुझको (दिंतु) दो ॥ ६ ॥ क्योंकि आप कैसे है? (चंदेसु) चन्द्रमासे (निम्मलयरा) अधिक निर्मल और (आइच्चेसु) सूर्यसे भी अत्यंत (पयासयरा) प्रकाश करनेवाले हो (सागरवर) प्रधान सागर जो कि स्वयंभू रमण समुद्र है तिसकी तरह (गंभीर) गुणोंमें गम्भीर है सो हे सिद्धो (सिद्धा) कार्य सिद्ध हुए है जिनके ऐसे जो श्री सिद्ध प्रभु हैं सो हे सिद्धो (सिद्धिं) मुक्ति जो है सो (मम) मुझको (दिसंतु) दो ॥ ७ ॥

भावार्थ—इस सूत्रमे जो सम्यक्त्वकी विशुद्धिके लिए पाठ है उनका गृहस्थी ध्यान करे जैसे कि २४ तीर्थंकरोंके नाम हैं, फिर उनके गुणोका

यथाशक्ति अनुकरण भी करे क्योंकि सामायिकमे मुख्यतया समाधिकी ही आवश्यकता हे। जो प्रार्थनाके पाठ हैं वह भी इस प्रकारसे है जो शीघ्र ही आत्मबोधको दिखलाते है—जैसे कि (जिन) ध्यान करते २ वर्ण विपर्यय करनेसे (निज) ध्यान हो जाता है, इसी प्रकार सामायिकमे भी प्रार्थना आत्मसमाधिको ही पुष्ट करती हे अर्थात् प्रार्थना इस प्रकारसे समाधि देती है जैसे चिंतामणि रत्न इच्छककी इच्छा पूरी कर देता हे। सो इस सूत्रका ध्यान करके फिर नमो अरिहंताण ऐसे पाठ पढके फिर वही पाठ एक वार ऊचे स्वरसे पढे ॥ फिर बैठकर दक्षिण जानु भूमिका पर रखकर वामा जानु ऊचा करके पुन हाथ जोडकर निम्नलिखित सूत्र पढे ॥

अथ मूल सूत्रम् ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाण पुरिसवरपुंडरीयाण पुरिसवरगधहत्थीण लोगुत्तमाण लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाण सरणदयाणं जीवदयाणं वोहिदयाणं धम्मदयाण धम्मदेसियाण धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं सरणगइपइठाण अप्पडिहयवरनाणं दंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाण तारयाणं बुद्धाण वोहियाणं मुत्ताणं मोयगाण सव्वण्णुण सव्वदरिसिण सिव मयल मरुय मणंत मक्खय मव्वावाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं सपत्ताण नमो जिणाणं जियभयाणं ॥ १ ॥

हिंदी पदार्थ—(नमोत्थु) नमोऽस्तु अर्थात् नमस्कार हो (णं) णं इति वाक्योपन्यासे (अरिहंताण) श्री अरिहंतोंको—इसी प्रकार सर्वत्र जानना, (भगवताण) भगवनोंको (आईगराण) धर्मकी आदि करनेवालेको (तित्थयराण) चतुर् श्री संघरूप तीर्थस्थापकोंको, फिर जिनको (सयस- बुद्धाण) स्वयमेव बोध हुआ है फिर (पुरिसुत्तमाण) पुरुषोंमे उत्तम (पु- रिससीहाण) पुरुषोंमे सिंह समान बलापेक्षा (पुरिसवर पुडरीयाण) पुरुषोंमे पुडरीक कमल समान निर्लेप (पुरिस) पुरुषोमे (वर) प्रधान (गधहत्थीण) गधहस्ती समान (लोगुत्तमाण) लोगमे उत्तम (लोगनाहाण) लोगके नाथ (लोगहियाण) लोगके हितैषी (लोगपईवाण) लोगमे प्रदीप समान (लोग- पज्जोयगराण) लोगमे परम उद्योत करनेवाले (अभयदयाणं)§ अभय दान करनेवाले (चक्खुदयाणं) ज्ञानरूपी नेत्रोके देनेवाले (मग्गदयाणं) मोक्षके बतलानेवाले (सरणदयाण) सर्व जीवोंको शरणभूत (जीवदयाण) सयमरूपी जीवनके दाता (बोहिदयाण) बोध बीजको देनेवाले (धम्म- दयाण) धर्मके देनेवाले (धम्मदेसियाण) धर्मका उपदेश करनेवाले (धम्म नायगाण) धर्मके नायक अर्थात् धर्म नेता (धम्मसारहीण) धर्मरूपी रथके सारथी (धम्मवर) धर्ममे प्रधान (चाउरत) चार गतिके अत करनेवाले अर्थात् अपनी आत्माको चार गतिसे पृथक् करनेवाले (चक्कवट्टीण) चक्रवर्ती समान (दीवोत्ताण) ससार रूपी समुद्रमें द्वीप समान (सरणगइपइट्ठाण) शरणागतोकी वत्सलता करनेवाले (अप्पडिहय) अप्रतिहत ऐसे (वर) प्रधान (नाणं) ज्ञान (दसण) दर्शनके (धराण) धरनेवाले (वियट्ट) दूर हो गया है जिनका (छउमाण) छद्मस्थभाव अर्थात् कर्म नष्ट हो गये हैं (जिणाण) और फिर जिन्होंने रागद्वेषको जीता है (जावयाण) औरोंको रागद्वेषके जीतनेका उपदेश करते हैं फिर (तिन्नाण) ससाररूपी सागरसे आप तिरे है (तारयाण) औरोंको तारते है (बुद्धाण) आप बुद्ध है (बोहियाणं) औरोंको बोध देते हैं फिर (मुत्ताण) आप कर्मोंसे मुक्त हुए औरोंको

§ यह सर्व पद षष्ठयन्त हैं ॥

(मोयगाण) कर्मोंसे मुक्त करते हैं फिर (सव्वण्णुण) सर्वज्ञ है (सव्व-दरिसिण) सर्वदर्शी हैं फिर (सिवं) कल्याणरूप (अयल) अचल (अरुय) रोगरहित (अणंत) अनन्त ज्ञानादि करी (अक्खय) अक्षय (अव्वाबाह) बाधा पीडादि रहित अर्थात् दुःखादि रहित (अपुणरावित्ति) जिसकी अपुनर्वृत्ति है अर्थात् पुनर्जन्म नहीं है ऐसी जो सिद्ध गति है(सिद्ध-गई) अर्थात् मोक्ष है (नामधेय) नाम भी यही है जिसका सो ऐसे(ठाण) स्थानकको (संपत्ताण) जो सम्प्राप्त हुए हैं अर्थात् जो मोक्षको प्राप्त हुए हैं ऐसे जो श्री अरिहंत प्रभु हैं तिनको (नमो) नमस्कार हो (जिणाण) जिन्होंने कर्मरूपी शत्रुओंको जीता है फिर (जियभयाण) जीत लिये हैं जिन्होंने सर्व भय ॥

भावार्थ—यह स्तुति मंगल दो वार पढणा। द्वितीय वारमे यह पाठ कहना (ठाण संपाविउ कामस्स नमो जिणाण जियभयाण) और इस स्तवमें जो आत्मा मोक्ष हो गये है वा होनेवाले हैं उनकी स्तुति है। फिर उनके गुणोंका गृहस्थी यथाशक्ति अनुकरण करे क्योंकि स्तुति करनेका साराश यही होना है कि वे गुण स्वयं भी ग्रहण किये जाये। जिस प्रकार रागद्वे-षादि अंतरंग शत्रुओंको जीतके अर्हन् हुए है इसी प्रकार सर्व भव्य प्राणि-योंको भी होना योग्य हैं ॥

फिर तिक्खुत्तोके पाठसे गुरुदेवको वंदना नमस्कार करके सामायिक करनेकी आज्ञा लेकर निम्न लिखित सूत्र पठन करे ॥

आवस्सही इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसी पडिक्कमणो ठामि देवसी ज्ञान दर्शन चरित्ताचरित्त तप अतिचार चिंतवणा अर्थं करेमि काउसग्ग ॥

हिंदी पदार्थ—(आवस्सही) आवश्यमेवही (इच्छा) इच्छा है मेरी (कारेण) करनेकी (संदिसह) आज्ञा दीजिये (भगवन्) हे भगवन् मैं (देवसी) दिन सम्बन्धि (पडिक्कमणो ठामि) प्रतिक्रमण प्रारंभ करता हूं

अर्थात् आवश्यक करनेकी आज्ञा लेकर आवश्यक करता हूं जैसेकि (देवसी) दिन सम्बन्धि (ज्ञान) ज्ञान (दर्शन) दर्शन (चरित्ताचरित्त) चरित्रा चरित्र (देशव्रत) (तप) द्वादशभेदि तप (अतिचार) अतिचारोंके (चिंतवणा अर्थ) स्मरणके लिए (करेमि) करता हूं (काउसग्ग) कायोत्सर्ग॥

भावार्थ—श्री अर्हन् देवकी आज्ञासे प्रथम आवश्यक करनेकी आज्ञा लेकर उक्त सूत्रको पठन करके फिर (नमस्कार मंत्र पढे) ॥

§णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

---

§ महाशय ! इस महामन्त्रको नमोकार मन्त्र भी कहते हैं अर्थात् महामन्त्रका द्वितीय नाम नमोक्कार मन्त्र भी है, परन्तु कोई २ नमोक्कारके स्थानोपरि नवकार मन्त्र ऐसे भी उच्चारण करते हैं, सो यह भी सत्य है क्योंकि प्राकृत व्याकरणमें इसका विवेचन इस प्रकार है, यथा—

रुद्नमोर्व ॥ प्रा० । व्या० । अ० । ८ । पा० । ४ । सू० । २२६ ॥ अनयोरन्त्यस्य वो भवति ॥ अर्थात् रुद् और नम् धातुके अन्त वर्णको वकार हो जाता है जैसे रुवइ नवइ इत्यादि ॥ इस सूत्रसे नवकार ऐसे सिद्ध हुआ ॥

पुन नमस्कार शब्दसे नमोकार पद इस प्रकारसे सिद्ध होता है जैसे कि—नमस्कार परस्परे द्वितीयस्य ॥ प्रा० व्या० अ० ८ पा० १ सू० ६२॥ अनयोर्द्वितीयस्य अत ओत्व भवति ॥ इस सूत्रसे नमस् शब्दके द्वितीय शब्दके अकारको अर्थात् नमस् शब्दके मकारके अकारको ओकार हो गया जैसे कि, नमोस्कार, फिर क-ग-ट-ड-त-द-प-श-ष-स-ᳵक ᳶप-मूर्ध्वं लुक् ॥ प्रा० अ० ८ पा० २ सू० ७७ ॥ एषां संयुक्तवर्णसम्बन्धिनामूर्ध्वंस्थितानां लुग् भवति ॥ इस सूत्रसे सकारका लोप हो गया तब नमोकार ऐसे रहा ॥ पुन अनादौ शेषादेशयोर्द्वित्वम् ॥ प्रा० अ० ८ पा० २ सू० ८९ ॥ पदस्यानादौ वर्तमानस्य शेषस्यादेशस्य च द्वित्वं भवति ॥ इस सूत्रसे ककार द्वित्व हो गया, तब परिपक्व प्रयोग नमोक्कार ऐसे सिद्ध हुआ ॥ अपितु "ह्रस्व संयोगे" प्रा० अ० ८ पा० १ सू० ८४ से "नमुक्कार" भी सिद्ध हो जाता है ॥

हिंदी पदार्थ—(नमो)* (नम) नमस्कार (अरिहंताण) अर्हद्भ्य अर्ह् पूजाया धातुसे जो शतृ प्रत्ययान्त होकर अर्हत् शब्द बनता है तिसका नाम प्राकृत भाषामे अरिहत है, अर्थात् जो सबके पूज्य सर्वज्ञ सर्वदर्शी हैं तिन अरिहत भगवन्तोंके ताईं नमस्कार हो, अर्थात् उनको नमस्कार हो, (नमो) (नम) नमस्कार (सिद्धाण) (सिद्धेभ्यः) षिधूमराग्नौ धातुसे जो 'क्त' प्रत्ययान्त होकर सिद्ध शब्द बना है अर्थात् जो सिद्ध बुद्ध अजर अमर अशरीरी सर्वज्ञ सर्वदर्शी हैं तिनके ताईं नमस्कार हो, (नमो) (नम) नमस्कार (आयरियाण) (आचार्य्येभ्य) जो आङ् उपसर्ग पूर्वक चर् गति भक्षण धातुसे कृदन्तका ण्यण् प्रत्ययान्त होकर सिद्ध होता है अर्थात् आचार्य्योंके ताईं नमस्कार हो, (नमो) (नम) नमस्कार हो (उवज्झायाण) (उपाध्यायेभ्य) उपाध्यायोंके ताईं जो कि उप अधि उपसर्ग पूर्वक इङ् अध्ययने धातुसे कृदन्तका घञ् प्रत्ययान्त होकर बनता है, (नमो) (नम) नमस्कार हो, (लोए सव्वसाहूण)† लोकृ दर्शने, सृगतौ,

---

* तथा कोई २ पुरुष ऐसे भी भाषण करते हैं कि (णमोक्कार) शब्द ही शुद्ध है अर्थात् जिसके पूर्व णकार होवे वही शुद्ध है, अन्य सर्व अशुद्ध हैं, किन्तु प्राकृत व्याकरणमें इस प्रकारसे लिखा है यथा—वादौ ॥ प्रा० अ० ८ पा० १ सू० २२९ ॥ असयुक्तस्यादौ वर्तमानस्य नस्य णो वा भवति । णरो—नरो । णई—नई—इति ॥

† पंच पदकी चूलिका इस प्रकारसे है जैसेकि—एसो पच णमोकारो सव्व पाव प्पणासणो मगलाण च सव्वेसिं पढम हवइ मगल ॥

यथार्थान्वय.—(एसो) (एष) यह (पच) (पञ्च) पञ्च (नमोक्कार) (नमस्कार) नमस्काररूप पद (सव्व) (सर्व) सर्व (पाव) (पाप) पापोंके (प्पणासणो) (प्रणाशन) प्रणाशनहार हैं अर्थात् पापोंके नष्ट करनेवाले हैं, (मगलाण) (मगलाना) मगलीक हैं (च) (च) और अपितु च अव्यय है (सव्वेसिं) (सर्वेषा) सर्व स्थानोंपरि पढे हुए (पढम) (प्रथम) प्रथम अर्थात् दध्यादि पदार्थोंसे पूर्व (हवइ) (मगल) (मङ्गलम्) मङ्गलीक है ॥

भावार्थ—इस महामन्त्रके पाञ्च ही नमस्काररूप पद सब पापोंके नाश करनेवाले हैं तथा मगलीक और सब स्थानोपरि पठन किये हुए दध्यादि पदार्थोंसे भी पहिले मगलीक हैं क्योंकि अनत गुणयुक्तोक्त महामन्त्र है ॥

राध साध ससिद्धौ, इन धातुओंसे जो नमो लोए सव्वसाहू शब्द बनता है–(लोके सर्व साधुभ्य) लोकमे जितने साधु हैं अर्थात् लोकमे सर्व साधुओंके ताईं नमस्कार हो–जो कि सुगुणो करके युक्त है ॥

भावार्थ—इस महामन्त्रमे यह वर्णन है कि अनन्त गुणयुक्त चतुर्घाति कर्म नष्ट कर्त्ता और जिनके द्वादश गुण प्रगट हुए हैं ऐसे गुणगणालकृत श्री अरिहतजी महाराजोंको नमस्कार हो, पुन जिनके अशरीरी सिद्ध बुद्ध अजर अमर इत्यादि अनेक नाम सुप्रख्यानि सयुक्त सुप्रसिद्ध है जिन्होंके सर्व कर्म क्षय हो गये है अर्थात् जो कर्मरूपी रजसे विमुक्त हो गये है और जिन्होंके अष्ट गुण प्रादुर्भूत हुए हैं इत्यादि अनेक सुगुणो सहित श्री सिद्ध महाराजोको नमस्कार हो, अपितु जो षट्त्रिंशत् गुणोसे युक्त मर्यादासे क्रिया करनेवाले जिनकी ज्ञानमे गति अधिक है तथा जो सम्यक् प्रकारसे गच्छ (साधु समुदाय) की सारणा (रक्षा करना) वारणा (स्थिलाचार होतेको सावधान करना) साधुमण्डलको हितशिक्षा देना तथा वस्त्रपात्रादि द्वारा भी मुनियोको सहायता देनी वा परम्पराय शुद्ध शास्त्रार्थ पठन कराना अपितु यदि कोई दुर्बल अर्थात् जराबल क्षीण रोगादि युक्त साधु हो उनको यथायोग्य सहायता करना इत्यादि अनेक गुणोंसे युक्त है और उक्त वार्त्ताओके पूर्ण करनेमें सदैव कटिबद्ध हैं ऐसे श्री आचार्यजी महाराजको नमस्कार हो, अपिच जो पचविंशति गुणोंसे अलकृत हो रहे हैं अर्थात् जो एकादश अग तथा द्वादश उपागको स्वयम् पढते हैं औरोंको पढाते है–जिन शास्त्रोके नाम ये हैं –

सख्या अथागसूत्राणि	सख्या अथोपागसूत्राणि
(१) आचाराग	(१) उव्वाइ
(२) सूयगडाग	(२) रायप्रश्रेणी
(३) ठाणाग	(३) जीवाभिगम
(४) समवायाग	(४) पण्णवन्ना.

संख्या अंगसूत्राणि	संख्या उपांगसूत्राणि
(५) विवाहप्रज्ञप्ति	(५) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति
(६) ज्ञाताधर्मकथांग.	(६) चन्द्र प्रज्ञप्ति
(७) उपासकदशाङ्ग	(७) सूर्य्य प्रज्ञप्ति.
(८) अंतगड	(८) निरावलिका
(९) अनुत्तरोववाइ	(९) पुप्फिया
(१०) प्रश्न व्याकरण	(१०) कप्पिया
(११) विपाक	(११) पुप्फचुलिका
	(१२) वण्हिदशा

अर्थात्- जो पूर्वोक्त शास्त्रोंका अभ्यास स्वय करते हैं और औरोंको यथा अवकाश वा यथा अवसर पठनाभ्यास करवाते है, पुन विद्याकी उन्नति करनेमे तत्पर रहते हैं और जिसके द्वारा धर्म तथा विद्याकी वृद्धि हो वही कार्य्य करके परिफुल्लित होते हैं, ऐसे परम पण्डित महान् विद्वान दीर्घ-दर्शी परमोपकारी श्री उपाध्यायजी महाराजोंको नमस्कार हो, जो कि श्रुत विद्याकी नावसे अनेक भव्य जीवोंको ससाररत्नाकरसे उत्तीर्ण करते हैं ॥ अपरञ्च-नमस्कार हो सर्व साधुओंको जो लोकमें सुगुणों करके परिपूर्ण हैं सदा ही परोपकारी हैं और ज्ञानके द्वारा स्व आत्मा वा अन्यात्माओंके कार्य सदैव काल सिद्ध करते है, अपितु सप्तविंशति गुणयुक्त है तिन मुनियोंको पुन पुन नमस्कार हो ॥ फिर सामायिक करनेका निम्न लिखित सूत्र पढे।

॥ अथ मूल सूत्रम् ॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं* पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि

---

* सामायिक कर्ताको चाहिये इस पाठके अतर्गत ही यावन्मात्र मुहूर्त करने हों तावन्मात्र ही यह उच्चे, जैसेकि-जावनियम मुहूर्त १-वा २-पज्जुवासामि इत्यादि ॥

**न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भंते पडिक्क-
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १**

हिंदी पदार्थ—(करेमि) मैं करता हू (भत्ते) हे भगवन (साम-इय) समतारूप भाव जो सामायिक है (सावज्ज) और सावद्यरूप (जोग) मन वचन कायका योग है (पच्चक्खामि) जिसका प्रत्याख्यान करता हू (जाव) यावत् (नियम) नियम सामायिकका काल है ताव काल पर्य्यन्त सामायिकका सेवन करता हूं, (दुविह) दो करण जैसे करना ओर कराना सो सावद्य योगको (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (तिविहेण) इन तीनो योगों करके (न करेमि) न करु (न कारवेमि) नहीं औरोसे कराऊ (तस्स) वह जो सावद्यरूप पाप है (भत्ते) हे भगवन् (पडिक्कमामि) पापसे पीछे हटता हू (निंदामि) और पापसे अपनी आत्माको भिन्न करनेके लिये आत्म-निन्दा करता हू (गरिहामि) विशेष करके आत्माको पापसे पृथक् करनेके लिये आत्मनिंदा करता हू (अप्पाण) और अपनी आत्माको (वोसिरामि) पापसे अलग करता हू ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमे यह वर्णन है कि सामायिक करनेवाला भगवान्की आज्ञानुसार सामायिकमे द्विविध त्रिविध करके सावद्य (हिंसक) योगोंका प्रत्याख्यान करता है—जैसे सावद्य कर्म करू नहीं मन करके वचन करके काय करके, कराऊं नहीं मन करके वचन करके काय करके, और पापसे अपनी आत्माको पृथक् करके समतारूप भावों मे आत्माको स्थिर करता हू ॥ फिर अपनी आलोचनाके वास्ते निम्नलिखित सूत्र पठन करे—क्योंकि ज्ञान, दर्शन चारित्राचारित्रकी चिंत्वनार्थ ही कायोत्सर्ग किया जाता है ॥

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसि अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाउ दुचिंतिउ अणायारो

अणिच्छियव्वो असावगो पावगो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुय सामाइय तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्ह अणुव्वयाण तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं वारस्स विहस्स साव्वग धम्मस्स जं खडियं जं विराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २ ॥

हिंदी पदार्थ—(इच्छामि) मैं इच्छा करता हूं (ठामि) एक स्थानमे स्थिर रहकर (काउसग्ग) कायोत्सर्ग करनेकी (जो) जो (मे) मैंने (देवसि) दिन सम्बन्धि (अइयारो) अतिचार (कओ) किया है (काइओ) कायमे (वाइओ) वचनसे (माणसिओ) मनसे तथा (उस्सुत्तो) सूत्रसे प्रतिकूल कथन किया हो (उम्मग्गो) उन्मार्ग ग्रहण किया हो जो कि सर्वथा ही जिनमार्गसे प्रतिकूल है (अकप्पो) अकल्पनीय पदार्थ सेवन किया हो जैसेकि मास मदिरादि (अकरणिज्जो) अकरणीय कार्य किए हो (दुज्झाउ) दुष्ट ध्यान किया हो जैसे कि आर्तध्यान रौद्रध्यान (दुचिंतिउ) दुष्ट चिंतन किया हो (अणायारो) अनाचार सर्वथा ही नियमोका भग कर देना इस प्रकारसे काम किया हो (अणिच्छियव्वो) जो इष्ट नहीं है उसकी इच्छा की हो (असावगो पावगो) श्रावक वृत्तिसे विरुद्ध काम किया हो (नाणे) ज्ञानमे (तह) तथा (दसणे) दर्शनमें तथा (चारित्ताचरित्ते) चरित्राचरित्रमे (देशव्रतमे) (सुए) श्रुत सिद्धान्तमें (सामाइए) समतारूप भाव सामायिकमें फिर (तिण्ह गुत्तीण) तीन प्रकारकी गुप्ति जैसेकि—मन वचन कायको वशमे न किया हो (चउण्ह कसायाण) चार प्रकारकी कषाय की हो जैसेकि—क्रोध मान माया लोभ और (पचण्ह अणुव्वयाण) पाच प्रकारके अनुव्रत जैसेकि—स्थूल हिंसा त्याग १ स्थूल मृषावाद त्याग २ स्थूल अदत्तादानका त्याग ३ स्थूल मैथुनका परित्याग जैसेकि स्वदार सतोष ४ स्थूल परिग्रहका परित्याग ५ इन व्रतोंमे अतिचार लगा हो अथवा (तिण्ह गुणव्वयाण) तीन ही गुणव्रतोंमें दोष

लगा हो जैसेकि–दिग् व्रत, उपभोग परिभोग विरमण व्रत, अनर्था दंड परित्याग व्रत, (चउण्ह सिक्खावयाण) चार शिक्षाव्रतोंमे अतिचार लगा हो जैसेकि–सामायिक व्रत, देशावकाशिक व्रत, पौषधोपवास व्रत, अतिथि संविभाग व्रत (बारस्स विहस्स) द्वादश प्रकारके (साव्वग धम्मस्स) श्रावक धर्मको (ज खडिय) जो मैंने खंडित किया है (ज विराहिय) जो मैने नियमादि सर्व प्रकारसे विराधित किए है (तस्स) वह अतिचारादि पाप (मिच्छा मि) निष्फल हो जो (दुक्कड) दु कृत पाप हैं तथा इनसे मैं पीछे हटता हूं ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमे द्वादश व्रतोके अतिचारोंकी आलोचना है, फिर मन वचन कायको वशमें करना चार कषायोका परित्याग करना श्रावक वृत्तिसे विरूद्ध न होना अपितु अकरणीय कार्य न करने सम्यग् दर्शनको कलंकित न करना इस प्रकारसे वर्णन किया गया है ॥

(फिर तस्सोत्तरीका पाठ पठन करके कायोत्सर्ग करे जिसमे १४ ज्ञानके अतिचार ५ सम्यक्त्वके ६० द्वादश व्रतोके १५ कर्मादानके ५ सलेखनाके इस प्रकारसे ९९ प्रकारके अतिचारोंका ध्यान करे, खडा होकर कायोत्सर्ग करनेकी ही रीति है, यदि कारण हो तो बैठके ही कर लेवे)

चतुर्दश प्रकारके ज्ञानातिचार निम्न प्रकारसे है—

आगमे तिविहे पणत्ते तंजहा सुत्तागमे अत्थागमे तदुभयागमे एहवा श्रुत ज्ञानके विषय जे कोई अतिचार लागा होय ते आलोउं जंवाइद्ध १ वच्चामेलिय २ हीणक्खरं ३ अच्चक्खरं ४ पयहीणं ५ विणयहीणं ६ जोगहीणं ७ घोसहीणं ८ सुट्ठुदिन्नं ९ दुट्ठुपडिच्छियं १० अकाले कउ सज्झाओ ११ काले न कउ सज्झाओ १२ असज्झाइयं १३ सज्झाइय न सज्झायं

१४ जो मे देवसि' अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥

अर्थ—शास्त्र तीन प्रकारसे वर्णन किया गया है जैसेकि–सूत्रागम १ अर्थागम २ और तृतीय सूत्र और अर्थागम दोनो ही। सो ऐसे श्रुत ज्ञानके विषय यदि कोई अतिचार लगा हो तो उसकी आलोचना करता हू। अपितु ज्ञानके अतिचार निम्न प्रकारसे कथन किए गये हैं जैसेकि–अनुक्रमता-पूर्वक न पढा हो १ अन्य सूत्रोंके पाठ अन्य सूत्रके साथ सग्रह कर दिए हो २ हीनाक्षर युक्त पठन किया हो ३ अधिक अक्षर श्रुतके कर दिए हो ४ पद ही न पढा हो ५ विनयसे रहित पठन किया हो ६ शुद्ध योग धारण न किए हो ७ घोषरहित शास्त्राध्ययन किया हो ८ सुदर ज्ञान सुयोग्य शिष्यको पठन न कराया हो ९ अविनीत भावोंसे ज्ञान ग्रहण किया हो १० अकालमें स्वाध्याय की हो ११ कालमें स्वाध्याय न की हो १२ तथा अनध्यायके समय स्वाध्याय की हो १३ और स्वाध्यायके समय स्वाध्याय न की हो १४ सो यदि उक्त अतिचारोंसे मुझे दिनमे कोई भी अतिचार लग गया हो तो मैं उस अतिचारसे पीछे हटता हू ॥

दरसण श्री सम्यक्त्व रत्न पदार्थने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं जिन वचनमे सका करी होय १ पर दरशणकी वांछा करी होय २ फल प्रति संदेह आण्या होय ३ पर पाखडीनी परसंसा कीधी होय ४ अन्य तिरथीका संस्तव परिचय

---

१ नोट—ध्यानमें जो मे देवसि अइयार कओ अथवा जो मे राइसि अइयार कओ तथा जो मे देवसि पक्खि अइयार कओ–जो मे चाउमासी अइयार कओ–जो मे सवच्छरी अइयार कओ–चिंतवु ऐसे कहना चाहिए, अर्थात् जो पर्व होवे उसीके ही नामसे चिंतवना करनी चाहिये

कीधा होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मि
च्छा मि दुक्कडं ॥ २ ॥

अर्थ—यदि दर्शन (सम्यक्त्व) के विषय कोई अतिचार लगा हे तो मै उसकी भी आलोचना करता हू जैसेकि–जिनवचनोंमे शका की हो १ अथवा परमतकी आकाक्षा करी हो कि–अमुक मत बहुत ही सुद हे–जिसके उपासक सदैव काल ही सुखी रहते है इस प्रकारके भाव करने से सम्यक्त्वमे द्वितीय अतिचार लगता है २ और कर्मोंके फल विषय सशय किया हो ३ तथा पर पाषडियोकी स्तुति करी हो जिसके द्वारा बहुतसे प्राणियोको मिथ्यात्वकी रुचि हो जाये इस प्रकारसे कर्म किया हो ४ और अन्य मतावलम्बि नास्तिकादि लोगोसे सस्तव–परिचय किया हो ५ क्योंकि–दुष्ट जनोकी सगति अवश्य ही विकृति भावको उत्पन्न कर देती है इस लिए दुष्ट जनोकी सगति कदाचित् भी न करनी चाहिये । सो यदि इस प्रकारसे सम्यक्त्वमें कोई भी अतिचार लग गया हो तो मै उस दोषसे पीछे हटता हू और फिर ऐसा न करूगा इस प्रकार भाव रखता हू ॥

पहिला थूल प्राणातिपात वेरमण व्रतने विषय
जे कोई अतिचार लागा होय ते आलोउ
गाढ़ा बंधण बांध्या होय १ गाढ़ा घाव
अवयवना विच्छेद कीधा होय ३ अति
होय ४ भात्त पाणीका विच्छेद कीधा हो
देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि

अर्थ—जो प्रथम अनुव्रत हे उसमे यदि कोई लग गया हो तो मै उसकी आलोचना करता हू जैसे जीवोको कठिन बधनोसे बाधा हो १ निर्दयके साथ किया हो २ उनके अवयवोको काट दिया हो ३

भार लादा हो अर्थात् अतीव भारका लादना भी एक अतिचार है ४ और अन्नपानीका व्यवच्छेद कर दिया हो तथा वेतन आदि न दिया हो ५ सो यदि इस प्रकारसे मेरे प्रथम अनुव्रतमे दोष लगा हो तो मै उस दोषसे पीछे हटता हू अर्थात् उन दोषोको छोडता हू ॥

बीजा थूल मृषावाद वेरमण व्रतके विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं सहसातकारि कही प्रते कूडा आल दीधा होय १ रहस्स छानी वार्त्ता प्रगट करी होय २ स्त्री पुरुषका मर्म प्रकाश्या होय ३ कहीं प्रते पाय पाडवा भणी मृषा उपदेश दीधा होय ४ कूडा लेख लिख्या होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—द्वितीय अनुव्रतकी भी आलोचना इस प्रकारसे करे कि—यदि मैने विचारशून्य होकर किसीके ऊपर दोषारोपण किया हो १ अथवा किसीकी गुप्त वार्ता प्रगट कर दी हो २ स्त्री वा पुरुषको मर्मयुक्त वार्ताओंका प्रकाश किया हो ३ अपने वश करनेके लिए किसीको असत्य [दुष्ट] सम्मति दी हो ४ अथवा कूट लेख लिखे हो ५ क्योंकि यह कर्म द्वितीय अनुव्रतको कलंकित करनेवाले हैं। यदि इस प्रकारसे मैने कोई भी दिनमे दोष किए हों तो मै उन दोषोसे पीछे हटता हू अर्थात् उनको छोडता हू ॥

त्रीजा थूल अदत्तादान वेरमण व्रतके विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं चोरको चुराइ वस्तु लीधी होय १ चोरने साहज दीधा होय २ राज्य विरुद्ध कीधा होय ३ कूडा तोल कूडा मापा

कीधा होय ४ वस्तुमें भेय संभेल कीधा होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—तृतीय स्थूल अदत्तादान व्रतके विषय यदि कोई अतिचार लग गया हो तो मै उसका विचार करता हू जैसे कि—चोरीकी वस्तु ली हो १ चोरोकी सहायता करी हो २ राज्य विरुद्ध कर्म किया हो ३ और वस्तुओका तोल वा माप आदि विपरीत किया हो ४ सुन्दर वस्तुमे निकृष्ट वस्तु विक्रय करनेके वास्ते मिला दी हो ५ सो यदि उक्त प्रकारसे कोई भी दोप लग गया हो तो मै उस दोषरूप अतिचारसे पीछे हटता हू ॥

चोथा थूल सदार संतोस मैथुन वेरमण व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं इत्तर थोडा कालकी राखीसुं गमण कीधा होय १ अपरिगहियासुं गमण कीधा होय २ अणंग कीडा कीधी होय ३ पराया विवाह नाता जोड्या होय ४ [1]कामभोग तीव्र अभिलाषासे सेव्या होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

अर्थ—चतुर्थ स्थूल सदार सतोष व्रतके अतिचारोंकी भी आलोचना करता हू जैसेकि—लघु अवस्थायुक्त अपनी स्त्रीसे यदि सग किया हो तथा अल्प परिमाण होने पर अधिक सग किया हो १ पानीग्रहणके पूर्व स्व स्त्रीका सग किया हो २ कुचेष्टा की हो ३ परके नाते आदिको अपने साथ सयोजन कर लिया हो ४ और कामभोगकी तीव्र अभिलाषा करी हो ५ यदि इस प्रकारसे दिनमें कोई भी आतिचार लग गया हो तो मैं उन दोषोको छोडता हू ॥

---

१ कामभोगनी तीव्र अभिलाषा कीधी होय—इति च पाठ ॥

पांचमा थूल परिग्रह परिमाण व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं खेत्त वत्थुनो परिमाण अतिक्रम्या होय १ हिरण्य सुवर्णनो परिमाण अतिक्रम्या होय २ धन धान्यनो परिमाण अतिक्रम्या होय ३ दोपद चौपदनु परिमाण अतिक्रम्या होय ४ कुविय धातुनो परिमाण अतिक्रम्या होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—पाचवें स्थूल परिग्रह परिमाण व्रतकी आलोचना करता हू कि—क्षेत्र वस्तुके भी परिमाणको अतिक्रम किया हो अर्थात्—खेत और हट्ट आदिके परिमाणको अतिक्रम किया हो १ चादी और सुवर्णके परिमाणको अतिक्रम किया हो २ अथवा धन और धान्यके परिमाणको अतिक्रम कर दिया हो ३ द्विपद और चतुष्पदके भी परिमाणको छोड दिया हो ४ और घरकी सामग्रीके परिमाणको भी यदि अतिक्रम किया हो ५ तो मैं दिनके किए हुए दोषोंसे पीछे हटता हू ॥

छठा दिशा व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं उड्ड दिशनो प्रमाण अतिक्रम्या होय १ अधो दिशनो प्रमाण अतिक्रम्या होय २ तिरच्छि दिशनो प्रमाण अतिक्रम्या होय ३ क्षेत्र वधारया होय ४ पथनो संदेह पड्या आगे चाल्या होय ५ जो मे देवसि अईयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—षष्टम दिग्व्रतके अतिचारोंकी आलोचना करता हू कि—ऊर्ध्व दिशाके परिमाणको अतिक्रम किया हो १ अधो दिशाके परिमाणको अतिक्रम किया हो २ अथवा तिर्यग् दिशाके परिमाणको उल्लघन कर दिया हो

३ एक ओरसे द्वितीय ओर क्षेत्रकी वृद्धि की हो जैसेकि—दक्षिणकी ओर क्षेत्र अल्प करके पूर्वकी ओर क्षेत्रकी वृद्धि करना ४ तथा मार्गमें चलते हुए यदि सशय पड गया हो कि स्यात् मै परिमाणयुक्त मार्ग आ गया हूगा यदि सशय होनेपर फिर भी आगे ही गमन किया हो ५ सो इस प्रकारसे यदि कोई भी अतिचार मुझे लगा हो तो मै उन दोषोसे पीछे हटता हूं ॥

सातमा उवभोग परिभोग परिमाण व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं पच्चक्खाण उपरांत सचित्तका आहार कर्‍या होय १ सचित्त पडिवद्धका आहार कर्‍या होय २ अपक्कना आहार कर्‍या होय ३ दुपक्कना आहार कर्‍या होय ४ तुच्छौषधीका आहार कर्‍या होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स छा मि दुक्कडं ॥

पनरा कर्मादानके विषय जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोऊ इंगालकम्मे १ वणकम्मे २ साडीकम्मे ३ भाडीकम्मे ४ फोडीकम्मे ५ दंतवणिज्जे ६ लक्खवणिज्जे ७ रसवणिज्जे ८ केसवणिज्जे ९ विसवणिज्जे १० जंतपीलणियाकम्मे ११ निर्लंच्छणियाकम्मे १२ दवग्गि दावणियाकम्मे १३ सरदह तलाव सोसणिया कम्मे १४ असइ जणपोसणिया कम्मे १५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

७—सप्तम उपभोग परिभोग परिमाण व्रतके विषय यदि कोई अतिचार लगा हो तो मै उसकी आलोचना करता हू। यद्यपि सचित्त वस्तुओका सर्वथा त्याग गृहस्थको नहीं होता तथापि यदि सर्वथा त्याग हो तो—निम्न लिखित दोषोको दूर करे जैसेकि—सचित्त वस्तुका आहार करना १ सचित्त प्रतिबद्धका आहार करना २ अपक्व वस्तुका आहार करना ३ दुःपक्व वस्तुका आहार करना ४ तुच्छौषधिका आहार करना ५ यह पाच ही दोष हैं। सो इनको दूर करके फिर पचदश कर्मादानको भी छोडे अर्थात् पचदश मार्ग विशेष कर्म आनेके है इस लिए उनको छोडे जिनके नाम निम्न लिखितानुसार है—कोयलेंका बनज १ वन कटवाना २ शकटादिका व्यापार ३ भाटक कर्म ४ स्फोटक कर्म ५ दातोंका बनज ६ लाखका बनज ७ रसोका बनज ८ केशोका बनज ९ विषका बनज १० यत्रपीडन कर्म ११ नपुसक कर्म १२ [निलौछन कर्म] वनको अग्निका लगाना १३ जलाशयको शुष्क करना १४ हिंसक जीवोका पोषण करना १५। सो यदि कोई भी दोष लगा हो तो मैं उन दोषो से पीछे हटता हू॥

आठमा अनर्थ दंड वेरमण व्रतके विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊ कंदर्पनी कथा कीधी होय १ भंडचेष्टा कीधी होय २ मुखारि वचन बोल्या होय ३ अधिकरण जोडी मूक्या होय ४ उव-भोग,परिभोग अधिका वधार्या होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

अर्थ—अष्टमा अनर्थ दड विरमण व्रतके अतिचारोकी आलोचना करता हू—कामजन्य कथा की हो १ भडचेष्टा की हो २ असम्बद्ध वचन भाषण किए हों ३ अपरिमाणयुक्त शस्त्रादिका सग्रह किया हो ४ जो वस्तु

एक वेर आसेवन करनेमें आवे अथवा पुन पुन ग्रहण करनेमें आवे उनके परिमाणको अधिक कर लिया हो ५ सो यदि इनमे कोई भी दोष लगा हो तो मै उक्त दोषोको छोडता हू ॥

नवमा सामायिक व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊं मन वचन कायाका जोग माठा वरताया होय सामायिकमें समता न आणी होय अणपूगी पारी होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—नवमे सामायिक व्रतमें यदि कोई दोष लगा हो तो मै उन दोषोंकी आलोचना करता हू जैसेकि—सामायिकमें मन वचन और कायके योगको दुष्ट धारण किया हो सामायिकमे यदि शान्ति न की हो और विना समय पूर्ण हुए सामायिककी आलोचना करी हो तो मैं इन दोषोंसे रहित होता हू ॥

दसवॉ देसावगासी व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊं नीमी भूमिकी वाहिरकी वस्तु अणाइ हो १ मुकलाइ हो २ शब्द करी जणायो होय ३ रूप करी दिखलाई हो ४ पुद्गल नाखिया आपण पउ जणावो होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—दशवे देशावकाशिक व्रतके दोषोकी आलोचना करता हू जैसेकि—परिमाण की हुई भूमिकाके वाहिरसे वस्तु मगवाई हो १ अथवा भेजी हो २ शब्द करके अपने आपको जताया वा दर्शाया हो ३ अथवा रूप करके अपने भाव प्रगट किये हो ४ किसी वस्तुके गिरानेमे किसी व-

रतुको बतला दिया हो ५ यदि इस प्रकारसे कोई भी दोष लगा हो तो मै उन दोषोंसे अपने आपको पृथक् करता हू॥

इग्यारमा पडिपुण्ण पोसह व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्ञा संथारा १ अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सिज्ञा सथारा २ अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चारपासवण भूमिका ३ अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय उच्चारपासवण भूमिका ४ पोसह माहि विकथा प्रमाद कीधा होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—एकादशने प्रतिपूर्ण पोषध व्रतके अतिचारोंकी आलोचना करता हू कि–शय्या सस्तारकको अप्रतिलेखित वा दु प्रतिलेखित किया हो १ अथवा शय्या सस्तारकको अप्रमार्जित वा दु प्रमार्जित किया हो २ इसी प्रकार विष्टा और मूत्रके स्थान भी सम्यक् प्रकारसे प्रतिलेखितादि न किए हो ३ और प्रमार्जित भी न किए हों ४ और पोषधमें विकथा वा प्रमाद किया हो ५। सो इन प्रकारके दोषोसे मै पृथक् होता हू अर्थात् मैं उक्त दोषोंको छोडता हू॥

बारमा अतिथिसंविभाग व्रतने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊं सूज्झती वस्तु सचित्त उपर मूकी होय १ सचित्त करी ढाकी होय २ काल अतिक्रम्या होय ३ आपणी वस्तु पारकी कीधी होय ४ मच्छर भाव दान दीधा होय ५ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

अर्थ—द्वादशवें अतिथिसंविभाग व्रतके दोषोंकी आलोचना करता हूं कि–यदि निर्दोष वस्तु सचित्त वस्तुपर रख दी हो १ अथवा निर्दोष वस्तुको सचित्त पदार्थोंसे ढांप दिया हो २ जिन पदार्थोंका काल अतिक्रम हो गया हो उनके देनेकी विज्ञप्ति की हो ३ अपनी वस्तु न देनेकी बुद्धिसे अन्यकी कह दी हो तथा अपने हाथोंसे दान न दिया हो ४ ईर्ष्यासे दान दिया हो ५ इस प्रकारके जो दिनमे दोष लगा हो तो मैं उन दोषोंसे पीछे हटता हूं ॥

संलेखणाके विषय जे कोई अतिचार लागा होय ते आलोऊं इहलोगा संसप्पउग्गा १ परलोगा संसप्पउग्गा २ जीविया संसप्पउग्गा ३ मरणा संसप्पउग्गा ४ कामभोगा संसप्पउग्गा ५ मा मुज्ज हुज्ज मरणते जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—संलेखनाके विषय यदि कोई अतिचार लगा हो तो मैं उसकी आलोचना करता हूं जैसेकि–संलेखनामे इस लोककी आशा करना १ पर लोककी आशा करना २ जीवनकी आकांक्षा करना ३ अथवा मृत्युकी इच्छा करना ४ तथा कामभोगकी आशा करना ५ । ये दोष संलेखनामें मुझे कदापि प्राप्त न होवें और यदि इन दोषोंमेंसे कोई भी दोष मुझे लग गया हो तो मैं उस दोषसे पीछे हटता हूं ॥

मूल—चौदा ज्ञानके, पांच सम्यक्त्वके, बारा व्रतोंके पांच पांच ए साठ, बारा व्रतोंके पन्नरा कर्मादानके, पांच संलेखणको, ९९ निनाणवे अतिचारोंके विषय जे कोई अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अणाचार सेव्या होय सेवाया होय सेवता प्रति अणुमोद्या

होय जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—चतुर्दश ज्ञानके अतिचार (१४), पाच सम्यक्त्वके, ६० द्वादश व्रतोंके, १५ कर्मादानोके, ५ पाच सलेखनाके एव ९९ अतिचारोके विषय यदि कोई अतिक्रम १ व्यतिक्रम २ अतिचार ३ अनाचार ४ आप दोष सेवन किए हों औरोसे दोष आसेवन करवाये हो जो उक्त दोष आसेवन करते हैं उनकी अनुमोदना की हो अत जो मैंने दिनके विषय इस प्रकारसे अतिचार आसेवन किए हो तो मैं उन दोषोसे पीछे हटता हू अर्थात् वे मेरे दोष निष्फल हो॥

अठारा पापस्थानक ते आलोऊं प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पिसुन्न १४ परपरिवाद १५ रति अरति १६ माया मोसो १७ मिच्छा दंसण सल्ल १८। अठारा पापस्थानक सेव्या होय १ सेवाया होय २ सेवतां प्रति अणुमोद्या होय ३ जो मे देवसि अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—अब मैं अष्टादश पापोंकी आलोचना करता हू जैसेकि–हिंसा १ झूठ २ चोरी ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ क्लेष १२ असत्य दोषारोपण १३ चुगली करना १४ दूसरोके अवगुण वर्णन करने १५ विषयादिमे रति और उनके न मिलने पर अरति करना वा दु ख मानना १६ छलसे असत्य बोलना १७ मिथ्या दर्शन शल्य १८ ये अष्टादश पाप सेवन किए हो अथवा औरोंसे आसेवन

करवाए हों तथा जो आसेवन करते है उनकी अनुमोदना की हो सो इस प्रकारके दोषोसे मैं पीछे हटता हू ॥

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसि अइ-यार कओ काइओ वाइओ माणसिओ उसुत्तो उम्म-ग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुविंतिओ अ-णायारो अणाछियव्वो असावग्गो पावग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ता चरित्ते सुय सामाइय तिण्ह गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खाव्वयाणं पंचण्हं अणुव्वयाणं वारस्स विहस्स सावग धम्मस्स ज खंडियं जं विराहियं जो मे देवसि अइयार कओ [1]तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

अर्थ—मै इच्छा करता हू एक स्थानमें बैठकर कायोत्सर्ग करनेकी क्योंकि–जो मेंने दिनमे अतिचार किए है कायासे, वचनसे, मनसे, अथवा सत्रविरुद्ध प्रतिपादन किया हो कुमार्गमे गमन किया हो अकरनीय पदार्थ सेवन किए हो अकरणीय कार्य किए हों सो इनकी निवृत्तिके लिये शुभ ध्यान करता हू तथा दुर्ध्यानसे निवृत्ति करता हू, दुश्चित्वनसे भी पीछे हटता हू । इसी प्रकार अनाचार अनिच्छनीय (जिसकी इच्छा करनी योग्य नहीं है) पदार्थ अश्रावक भावकी प्रवृत्तिसे भी निवृत्ति करता हू । यदि ज्ञान दर्शन चरित्राचरित्र श्रुत सामायिकमें दोष लगा हो तो उससे भी निवृत्ति करता हू । यदि तीनो गुणव्रतों चार शिक्षाव्रतों पञ्च अनुव्रतो एव द्वादश प्रकारके श्रावक धर्मको खडित किया हो अथवा विराधित किया हो जो मैने दिनमें अतिचार किया है उससे मैं पीछे हटता हू तथा वह मेरा अति-चाररूप पाप निष्फल हो ।

१ ध्यानमें यहा तक ही पठन करना चाहिये ॥

सव्वस्सवि देवसियं दुब्भासियं दुचिंतियं दुचि
ट्ठियं दुनिस्सियं अधिका ओच्छा पाठ पढ्या होय
आगलनूं पाछल पाछलनूं आगल कोई खोटा अक्षर
खोटी मात्रा बोला होय बोलाव्या होय जो मे देवसि
अइयार कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अर्थ—दिनमें यदि मैंने दुश्चिन्तन किया हो दुष्ट भाषण किया हो दुष्ट प्रकारसे बैठनादि क्रिया की हो पाठ अनुक्रमतापूर्वक पठन न किया हो तथा अशुद्ध पाठ पठन किया हो तो मैं उन दोषोंसे पीछे हटता हूं अथवा ये मेरे अतिचाररूप दोष निष्फल हो ॥

फिर नमस्कार मंत्र पढके कार्योत्सर्गको संपूर्ण करे ॥

॥ इति प्रथम सामायिक आवश्यक सम्पूर्णम् ॥

फिर "तिक्खुत्तो" के पाठसे गुरु देवको वंदना नमस्कार करके द्वितीय आवश्यक करे, जैसेकि–'लोगस्स उज्जोयगरे" इत्यादि पाठ पढके द्वितीय आवश्यक पूरा करके फिर तृतीय वंदना रूप आवश्यककी आज्ञा लेकर निम्नप्रकारसे तृतीय आवश्यक करे ॥

(इच्छामि खमासमणो) का पाठ दो वार पढे किन्तु प्रथम वार जब निस्सहियाय ऐसा सूत्र आवे तब हाथ जोडकर बैठ जावे, फिर षट्प्रकारसे आवर्त्तन निम्न लिखितानुसार करे जैसेकि–प्रथम (अहोकाय) यह सूत्र पढता हुआ तीन आवर्त्तन होते हैं, दोनो हाथ दीर्घ करके दशों अंगुली गुरुके चरणों ऊपर लगाता हुआ मुखसे "अ' अक्षर उच्चारण करे, फिर दोनों हाथ मस्तकको स्पर्शन करता हुआ "हो" अक्षर कहे यह प्रथम आवर्त्तन है। इसी प्रकार 'का" और 'य" अक्षरोंके उच्चारणसे द्वितीय आवर्त्तन होता है। फिर पूर्वोक्त विधिसे "का" और "य' अक्षरके कहनेसे तृतीय आवर्त्तन होता है॥

इसी प्रकार जत्ता, मे, जवणि ज्ज च मे, इन सूत्रोंके भी तीन २ ही आवर्त्तन होते है—जैसेकि-प्रथम मद स्वरके साथ "ज" अक्षर उच्चारण करे, फिर मध्यम स्वरसे "त्ता" ऐसे कहे, फिर ऊचे स्वरके साथ हाथ मस्तकको लगाता हुआ "मे" ऐसे वर्ण उच्चारण करे। इन तीनों अक्षरोंसे प्रथम आवर्त्तन होता है। फिर "ज" 'व" "णि" यह तीन ही अक्षर पूर्वोक्त स्वरोंके अनुकूल उच्चारण करनेसे द्वितीय आवर्त्तन होता है। फिर "ज" "च" "मे" इन तीन वर्णोंको पूर्वोक्त प्रकारसे उच्चारण करनेसे तृतीयावर्त्तन होता है। इस प्रकारसे पट् आवर्त्तन एक पाठसे होते है और दो वार उच्चारण करनेसे द्वादश आवर्त्तन हो जाते है, किन्तु द्वितीय वारके पाठमें "आवस्सियाए" ऐसे पाठ न पढे, अपितु सर्व सूत्र निम्न लिखितानुसार है ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीही अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंत्ताणं वहु सुभेण भे दिवसो वइक्कतो जत्ता भे जवणिज्ज च भे खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं आवसियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए तितीसन्नयराए ज किंचि मिच्छाए मण दुक्कडाए वय दुक्कडाए काय दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोहाए सव्व कालियाए सव्व मिच्छो वयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(खमासमणो) हे क्षमाके श्रमण शान्तिके समुद्र

(जावणिज्जाए) जिस करके कालक्षेप होता है ऐसी शक्ति करके तथा जन्म समयके बालकवत् जिसके दोनों हाथोकी दोनो मुष्टिया आखो पर होती हैं उसकी नाई (निसीहियाए) जिस शरीरका मुख्य कर्तव्य प्राणातिपातके निषेधका है ऐसे शरीर करके आपको (वंदिउ) वंदना करनेकी (इच्छामि) इच्छा करता हू (मिउग्गह) स्व देह प्रमाण प्रमाण की हुई भूमिकामे प्रवेश करनेकी (मे) मुझको (अणुजाणह) आज्ञा दीजिए। इस प्रकारसे आज्ञा लेकर अवग्रहमें प्रवेश करे (निसीहि) गुरुदेवको वदना विना जिसने अन्य क्रिया रूप व्यापारका निषेध किया है, फिर मुखसे ऐसे कहे कि (अहोकाय) हे क्षमा श्रमण आपके चरण कमलोंको (काय) हाथ करके (सफास) स्पर्श करता हू। इस प्रकार आज्ञा लेकर चरण कमलोको स्पर्श करके ऐसे कहे कि (किलामो) यदि आपके शरीरको मैने कोई पीडा दी हो (मे) हे भगवन् आप (खमणिज्जो) क्षमा करनेके योग्य हैं इस लिए क्षमा कीजिए क्योंकि-(बहु सुभेण) बहुत ही शुभ क्रियाओ करके (भे) आपका (दिवसो) दिवस [दिन] (वइक्कतो) अतिक्रान्त हुआ है और आप (अप्पकिलत्ताण) अल्प वेदनावाले हैं-शारीरिक मानसिक वेदनासे रहित है यदि शारीरिक वेदना आपको उत्पन्न होती है तो आप उसमे आर्त्त और रौद्र ध्यान नहीं करते है। हे करुणासमुद्र (जत्ता) तप नियम सयम स्वाध्याय रूप यात्रा (भे) आपमे सतत विद्यमान है, (च) और (जवणिज्जं भे) इन्द्रिय नोइन्द्रियके उपशम करनेसे आपका शरीर परम सुन्दर और शान्तिरूप हो गया है, (खमासमणो) हे क्षमा श्रमण (देवसिय) दिन सम्बन्धि (वइक्कम्म) व्यतिक्रम हुआ मेरा किया हुआ जो अपराध उसकी मैं (खामेमि) आपसे क्षमा मागता हू-आप दोषको क्षमा करनेके योग्य हैं इसलिये क्षमा कीजिए, और (आवसिआए) अवश्य करणीय प्रतिलेखनादि क्रियाओंके करनेसे यदि मुझको अतिचार लग गया हो तो मै उस अतिचार रूप दोषसे (पडिक्कमामि) पीछे हटता हू-

(खमासमणाणं) क्षमा श्रमणोंके सम्बन्धि [मुनियोके सम्बन्धि] (देवसिआए) दिनमे की हुई (आसायणाए) आशातनाये जैसेकि–(तेतीसन्नयराय) त्रयस्त्रिंशत् [तेती] आशातनायेंमेंसे अन्य वा अमुक आशातनायें की हो तथा (ज किंचि मिच्छाए) जो किंचित् मात्र भी मिथ्या भावका वर्ताव किया हो तथा (मण दुकडाए) मन सम्बंधि जो पाप हैं उन आशातनाये करके इसी प्रकार (वय दुकडाए) वचनके पाप करके (काय दुकडाए) कायके पाप करके (कोहाए) क्रोध करके (माणाए) मान करके (मायाए) छल करके (लोहाए) लोभ करके (सव्व कालिआए) सर्वकालमें यदि गुरु आदिकी अविनय की हो (सव्व मिच्छोवयाराए) सर्व मिथ्योपचार करके आशातनायें की हो (सव्व धम्म अइक्कमणाए) सर्व धर्म अष्ट प्रवचन दया माताके उल्लंघन करनेसे यह सर्व पूर्वोक्त(आसायणाए) आशातनाये करके (जो) जो (मे) मैं ने (अइयारो) अतिचार रूप दोष (कओ) किया हे (तस्स) उस अतिचारसे (खमासमणो) हे क्षमा श्रमण आपके समीप (पडिक्कमामि) प्रतिक्रमण करता हू (निंदामि) स्व-आत्माकी निंदा करता हू (अप्पाण) आत्मामेंसे दुष्ट कर्मोंका (वोसिरामि) परित्याग करता हू ॥

भावार्थ—स्वइच्छानुसार पापकर्मका दूर करता हुआ शान्तिरूप मुनिको वदना करे क्योंकि वदना करनेसे नीच गोत्र कर्मको क्षय कर देता है ऊच गोत्रको बाधता हे। पुन बैठकर गुरुके चरणकमलोंको हस्तादि करके स्पर्श करे, फिर कह हे भगवन्! आप क्षमा करो यदि मेरेमे आपको पीडा हुई हो क्योंकि आप अल्प वेदनावाले हैं, आपको दिन वहुतही शुभ क्रियाओ करके व्यतीत हुआ है, और आप क्षमा करनेके योग्य हैं, भावयात्रा मुनियोंके सदैव कालही विद्यमान रहती हे, इस लिए शिष्य यात्राके सबोधनसे गुरुसे फिर कहता हे–कि हे भगवन्! आपका शरीर इन्द्रियोके उपशम करनेसे शान्ति रूपतासे विराजमान है। फिर गुरुसे दिनमें किए हुए

दोषोंकी क्षमा करनेकी प्रार्थना अवश्य ही करे क्योंकि क्षमा मागनेसे अविनय भाव दूर हो जाता है। त्रयस्त्रिंशत् प्रकारकी आशातनायें करके वा मन वचन काय करके तथा चारों कषायों करकेकभी भी गुरुकी आशातना न करे। यदि किसी प्रकारसे भी गुरुकी आशातना हो गई तो उसका पश्चात्ताप करे, फिर स्वआत्माद्वारा उस कर्मकी निंदा करता हुआ पुन कभी भी आशातना न करे क्योंकि अविनय भावसे ज्ञानादि गुणोंकी सफलता नही होती है ॥

इति श्री वदनारूप तृतीयावश्यक समाप्तम् ॥

फिर तिक्खुत्तोके पाठसे वदना करके चतुर्थ आवश्यक करनेकी गुरु महाराजसे आज्ञा लेकर पूर्वोक्त ९९ अतिचार जो कायोत्सर्गमे पठन किए थे उनको पठन करे किन्तु सर्व पाठोंके अन्तमें "तस्स मिच्छा मि दुक्कड" ऐसे कहना चाहिये क्योंकि ध्यानमें यह कहा जाता है कि "जो मे देवसि अइयार कओ तस्स त्रिलवणा" इत्यादि। फिर तिक्खुत्तोके पाठसे वदना करके बैठकर दक्षिण जानु ऊर्ध्व करके वामा जानु भूमिका पर रखकर नमस्कार मत्र पढे। फिर "करेमि भंते"का सूत्र पठन करे। फिर निम्न प्रकारसे पाठ पढे—इस क्रियाको वा पाठको श्रावकसूत्र भी कहते हैं ॥

चत्तारि मगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहु मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगल चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंता सरणं पव्वज्जामि सिद्धा सरण पव्वज्जामि साहू सरण पव्वज्जामि केवलि पण्णत्तो धम्मो सरण पव्वज्जामि ॥

---

१ अरिहंताजीको सरणो सिद्धाजीको सरणो साधुजीको सरणो केवलि परूप्या

हिंदी पदार्थ—(चत्तारि मगल) चार मगल है—जैसेकि–(अरिहता मगल) त्रैलोक्य पूज्य श्री अर्हन्त मगलीक हैं, द्वितीय–(सिद्धा मगल) सिद्ध प्रभु मगलीक हैं, तृतीय–(साहू मगल) साधु मगलीक है, चतुर्थ–(केवलिपण्णत्तो धम्मो मगल) श्री केवली भगवान्का प्रतिपादन किया हुआ श्रुत चारित्र रूप धर्म मगलीक है, (चत्तारि लोगुत्तमा) चार ही पदार्थ लोकमे उत्तम हैं (अरिहता लोगुत्तमा) अरिहत प्रभु लोकमे उत्तम है, (सिद्धा लोगुत्तमा) सिद्ध भगवान् लोकमे उत्तम हैं, (साहु लोगुत्तमा) अर्हनाज्ञानुकूल क्रिया करनेवाले साधु लोकमे उत्तम है, (केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा) श्री केवलि भगवान्का प्रतिपादन किया हुआ धर्म लोकमे उत्तम है। पुन (चत्तारि सरण पव्वज्जामि) मै चार शरण अगीकार करता हू (अरिहता सरण पव्वज्जामि) श्री अर्हन् भगवान्का शरण ग्रहण करता हू (सिद्धा सरण पव्वज्जामि) श्री सिद्ध महाराजाओका शरण ग्रहण करता हू (साहू सरण पव्वज्जामि) श्री साधु मुनिराजोंका शरण ग्रहण हू (केवलि पण्णत्तो धम्मो सरण पव्वज्जामि) श्री केवलि भगवान्के प्रतिपादित धर्मका शरण ग्रहण करता हू॥

भावार्थ—लोकमें चार ही मगल है, चार ही उत्तम हैं, चार ही शरण हैं जैसेकि अर्हन् १ सिद्ध २ साधु ३ केवलि भाषित धर्म ४ ॥

फिर "इच्छामि ठामि" इस सूत्रको पढके इच्छाकारेण यह सूत्र पाठ पढे, फिर तिक्खुत्तोके पाठके साथ वदना नमस्कार करके व्रत अतिचारके पठन करनेकी आज्ञा लेकर प्रथम ज्ञानातिचारोंकी आलोचना करे, जैसेकि–

"आगमे तिविहे पण्णते"का पाठ ॥

आगमे तिविहे पण्णते तंज्जहा सुत्तागमे अ-

दया धर्मको सरणो ॥ चार सरणा दु ख हरणा और न बीजो कोय, जो भवि प्राणी आदरो तो अक्षय अचल गति होय॥

त्थागमे तदुभयागमे एहवा श्री ज्ञानने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं जंवाइद्धं व-च्चामेलियं हीणक्खरं अच्चक्खरं पयहीण विनयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुट्ठु दिन्न दुट्ठु पडिच्छियं अकाले कओ सज्झाओ काले न कओ सज्झाओ असज्झाइय सज्झायं सज्झाइय न सज्झायं भणता गुणता चित-वता अने विचारता ज्ञान अने ज्ञानवंतनी आशातना कीनी होय तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(आगमे तिविहे पण्णते) सूत्र तीन प्रकारसे प्रति-पादन किया हुआ है (तञ्जहा) जैसे कि–(सुत्तागमे) सूत्रागम, (अत्थागमे) द्वितीय अर्थागम, तृतीय (तदुभयागमे) सूत्र और अर्थ रूप आगम, (एहवा श्री ज्ञानने विषय जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं) इस प्रका-रके श्री ज्ञानके विषय यदि कोई अतिचार लगा हो तो मैं उसकी आलो-चना करता हूं, तथा उन अतिचार रूप दोषोंको प्रकाश करता हूं। (जवाइद्ध) सूत्रको अनुक्रमतापूर्वक न पठन किया हो तथा अन्य प्रकरणको अन्य प्रकरणके साथ एकत्व कर दिया हो (वच्चामेलिय) अन्य शास्त्रके पाठसे कोई अन्य सूत्र पाठ अधिक कर दिया हो (हीणक्खर) आगमको हीना-क्षरसे पठन किया हो वा (अच्चक्खर) सूत्रके अधिक अक्षर कर दिए हों (पयहीण) पदहीन पठन किया हो (विनयहीण) विनयसे हीन सूत्र पढा हो (जोगहीण) शुभ योगोंसे रहित सूत्र पढा हो (घोसहीण) उदात्त अनुदात्त स्वरित घोषसे रहित सूत्र पढ़ा हो (सुट्ठु दिन्न) अयोग्यको सूत्र-दान किया हो (दुट्ठु पडिच्छिय) अविनय भावसे पठन किया हो (अका-ले कओ सज्झाओ) अकालमे स्वाध्याय किया हो (काले न कओ सज्झाओ)

कालमे स्वाध्याय न किया हो (असज्झाइय सज्झाय) अस्वाध्यायके समयमे स्वाध्याय किया हो (सज्झाइय न सज्झाय) स्वाध्यायके समयमें स्वाध्याय न किया हो (जो) जो (मे) मेरा (देवसि) दिन सम्बन्धि (अइयारो) अतिचार (कओ) किया हुआ हे (तस्स) उसका (मिच्छा मि) फल मिथ्या हो वा निष्फल हो (दुक्कड) पापका ॥

भावार्थ—आगम तीन प्रकारसे प्रतिपादन किया गया हे जैसेकि सूत्रागम १ अर्थागम २ तदुभयागम ३, सो जवाइद्ध इत्यादि १४ अतिचार ज्ञानके है सो उनको श्रावक दूर करे। उक्त पाठसे श्रावकको सूत्र पठन करने स्वत ही सिद्ध होते हैं ॥

‡दर्शनका पाठ ॥

दर्शन सम्यक्त्व परमत्थ संथवो वा सुदिट्ठ परमत्थ सेवणावावि वावण्ण कुदंसण वज्जणाय एवी

---

‡ सम्यक्त्वके ग्रहण करनेके निम्न लिखित सूत्र पढना चाहिए—

अहन भंते तुम्हाण समीवे मिच्छत्ताउ पडिक्कमामि, सम्मत्त उवस पव ज्ज मि तजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउण मिच्छत्त कारणाइ पच्चक्खामि, सम्मत्त कारणाइ उवस पवज्जामि नो मे कप्पइ अज्जप्पभिई अन्नउत्थिए वा अनउत्थिय देवयाणि वा अनउत्थिय परिग्गहियाणि, चेइयाणि वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुव्वि अणालित्तेण आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसिं असण वा, पाण वा, खाइम वा, साइम वा, दाउ वा, अणुप्पयाउ वा खित्तउण इत्थ वा अनत्थ वा, कालउण जावज्जीवाए भावउण जावगहेण न गहिज्जामि जाव छलेण न छलिज्जामि, जाव सनिवाएण नाभिभविज्जामि जाव अन्नेण वा केणयरोयाय काइणाए सपरिणामो न परिवडइ तावमेव असम्प दसण नन्नत्थरायाभिउगेण, गणाभिउगेण, बलाभिउगेण, देवयाभिउगेण, गुरू निग्गहेण वित्तीक तारेण वोसिरामि ॥ अरहंतो महदेवो जावज्जीवाय सुसाहु सो गुरुणो जिण पन्नत्त तत्त ईयसम्मत मए गहिय ॥

सम्मत्त सद्दहणा एहवा सम्यक्त्वना समणोवासया-
णं सम्मत्तस्स पंच अइयारा पयाला जाणियव्वा न
समायरियव्वा तंज्जहा ते आलोउं संका कक्खा वि-
तिगिच्छा परवासंडी परसंसा परपासंडी संथवो एवं
पांच अतिचार मध्ये जे कोई अतिचार लागो होय
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(दर्शन सम्यक्त्व) दर्शन सम्यक्त्वका स्वरूप व
र्णन करते हैं कि (परमत्थ) परमार्थ जो नव तत्त्व जीवादि हैं उनका
(सथवो) सस्तव करना परिचय करना तथा (सुदिठ्ठ परमत्थसेवणावि)
परमार्थको जिन्होने भली प्रकारसे देखा है उनकी सेवा करनी (वावण्ण
जिन्होने सम्यक्त्वको धारण करके त्याग दिया है वा वमण कर दिया
तथा जो (कुदसण) कुत्सित दर्शन हैं जिन्होंमें सम्यक्त्वका ही अभाव
ऐसे पुरुषोंकी सगतिको (वज्जणाय) वर्जना (एषी) इस प्रकारसे (सम्म
सम्यक्त्वकी (सद्दहणा) श्रद्धा होती है (एहवा सम्यक्त्वना समणो
सयाण) इस प्रकारसे जो सम्यक्त्वके धारक श्रमणोपासक हैं
(सम्मत्तस्स) सम्यक्त्व सम्बन्धि (पंच) पाच (अइयारा) अतिचार
ला) स्थूल हैं जोकि (जाणियव्वा) जानने योग्य तो अवश्य हैं
(न समायरियव्वा) समाचरण योग्य नहीं हे (तज्जहा) तद्यथा
लोउ) उनकी आलोचना करता हू—जैसेकि (संका) जिनवचनों
करना (कक्सा) परमतकी आकाक्षा करना (वितिगिच्छा) फ
सशय करना जैसेकि सुव्रतोंका फल है किम्वा नहीं है (पर
ससा) परपाखडियोंकी प्रशसा करना क्योंकि मिथ्यात्वियोंकी
मिथ्यात्वमे ही प्रवेश कर जाते है (परपा

का परित्याग करे क्योंकि सर्वथा हिंसाका त्याग तो गृहस्थोंसे हो नहीं सकता, इस लिये स्थूल शब्द ग्रहण किया गया है। फिर त्यागमे भी जो निरपराधि जीव है उनको न मारे, अपितु स्वअपराधियोका त्याग नहीं है। उक्त व्रतमे न्यायधर्म वा न्यायमार्ग भली प्रकारसे दिखलाया गया है। जो निरपराधियोकी रक्षा स्वअपराधियोको दड इस कथनसे राजे महाराजे भी जैन धर्मको सुखपूर्वक पालन कर सकते है। फिर पाच ही अतिचार रूप दोषोंको भी दूर करे कि क्रोधके वशीभूत होकर जीवोंको बाधना १। वध करना अपितु जो बालकोंको ताड़नादि किया जाता है वह केवल शिक्षाके वास्ते होता है किन्तु उस आत्माको पीडित करनेके लिए नहीं जैसे अध्यापक छात्रोको शिक्षाके लिये ही ताडता है किन्तु उनके प्राणनाश करनेके लिए नहीं इस लिये क्रोधसे वध करना भी प्रथम अनुव्रतमें अतिचार रूप दोष है २। तृतीय अतिचार छविका छेदन करना ही है जैसेकि नेत्रोंके विषयके वास्ते पशुओके अगोपाग काट देने ३। और चतुर्थ अतिचार अतिभारारोपण हे, पशुओंकी शक्तिको न देखने हुए अति भारका लादना यह भी प्रथम अनुव्रतमें दोष है ४। पचम दोष अन्नपानीका निरोध रूप है, क्योंकि वे अनाथ आत्मा जो पूर्व पापोंके फलसे पशु योनिको प्राप्त हुए है उनकी भली प्रकारसे रक्षा न करना यह भी प्रथम अनुव्रतमें अतिचार रूप दोष है ५॥ इस लिये अनुव्रत द्विकरण तीन योगसे आयु पर्यन्त ग्रहण करे, करू नहीं मनकरके वचन करके काय करके कराऊ नहीं मन करके वचन करके काय करके इस प्रकार गृहस्थी प्रथम अनुव्रत धारण करके फिर द्वितीय अनुव्रत धारण कर जोकि निम्न लिखित है—

बीजुं अणुव्रत थूलाउ मोसावायाउ वेरमण कन्नालिए गोवालिए भोमालिए थापणमोसा मोटको कूड़ी साख इत्यादि मोटकं झूठ बोलवाना पञ्च-

क्खाण जावजीवाय दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा एहवा बीजा थूल मृषावाद विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तज्जहा ते आलोउं सहस्सा भक्खाणे रहस्सा भक्खाणे सदारमंत भेए मोसोवएसे कूड लेह करणे तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २ ॥

हिंदी पदार्थ—(बीजु अणुव्रत) द्वितीय अनुव्रत (थुलाउ) स्थूल [मोटा] (मोसावायाउ) मृषावादसे (वेरमण) निवृत्ति करता हूं जैसेकि—(कन्नालिए) कन्या तथा वर सम्बन्धि असत्य जैसे किसीने विवाह सम्बन्धि वार्त्ता की तब वर कन्या सम्बन्धि असत्य भाषण करना तथा इसी प्रकार (गोवालिए) गौ आदि पशुओं सम्बन्धि असत्य (भोमालिए) भूमिका सम्बन्धि असत्य (थापण मोसो) तथा स्थापन मृषा अर्थात् किसीने अमुकके पास विनाशाक्षिओंके कोई वस्तु स्थापन करा दी तो उसके लिए असत्य भाषण करना उसीका नाम स्थापन मृषा है (मोटकी कुडी साख) स्थूल कूट शाक्षि देना जैसेकि राज्यद्वारमे किसी कारणके पृच्छा करनेपर असत्य भाषण करना (इत्यादिक मोटकु झूठ बोलवाना पच्चक्खाण) इत्यादि स्थूल मृषावाद बोलनेका प्रत्याख्यान [नियम] (आवजीवाय) यावत् जीव पर्य्यन्त (दुविह) द्विकरण (तिविहेण) त्रियोगसे जैसेकि (न करेमि) उक्त कारणोसे असत्य भाषण नहीं करू (न कारवेमि) नहीं औरोंसे कराऊ (मणसा) मनसे (वयसा) वचनसे (कायसा) कायसे, एहवा बीजा थूल मृषावाद विरमण व्रतके पञ्च अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य हैं किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणके योग्य नहीं हैं (तज्जहा) तद्यथा जैसेकि-(सहस्सा भक्खाणे) विचारशून्य होकर अन्य आत्माओंके दोषारोपण किया हो वा अकस्मात विनाविचारे अन्य जीवोंको दोषोंके

भागी सिद्ध किया हो (रहस्सा भक्खाणे) किसीकी रहस्य वार्त्ता प्रगट करी हो (सदारमत भेए) स्वदाराका मत्र भेद किआ हो जैसेकि–स्त्रीकी मर्म युक्त वार्ताका कथन करना (मोसोवएसे) अन्य आत्माओंको मृपा भाषण करनेका उपदेश दिया हो (कूड लेहकरणे) कूट [असत्य] लेख लिखा हों (तस्स) उस (मिच्छा मि दुक्कड) अतिचार रूप पापसे मैं पीछे हटना हू ॥

भावार्थ—द्वितीय अनुव्रतमें स्थूल मृपावाद बोलनेका परित्याग किया जाता है जिसमें कन्यालीक गवालीक भूमालीक स्थापन मृपा कूट शाक्षि इत्यादि प्रकारके असत्य भाषणका द्विकरण त्रियोगसे प्रत्याख्यान करे। फिर उक्त अनुव्रतकी रक्षाके वास्ते पाच अतिचारोका भी परित्याग करे जैसेकि–विचारशून्य होकर किसी पर दोपारोपण करना १, किसीके मर्मयुक्त भेदको प्रगट करना २, स्वदारा मत्रभेद करना ३, अन्य आत्माओको मृपा भाषण करनेका उपदेश देना ४, कुट लेख लिखने ५, यह पाच ही अतिचाररूप दोप द्वितीय अनुव्रतकी रक्षाके वास्ते दूर करे, इनके प्रत्यक्ष फलसे लोग अनभिज्ञ नहीं हैं इसी लिये ही इनका विशेष अर्थ नहीं लिखा है ॥

अथ तृतीय अनुव्रत विषय ॥

तीजा अणुव्रत थूलाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं खातर खणी १ गाठड़ी छोड़ो २ तालापड़ि कुंची ३ वाट पाड़ो ४ पड़ी वस्तु धणीयाती जाणी ५ इत्यादिक मोटका अदत्तादाण सगा सम्बन्धि व्यापार सम्बन्धि तथा पड़ी निरधनी वस्तु ते उपरान्त मोटका अदत्तादाण लेवाना पच्चक्खाण जावजीवाय दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा

कायसा एहवा तीजा थूल अदत्तादाण विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जहा ते आलोउं तेणाहडे १ तक्करप्पउग्गे २ विरुद्ध रज्जाईक्कम्मे ३ कूड़ तोले कूड़ माणे ४ तप्पडिरूवग ववहारे ५ जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ३ ॥

हिंदी पदार्थ—(तीजा) तृतीय (अणुव्रत) अनुव्रत (थुलाउ) स्थूल (अदत्तादाणाउ वेरमण) अदत्तादानसे निवृत्ति करना है (खातर खणी) किसीके घरमे सधि करी हो [भित्ति आदिका तोडना] (गाठडी छोडी होय) गाठ कतरी हो (तालापाडि कुंची) अन्यके तालाओंको अन्य कुंजिया लगाई हो (वाट पाडी) मार्ग [पथ] मे लूटना (पडी वस्तु धणीयाती जाणी) किसीकी महार्ध वस्तु जानकर कि इसका अमुक धनी है या देखकर उठा ली हो (इत्यादि मोटका अदत्तादाण) इत्यादि स्थूल अदत्तादानका प्रत्याख्यान करता हू किन्तु (सगा सम्बन्धि) स्वजन सम्बन्धि वस्तु उठाकर लेनेका त्याग नहीं है, यदि उनको किसी प्रकारका भ्रम न हो, तथा (व्यापार सम्बन्धि) व्यापार सम्बन्धि जैसेकि—आदर्शके नमूनेके वास्ते कोई वस्तु उठाई जाती है (तथा निरूधनी वस्तु) तथा जिस वस्तुका खोज करने पर भी स्वामी सिद्ध न हो (ते उपरान्त मोटका अदत्तादाण) इनके विना स्थूल अदत्तादानके (लेवाना पच्चक्खाण) लेनेका प्रत्याख्यान (जावज्जीवाय) आयु पर्य्यन्त (दुविह) द्विकरण और (तिविहेण) त्रियोगसे जैसेकि (न करेमि) न करू (न कारवेमि) और नाही चोरी करनेका अन्यको उपदेश देकर उनसे चोरी कराऊ (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (एहवा तीजा थूल अदत्तादाण विरमण व्रतना) ऐसे तृतीय स्थूल अदत्तादान निवृत्तिरूप व्रत

के (पच अइयारा) पाच अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य है किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं हैं (तज्जहा) तद्यथा (ते आलोउ) उनकी आलोचना करता हू—जैसेकि (तेनाहडे) चोरीकी वस्तु ली हो (तक्करप्पउगे) चोरोकी सहायता की हो (विरुद्ध रज्जाइक्कम्मे) राज्य विरुद्ध काम किया हो क्योंकि—जो राज्य नियम [कानून] हे उसके विरुद्ध वर्तन करना तृतीय व्रतमे अतिचार रूप दोष हैं, इसालिए राज्य नियमसे यदि विरुद्ध काम किया हो (कुड तोले) न्यूनाधिक तोला हो (कुड माणे) वस्त्रादिका माप न्यूनाधिक किया हो (तप्पडिरूवगववहारे) अधिक मूल्यकी वस्तुमे अल्प मूल्यकी वस्तु एकत्व करके विक्रय करना जैसेकि—घृतमें चरबी, दुग्धमे जल, इत्यादि (जो) जो (मे) मैंने (देवसि) दिनमे (अइयारो) अतिचार (कउ) किया हे (तस्स) उस (मिच्छा मि दुक्कड) अतिचारोंसे मैं पीछे हटता हू ॥

भावार्थ—तृतीय अनुव्रतमे स्थूल चौर्य कर्मका परित्याग होता है जैसेकि—सधिका छेदन करना १ गाठ कतरना २ परके ताले अन्य कुञ्जियोसे खोलने ३ किसीकी वस्तु उठा लेनी ४ इत्यादि इस प्रकारके चौर्य कर्मोंका परित्याग करे। फिर उक्त व्रतकी रक्षाके लिए पाच अतिचार रूप दोपोको भी छोड देवे, जैसेकि—चोरोंका माल लेना १ चोरोकी सहायता करनी २ राज्य विरुद्ध कार्य करने ३ न्यूनाधिक तोलना और मापना ४ बहुमूल्य वस्तुमे अल्प मूल्यवाली वस्तुको एकत्व करके बहु मूल्यके भावसे विक्रय करना ५ इन पाच अतिचारोको परित्याग करके तृतीय अनुव्रतको द्विकरण और तीन योगोसे शुद्ध पालन करे क्योंकि—ये नियम उभय लोकमे सुखदायक हैं जैसेकि—इस लोकमे शान्ति, राज्यसेवा, धर्मरक्षा, परलोकमें आराधक भाव प्राप्त होना अनुक्रमतासे मुक्तिकी प्राप्ति होना एव अनेक सुखोकी प्राप्ति होनी हे ॥

अथ चतुर्थ अनुव्रत विषय ॥

*चौथुं अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमणं सदारा संतोसिए अवसेसं मेहुण सेववाना पच्चक्खाण ए पुरुषने अने स्त्रीने सभर्तार संतोसिए अवसेसं मेहुणनुं पच्चक्खाण अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायाए करी मेहुण सेववानुं पच्चक्खाण होय तेहने देवता मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धि मेहुणनुं पच्चक्खाण जावज्जीवाय देवता देवी सम्बन्धि दुविहेणं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धि एगविहं एगविहेणं न करेमि कायसा एहवा चौथा स्थूल मेहुण विरमण व्रतना पच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा

---

* चतुर्थ व्रतधारी श्रावकोंको इस प्रकारसे पाठ पठन करना चाहिये— जैसेकि—(चौथा अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमण सदारा संतोसिए अवसेस मेहुण पच्चक्खाण) इस प्रकारसे तो श्रावक पढे, और श्राविकायें निम्न प्रकारसे पढे (चौथु अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमण सभर्त्तार संतोसिए अवसेस मेहुणनु पच्चक्खाण) यदि स्त्री पुरुषको सर्वथा ही कायकरके मैथुन आसेवनका प्रत्याख्यान हो तिनको निम्न प्रकारसे पाठ पढना चाहिये। "चौथु अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमण देवता देवी सम्बन्धि दुविहं तिविहेण इत्यादि मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धि एगविह एगविहेण न करेमि कायसा इत्यादि तथा श्री उपासक दशाङ्ग सूत्रमें महाशत्तकजीने नन्नत्थ रेवतीपमुहा तेरसह दाराण अवसेस मेहुणाउ वेरमण इत्यादि उक्त सूत्रसे सिद्ध होता है जितनी स्त्रियोंका आगार रक्खा हो उतने प्रमाणसे उपरान्त मैथुन सेवन प्रत्याख्यान करे, प्रतिक्रमण करनेवालोंको योग्य है कि वे अपने २ यथेष्ट इस पाठको पढे ॥

ते आलोउं इत्तरिय परिग्गहियागमणे अपरिग्गहियागमणे अणंगकीडा परविवाह करणे काम भोगेसु तिव्वाभिलासा जो मे देवसि अइयार कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ४ ॥

हिंदी पदार्थ—*(चौथुं अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ वेरमण) चतुर्थ अनुव्रत स्थूल मैथुनसे निवृत्ति करना । जैसेकि—(सदारा संतोसिए) स्व-स्त्रीपर ही सन्तोष धारण करना (अवसेस) अशेष (मेहुणनु पच्चक्खाण) मैथुन आसेवनका प्रत्याख्यान (ए पुरुषने) यह नियम तो पुरुषोंका है (अने स्त्रीने) परंतु स्त्रियोंको निम्न प्रकारसे कहना चाहिये (स्वभर्तार संतोसिए (स्वभर्तार ऊपर ही सन्तोष करना) अवसेस मेहुणनु पच्चक्खाण (स्वभर्ताके बिना अन्यसे सर्वथा मैथुन सेवनका प्रत्याख्यान) अने जे स्त्री पुरुषने मूळथकीज कायाए करी मैथुन सेववानु पच्चक्खाण होय (यदि स्त्री और पुरुषको मूलसे ही काया करके मैथुन सेवनेका प्रत्याख्यान होवे तो (तेहने देवता मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धि) उनको देव, मनुष्य, ति-

---

* चतुर्थ व्रत धारण करनेका पाठ—

अहन्न भंते तुम्हाणं समीवे उरालियं वेउव्वियं थूलगं मेहुणं पच्चक्खामि इमं बंभवेरवयं उवसं पवज्जामि तथद्दिव्वं दुविहं तिविहेण तेरिच्छं एगविहं तिविहेणं मणुयं एगविहं तिविहेणं आहागरियं भगाहियं भगएणं तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि तउमहा दव्वउ, खित्तउ, कालउ, भावउ, तथद्दव्वउणं इमं बंभवयं उवसं पवज्जामि खित्तउणं इत्थय अन्नत्थ वा कालउणं जावज्जीवाए भावउणं जाव गहगहेणं न गिण्हेजामि जाव छलेणं न छलिज्जामि, जाव सन्निवाएणं नाभिभविज्जामि जाव अन्नेणवा केणपरीणायं केण न परिभविज्जामि ताव इमं बंभवयं, अरिहंत सक्खियं देव सक्खियं अप्पसक्खियं अणुसरामि ॥

र्यंत सम्भावे (मेहुणनु पच्चक्खाण) मैथुन सेवनेका प्रत्याख्यान (जावजी-वाय) सर्व आयु पर्यन्त (देवता देवी सम्बन्धि) देव देवी सम्बन्धि (दु-विह तिविहेण) द्विकरण और तीन योगसे जैसेकि—(न करेमि) मैथुन कर्म स्वय सेवन न करूं (न कारवेमि) नाहीं औरोंसे आसेवन कराऊं अपितु तीन योगोंसे जैसेकि—(मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धि) किन्तु मनुष्य और तिर्यग् सम्बन्धि (एगविह) एक करण और (एगविहेण) एक ही योग करके जैसेकि—(न करेमि) न करूं (कायसा) काय करके (एहवा चोथा थूल मेहुण विरमण व्रतना) ऐसे पूर्वोक्त कथन किए हुए चतुर्थ मैथुन विरतिरूप व्रतके (पच) पाच (अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य हैं किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं हैं क्योंकि इनके आसेवनसे सदार सतोषी व्रत खडित हो जाता है (तजहा ते आलोउ) जैसेकि—(इत्तरिय परिग्गहियागमणे) यह सर्व अतिचार सदार सतोषीको स्वकाया करके ही होते हैं इसलिए इनका पदार्थ—श्रीमान् परम पडित आचार्यवर्य श्री सोहनलालजी महाराजजी निम्न प्रकारसे करते हैं, जिसका कारण वशात् बाल्यावस्थावाली कन्याके साथ विवाह हो गया है यदि वे अप्राप्य यौवनकालमे स्त्रीसग करे तो प्रथम अतिचाररूप दोष होता है, द्वितीय अतिचार (अपरिग्गहियागमणे) जिस कन्याके साथ उपविवाह [मागना] तो हो गया है किन्तु आर्य विवाह नहीं हुआ है यदि उसके साथ सग करे तो द्वितीय अतिचार है (अणगकीडा) अनग नाम कामदेवका है कीडा नाम क्रीडा अर्थात् रमण करनेका है सो कामकी आशा पर अन्य प्रकारसे उपहासादि क्रियायें करनी अथवा यदि नञ् समास करें तो नअग अनग अर्थात् अगसे भिन्न स्थानोपरि कुचेष्टा करना उसका ही नाम अनग क्रीडा है इसी अर्थमे सर्व प्रकारकी कुचेष्टाये समावेशित हो जाती हैं, सो यदि अनग क्रीडा की हो तो तृतीय अतिचार है, चतुर्थ अतिचार (पर विवाह करणे) यदि ˜ ˍ हुएको तोडकर अपना विवाह

लेवे तो चतुर्थ अतिचार है। यदि पर विवाहका प्रथमवत् ही अर्थ किया जाए तो वह अर्थ सूत्रानुसार सघटित नहीं होता है क्योंकि जिस बातका श्रावकने नियम ही नहीं किया है तो भला उसका अतिचार कहासे होगा? किन्तु जो स्वदारसतोष व्रत है उसमें उक्त लिखा हुआ अर्थ युक्तिपूर्वक सिद्ध है, इस लिये किसीके उपविवाहको छीन कर उसे स्वयं विवाह कर लेना सोई चतुर्थ अतिचार है। फिर (कामभोगेसु तिव्वाभिलासा) काम भोगोमे तीव्र अभिलापा को हो तथा कामभोग आसेवनके लिये औषधियोका सेवन करना स्नान, व्यायाम, कामकी आशा पर तथा मादक द्रव्य ग्रहण करने यह पचम अतिचार है। विकार केवल मोहनीय कर्मकी प्रबलतासे उदय होता है उसे वैराग्यादि द्वारा उपशम करना सुपुरुषोका लक्षण है, न कि–उदय करना, इस लिए यदि उक्त प्रकारके अतिचार आसेवन किए हो तो (तस्स) उनका (मिच्छा मि दुक्कड) अतिचार रूप पाप मिथ्या हो ॥

भावार्थ—श्रावकका चतुर्थ अनुव्रत स्वदारा संतोष है जिसका अर्थ यही है कि अपनी स्त्री पर सतोष करना तथा परस्त्री वेश्या आदिका परित्याग करना, क्योंकि कामकी उपशान्ति केवल सतोष पर ही निर्भर है अन्य पदार्थों पर नही, सो परदारा वृति अर्थात् स्वदारा सतोषी पुरुष देव देवीके साथ मैथुनका त्याग द्विकरण तीन योगसे करे और मनुष्य वा तिर्यग् सम्बन्धि एक करण एक ही योगसे करे और जिसके सर्वथा ही मैथुन सेवनका परित्याग होवे जिस भागे करे उसी भागेकी आलोचना करे, किन्तु इस व्रतके जो पाच अतिचार है उनका स्वरूप पदार्थमें लिख दिया है, किन्तु जो प्रथम अर्थ विधवा प्रमुखका वा वेश्यादिका करते है वह अर्थ युक्तिपूर्वक सिद्ध नहीं होता है, क्योंकि स्वदार सतोषी व्रतके ग्रहण करने पर ही उक्त वेश्यादिका परित्याग होता है, इस लिए जो अर्थ श्री आचार्य श्री पूज्यपाद सोहनलालजी महाराजने प्रतिपादन किया है वही अर्थ युक्ति सावित है ॥

अथ पंचम अनुव्रत विषय ॥

पांचमुं अणुव्रत थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं खित्त वत्थुनु यथा परिमाण हिरण्ण सोवण्णनुं यथा परिमाण धन धाण्णनु यथा परिमाण दुप्पद चउप्पदनुं यथा परिमाण कुविय धातुनुं यथा परिमाण ए यथा परिमाण कीधु छे ते उपरांत पोतानुं करी परिग्रह राखवानां पच्चक्खाण जावजीवाय एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा पात्रमा थूल परिग्रह परिमाण व्रतना पच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते आलोउं खित्त वत्थु प्पमा- णाइक्कमे हिरण्ण सोवण्ण प्पमाणाइक्कमे धन धाण्ण प्पमाणाइक्कमे दुप्पड चउप्पद प्पमाणाइक्कमे कुविय घातु प्पमाणाइक्कमे जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(पाचमु अणुव्रत थूलाओ परिग्गहाओ वेरमण पाचवा अनुव्रत स्थूल [मोटा] परिग्रहसे धन धान्यादि निवृत्तिरूप उस विवरण करते हे जैसेकि—(खित्त वत्थुनु यथा परिमाण) क्षेत्र [खेत आरामादिकी भूमिका अथवा हट्ट गृहशालादिका यावत् [जितना] माण किया हुआ हे (हिरण्ण) चादी (सोवण्णनु) सुवर्णका (यथ माग) यावत् परिमाण किया हुआ है (धन) धन और (धा गोधूमादि धान्यका (यथा परिमाण) यावत् परिमाण किया हुआ प्पद) द्विपद मनुष्यादि (चउप्पदनु) चतुष्पद गवादिका (यथा ... किया हुआ है (कुविय धातुनु) घरकी यावत् स

उनका (यथा परिमाण) यावत् परिमाण किया हुआ है (ए यथा परि
कीधु छे) उक्त लिखे हुए अनुसार यावत् परिमाण किया हुआ है
उपरात पोतानु करी) परिमाण उपराति अपनी निश्राय करके (परि
राखवाना पच्चक्खाण) परिग्रह रखनेका प्रत्याख्यान [त्याग] (जाव
वाय) यावत् जीव पर्य्यन्त (एगविहं) एक करण (तिविहेण) तीन
गसे जैसे कि-(न करेमि) परिमाणसे अतिरिक्त परिग्रहका सचय न
(मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (
हवा) ऐसे (थूल) स्थूल (परिग्रह व्रतना) परिग्रह व्रतके (पन्च)
(अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य है किन्तु (न समाय
यव्वा) ग्रहण करने योग्य नहीं हैं (तज्जहा) तद्यथा (ते आलोउ
उनकी आलोचना करता हू-(खित्त वत्थु प्पमाणाइक्कमे) क्षेत्र [खेत]
शालादि स्थानोका परिमाण अतिक्रम किया हो (हिरण्ण सोवण्ण प्पमाण
क्कमे) चादी सुवर्णका परिमाण अतिक्रम किया हो (धन धाण्ण प्पमाणा
क्कमे) धन मुद्रादि धान्य शाल्यादिका परिमाण अतिक्रम किया हो (दुप
चउप्पद प्पमाणाइक्कमे) द्विपद मनुष्यादि चतुष्पद गवादिका परिमाण अ
क्रम किया हो (कुविय धातु प्पमाणाइक्कमे) घरकी सामग्रीका परिमा
अतिक्रम किया हो तो (जो) जो (मे) मैने (देवसि) दिनमे (अ
यारो) अतिचार (कउ) किया हुआ है (तस्स) उस (मिच्छा मि
कड) अतिचार रूप पापका नाश हो अर्थात् वे पाप निष्फल हों ॥

भावार्थ—पचम अनुव्रतको इच्छाप्रमाण व्रत भी कहते हैं और
च्छाका निरोध करना ही मुख्य कर्तव्य है जैसे कि-क्षेत्र, वस्तु, हिरण्य
सुवर्ण, धन, धान्य, द्विपद, चतुष्पद, अन्य घरकी सामग्री जो कुछ भी हो
विनापरिमाण कोई कार्य न होना चाहिये और यह व्रत एक करण और
तीन योगसे किया जाता है। पाच ही इस व्रतके अतिचार हैं वह ये हैं-
जिन पदार्थोंका परिमाण किया गया है उनका उल्लघन करना वही अति
चार है, इस लिये उक्त अतिचारोंको वर्जके पंचम अनुव्रत शुद्ध धारण करे।

अथ षष्टम व्रत विषय ॥

छठ्ठुं दिशिव्रत उर्ध्व दिशानु यथा परिमाण अधो दिशानुं यथा परिमाण तिरिय दिशानुं यथा परिमाण ए यथा परिमाण कीधुं छे ते उपरांत सइच्छायें कायायें जइने पंच आस्त्रव सेववाना पच्चक्खाण जावजीवाय दुविह तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा एहवा छठ्ठा दिशि व्रतना पच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते आलोउं उढ्ढ दिसि प्पमाणाइक्कमे अहो दिसि प्पमाणाइक्कमे तिरिय दिसि प्पमाणाइक्कमे खित्त वुड्ढि सयंतरद्धाय जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

हिंदी पदार्थ—(छठ्ठ दिशि व्रत) छठा दिग्व्रत जो दिशाओंका परिमाण किया जाता है जैसे कि–(उर्ध्व दिशानु यथा परिमाण अधो दिशानु यथा परिमाण) उर्ध्व ऊंची दिशाका यावत् [जितना] परिमाण किया हुआ है, नीची दिशाका यावत् परिमाण किया हुआ है (तिरिय दिशानु यथा परिमाण) तिर्यग् दिशाओंका जैसे कि–पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशाओंका यथा परिमाण (ए यथा परिमाण कीधु छे) यह यावत् परिमाण किया हुआ है (ते उपरान्त) परिमाण भूमिकाके विना (सइच्छायें) स्व इच्छा करके वा (कायाये) शरीर करके (जइने) जा करके (पच) पांच (आस्त्रव) आस्त्रव [कर्म आनेके मार्ग] (सेववाना) आसेवन करनेका (पच्चक्खाण) प्रत्याख्यान (जावजीवाय) यावत् जीव पर्य्यन्त (दुविह)

द्वि करण और (तिविहेण) तीन योगसे करता हू जैसे कि-(न करेमि) आसेवन न करू और (न कारवेमि) आसेवन न कराऊ (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (एहवा) ऐसे (छट दिशि व्रतना) षष्टम दिग्व्रतके (पच अइयारा) पाच अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य हैं किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं हैं (तज्जहा) तद्यथा (ते आलोउ) उनकी आलोचना करता हू, जैसे कि- (उड्ढ दिसि प्पमाणाइक्कमे) ऊची दिशाका परिमाण उल्लघन किया हो (अहो दिसि प्पमाणाइक्कमे) नीची दिशाका परिमाण अतिक्रम किया हो (तिरिय दिसि प्पमाणाइक्कमे) तिर्यग् दिशाका परिमाण अतिक्रम किया हो (खित्त वुड्ढि) क्षेत्रकी वृद्धि की हो जैसे कि-कल्पना करो कि-किसी व्यक्तिने चारो ओर ५०० पाचसो कोशका परिमाण किया हुआ है, फिर उसने विचारा कि पूर्व दिशामें तो विशेष कार्य रहता है अपितु दक्षिण दिशामे कुछ काम नहीं पडता, इस लिये परिमाणसे अधिक पूर्वमे कर लू और दक्षिण दिशामे स्वल्प कर दू इत्यादि कार्य किया हो (सयत्तरद्धाय) सदेह होने पर फिर भी आगे ही गमण किया हो अर्थात् जैसे सो योजन तक जानेका परिमाण किया हुआ है, और मार्गमे जाते २ अनुमानसे ज्ञात किया कि, स्यात् मैं यथा प्रमित तो आ गया हूगा ऐसा सदेह होने पर भी आगे जाना यह नियममे दोष है। (जो मे देवसि अइयारो कउ) जो मेरा दिन सम्बन्धि अतिचार रूप पाप हैं (तस्स मिच्छा मि दुक्कड) वे निष्फल हो और उस अतिचार रूप पापसे मैं पीछे हटता हू ॥

भावार्थ—षष्टम दिग्व्रतमे षट् दिशाओका परिमाण किया जाता है जैसे कि-पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, उर्ध्व, अधो। परिमाणसे बाहिर स्थानोमें पाच आस्रव (हिंसा, असत्य, अदत्त, अब्रह्मचर्य, परिग्रह) इनके आसेवन करनेका द्विकरण और तीन योगसे प्रत्याख्यान करे, फिर पाच ही अतिचारोको वर्जे, इस प्रकार षष्टम व्रतकी आलोचना करे। फिर सप्तम व्रतकी आलोचना करे—

अथ सप्तमं व्रत विषयं ॥

सातमु व्रत उवभोग परिभोगविहं पच्चक्खा-
यमाणे उल्लणियाविहं दंतणविहं फलविहं अभ्भंगण
विहं उवट्टणविहं मज्जणविहं वत्थविहं विलेवणविहं
पुप्फविहं आभरणविहं धूपविहं पेजविहं भक्खण-
विह उदनविहं सूपविह विगयविह सागविहं मा-
हुरविहं जिमणविहं पाणीविह मुखवासविहं वा
हनिविहं पाहनिविह सयणविह सचित्तविहं दव्व
विहं इत्यादिकनुं यथा परिमाण कीधुं छे ते उपरान्त
उवभोग परिभोग भोगनिमित्ते भोगववाना पच्चक्खा-
ण जावजीवाय एगविहं तिविहेणं न करेभि मणसा
वयसा कायसा एहवा सातमां उवभोग परिभोग दु-
विहे पन्नते तंञ्जहा भोयणाउय कम्मउय भोयणाउ
समणोवासयाण पंच अइयारा जाणियव्वा न समा-
यरियव्वा तंञ्जहा ते आलोउं सचित्ताहारे सचित्त प-
डिबद्धाहारे अप्पोलि ओसहि भक्खणयाय दुप्पोलि
ओसहि भक्खणयाय तुच्छोसहि भक्खणयाय जो मे
देवसि अइयार कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ त-
त्थणं जे ते कम्मउणं समणोवासयाणं पन्नरस्स क
म्मदाणाइं जाणियव्वा न समायरियव्वा तञ्जहा ते

आलोउं इंगालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे दंतवणिज्जे लक्खवणिज्जे रसवणिज्जे केसवणिज्जे विसवणिज्जे जंतपिलणिया कम्मे निलंच्छणिया कम्मे दवग्गि दावणिया कम्मे सरदहतलाय परिसोसणिया कम्मे असईजण पोसणिया कम्मे जो मे देवसि अइयार कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(सातमु व्रत) सप्तम व्रत (उवभोग) उपभोग—जो वस्तु एक ही वार आसेवन करनेमें आवे उसको उपभोग कहते है जैसे कि—अन्नादि तथा (परिभोगविह) परिभोग उसका नाम है जो पदार्थ पुन २ आसेवन करनेमे आवे जैसे कि—वस्त्र और आभरण प्रमुखका (पच्चक्खायमाणे) प्रत्याख्यान करता हुआ* निम्नलिखित वस्तुओंका प्रमाण करे

---

* द्रव्य परिमाणमें ग्रहण करने योग्य पदार्थोंका ग्रहण करना सिद्ध किया गया है, अन साथ ही मनुष्य आहारका भी विवेचन हो गया है क्यों कि—श्री स्थानाग सूत्रके चतुर्थ अध्यायके चतुर्थ उद्देशमें लिखा है कि—*मणुस्साण चउव्विहे आहारे पण्णत्ते तज्जहा असणे पाणे खाइम साइमे* (इति सूत्रम्) इसका अर्थ यह है कि—मनुष्योंका चार प्रकारसे आहार प्रतिपादन किया गया है—जैसे कि—अन्न १ पानी २ खादिम मिठाइ आदि ३ स्वादिम जैसे ताम्बूलादि ४। इस सूत्रसे सिद्ध होता है कि—मनुष्य मात्रका उक्त चारों प्रकारका ही आहार है किन्तु मासभक्षण तो केवल पशु आहार ही बतलाया गया है। मासभक्षणका फल केवल नरक ही कथन किया है जैसे कि—*चउहिं ठाणेहिं जीवाणे रतितायकम्म पगरेंति तज्जहा महारभयाते महापरिग्गहताते पचेंदिय वहेण कुणिमआहारेण* ॥

अर्थ—चार कारणोंसे जीव नरकायुको बांध लेते हैं जैसे कि—महा हिंसासे १ महा परिग्रहसे २ पचेंद्रिय वधसे ३ और मास भक्षणसे ४। और आज

जैसेकि—(उल्लणियाविह) स्नानके पीछे जिस वस्त्रसे शरीर पूछा जाता है उस वस्त्रकी विधिका परिमाण (दंतणविह) दातनोंका परिमाण, विधि शब्दका अर्थ नाना प्रकारका जानना चाहिये जैसेकि—दातनोंके लिये कति-

---

सकी गति केवल स्वर्गकी होती है इस लिये मांसाहार मनुष्य मात्रके लिये अभक्ष्य है, अतः साथ ही मांसके सहचारिणी मदिरापान भी अभक्ष्य है क्यों कि—सूत्रोंमें इसके अनेक दोष वर्णन किये गए हैं तथा पान तो करना दूर रहा किन्तु इसके विक्रियका भी रस वनत्रमें निषेध किया गया है और न रकोंमें मांसभक्षण और सुरापान करनेवालोंकी गति इस प्रकारसे वर्णन की गई है—जैसे कि—

तुहं पियाइ मंसाइ, खंडाइ सोल्लगाणिय ।
खाविओमिस मसाई, अग्गिवन्नाइंणेगसो ॥ ७० ॥
तुहंपिया सुरासीहू, मेरओय महूणिय ।
पाइओमिजलंतीओ, वसाओ रुहिराणिय ॥ ७१ ॥

उतराध्ययन सूत्र अ० १९ ॥

भावार्थ—मृगापुत्रजी अपने मातापिताजीको कहते हैं कि—हे माता और पिताजी ! मुझको नरकोंमें परमाधर्मियोंने इस प्रकारसे कहा कि—भो नारक ! तुमको मांसभक्षण अतिप्रिय था, तू मांसके खंड और सोले (पका कर) करके खाता था, अब हम तुमको तुम्हारा मांस अग्निके समान उष्ण करके भक्षण कराते हैं। उन्होंने फिर उसी प्रकार मेरे साथ वर्ताव किया जैसे कि—वे कहते थे, किन्तु एक बार नहीं अपितु अनेकश बार उन्होंने मेरे साथ वर्ताव किया ॥७०॥ और फिर कहा कि—तुमको सुरा, सिंधु, मेरक, मधुनि इत्यादि भेदोंकी मदिरा भी प्रिय थी इस लिये अब तुमको उसके स्थान पर चरबी और रुधिर उष्ण करके पीलाया जाता है अपितु उन्होंने जैसे कहा था वैसे ही किया ॥७१॥ इन पाठोंसे सिद्ध हुआ कि—भक्ष्याभक्ष्य और पेयापेय आदिका विचार करके मदिरा तथा मांसका परित्याग करना चाहिये क्योंकि—मांस और मदिरा यह दोनों पदार्थ श्रावकके लिये अभक्ष्य हैं अपितु जो भक्ष्य पदार्थ हैं उनका प्रमाण ऊपर कहा गया है ॥

पय वृक्षोका परिमाण करना इसी प्रकार आगे भी जान लेना (फलविहं फल विधिका परिमाण (अम्भगणविह) आभगण विधिका परिमाण जैसे तैलादिका (उवट्टणविह) उवटनेका परिमाण (मज्जणविह) मञ्ज [स्नान] विधिका परिमाण वा पानीका परिमाण (वत्थविह) वस्त्र विधि का परिमाण (विलेवणविह) चदनादि विलेपन विधिका परिमाण (पुप्फ विह) पुप्प विधिका परमाण (आभरणविह) आभूपणोंका परिभाण (धूप विह) धूप विधिका परिमाण (पेज विह) पीनेवाली वस्तुओंका परिमाण (भक्खणविह) खाद्यमादि वस्तुओंका परिमाण (उदन विह) शाल्यादिका परिमाण (सूपविह) मूगी प्रमुख दालिका परिमाण (विगयविह) विगय [घृत, तैल, दूध, दधि, गुड, नवनीत (माखन) मधु आदि] का परिमाण (सागविह) शाकादि विधिका परिमाण (माहुरविह) माधुर विधिका परिमाण जैसे कि—आम्रादि फल (जिमणविह) अमुक पदार्थका आहार करूगा तथा तिक्त पदार्थोंका परिमाण (पाणीविह) जल विधिका परिमाण जैसे कि अमुक कूपादिका जल सेवन करूगा (मुखवासविह) लवग सुपारि प्रमुखका परिमाण (वाहनिविह) रथ, रेल्गाडी, अश्व, हस्ती, यक्का, इत्यादि वाहनोका परिमाण (पाहनिविह) पाटोंकी रक्षा अर्थे जूती इत्यादि विधिका परिमाण (सयणविह) शय्या पर्यंकादिका परिमाण (सचित्तविह) सचित्त वस्तुओका परिमाण जैसेकि—पाच स्थावरोंका सेवनार्थे परिमाण करना (दव्वविह) द्रव्य विधिका परिमाण जैसे कि—आज दिन कतिपय द्रव्य अगीकार करूगा, कल्पना करो किसी व्यक्तिने ५ द्रव्योंके विना और सर्व पदार्थोंका नियम कर दिया है तो फिर पाच द्रव्य यह इस प्रकारसे ग्रहण करता है, कि—एक द्रव्य अन्न, द्वितीय द्रव्य जल, तृतीय द्रव्य सूप, चतुर्थ द्रव्य शाक, पचम द्रव्य घृत, (इत्यादिकनु यथा परिमाण कीधु छे) इत्यादि पदार्थोंका जैसा परिमाण किया हुआ है (ते उपरान्त) उनके विना (उवभोग) जो एक वार आसेवन करनेमें आवे तथा (परिभोग) जो वस्तु पुन २ आसेवन करनेमे आवे (भोग निमित्ते) भोगनेके वास्ते

(भोगपमाना पच्चक्खाण) खानेका प्रत्याख्यान (जावज्जीवाए) यावज्जीव पर्यन्त (एगविहं) एक करण (तिविहेण) तीनो योगोंसे जैसे कि—(न करेमि) न करु (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (एहत्रा सातमा उवभोग परिभोग) ऐसे सतम उपभोग परिभोग (दुविहे) द्वि प्रकारसे (पण्णत्ते) प्रतिपादन किया गया है (तञ्जहा) तथा—जैसे कि—(भोयणाउय) एक भोजन सम्बन्धि (भोयणाउय समणोवासयाणं) भोजनप्रत सम्बन्धि श्रमणोपासकाको (पंच) पांच (अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य तो हैं किन्तु (न समायरियव्वा) ग्रहण करने योग्य नहीं हैं (तञ्जहा) तद्यथा (ते आलोऊ) उनकी आलोचना करता हू (सचित्ताहारे) सचित वस्तुओका परित्याग होनेपर सचित वस्तुओका आहार किया हो (सचित्त पडिबद्धाहारे) सचित्त प्रतिबद्ध पदार्थोंका आहार किया हो जैसे, गृद तत्काल वृक्षोंमे उतार कर भक्षण करना तथा वनस्पतिके पत्रोपरि कदोई [हलवाई] को हट्टोपरि वस्तुओका खाना (अप्पोलि ओसहि भक्खणया) अपक्वोषधिका आहार किया हो तथा तत्कालकी अचित्त हुई वस्तुका आहार किया हो (दुप्पोलि ओसहि भक्खणया) दु पक्वोपधिका आहार किया हो जैसेकि होला प्रमुख, (तुच्छोसहि भक्खणया) जो पदार्थ खानेकी अपेक्षा गेरनेमे विशेष आवे उनका आहार किया हो जैसे सत्राटक, इक्षु—खड इत्यादि तथा तुच्छौषधि आहार उसका नाम भी है जिसके अतीव भक्षणसे भी तृप्ति न होवे जैसे खसखसादि (जो मे) जो मैंने (देवसि) दिन सम्बन्धि (अइयारो) अतिचार (कउ) किए हुए हैं (तस्स) उसका (मिच्छा मि दुक्कड) जो अतिचाररूप पाप हैं वह निष्फल हो॥ (तथण जे ते) उनमेसे जो (कम्मउण) कर्मोसम्बन्धि (समणोवासयाण) श्रमणोपासकोको दोष लगते हैं वे निम्न प्रकारसे है (पन्नरस कम्मादाणाइ) पञ्चदश कर्मादान जो कर्म आनेके पंचदश मार्ग है वही अतिचार है किन्तु श्रावकोंको (जाणियव्वा) जानने योग्य तो है परतु

(न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं हैं जैसेकि–(तंजहा) तद्यथा (ते आलोउ) उनकी आलोचना करता हू–(इंगालकम्मे) अगार कर्म [कोयला प्रमुखका व्यापार] अग्नि सम्बन्धि व्यापार किया हो (वणकम्मे) वन छेदन करना अर्थात् वन कटवाना (साडीकम्मे) शकटादि बनवाकर विक्रिय किए हो (भाडिकम्मे) शकटादि वा ऊंट, अश्व, वृषभ, खर, इत्यादि पशु भाडे पर दिए हो (फोडीकम्मे) पृथिवीका स्फोटन कर्म वा पाषाणादिका स्फोटन कर्म किया हो (दंतवणिज्जे) दाँतोका व्यापार किया हो जैसेकि–हस्तीके दाँत, कस्तूरी, मृगचर्म प्रमुख (लक्खवणिज्जे) लाखका वणज किया हो (रसवणिज्जे) रसोका वणज किया हो जैसे–दुग्ध, तैलादि वा मदिरादि, (केसवणिज्जे) द्विपद चतुष्पद जीवोका व्यापार किया हो (विसवणिज्जे) विषका व्यापार किया हो (जंतपिलणिया कम्मे) यंत्रपीडन कर्म किया हो जैसे कि–घराट, कोल्हू ऊखल, मूसलादि कर्म (निल्लञ्छणिया कम्मे) निर्लांछण कर्म जैसे वृषभादिको नपुंसक करना (दवग्गि दावणिया कम्मे) वनको अग्नि लगाई हो तथा दावाग्निका उपदेश किया हो (सर) तडाग (दह) द्रह, कुड, (तलाय) तडाग चतुष्कोण प्रमुखके जलको (परिसोसणिया कम्मे) परिशोषण किया हो अर्थात् सुकाया हो (असइ जण पोसणिया कम्मे) असती जनोंको पोषणा की हो जैसे–आहेटक कर्मोंके वास्ते श्वानादि वा श्येनादि [बाज] वा मार्जारादि पोषण किए हो (जो मे देवसि अइयारो कउ) जो मेरा दिवस सम्बन्धि अतिचार किया हुआ है (तस्स मिच्छा मि दुक्कड) उस अतिचार रूप पापका फल निष्फल हो ॥

भावार्थ—सप्तम व्रत उपभोग परिभोग है, जिसका अर्थ है कि जो पदार्थ एक वार ग्रहण करनेमे आवें तथा वारम्वार ग्रहण करनेमें आवे उनको विना परिमाण न आसेवन करे, जैसेकि–स्नानादि और पञ्चदश कार्य जिनसे अधिक कर्मोंका बन्ध होता है, उनका सर्वथा ही परित्याग करे। कदाचित्

कर्मोदयसे *रसवाणिजादि कर्म करने पड जाये तो अयत्नसे काम कदापि न करे, क्योंकि अयत्नसे अनेक जीवोकी घात होना सभव है, अत विना यत्न कोई भी क्रिया न करे। जिन लोगोंको स्नानादि विषय शका रहा करती है उनको योग्य है सप्तम व्रतको पठन करनेका अभ्यास करे, फिर इस व्रतके पाचो ही अनिचारोंको वर्जके उक्त व्रतको शुद्धतापूर्वक पालन करे ॥

अथ अष्टम व्रत विषय ॥

आठमुं अनर्थदंड विरमण व्रत ते चउविहे अणत्थादडे पण्णत्ते तंजहा अवज्झाणायरिय पमाया यरिय हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे एहवा अनर्थदंड सेववाना पच्चक्खाण जावजीवाय दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा एहवा आठमा अनर्थदड विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते आलोऊ कंदप्पे कुकुइए मोहरिए संजुत्ताहिगरणे उवभोग परिभोग अइरत्ते जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(आठमु) अष्टम (अनर्थ दड) अनर्थदड—विना ही कारण जीवोकी हिंसा करना वा अन्य आत्माओंको दडित करना (विरमण व्रत) इससे निवृत्ति भूत जो आठवा व्रत है, (ते) वह (चउविहे) चतुर्विधसे (अणत्थादडे) अनर्थ दड (पण्णत्ते) प्रतिपादन किया है (तंजहा)

* किन्तु मदिरादि पदार्थोंका व्यापार तो कभी भी न करे अपितु इनका सर्वथा ही त्याग करे ॥

तद्यथा (अवज्झाणायरिय) अपध्यान करना जैसेकि—अन्य आत्माओंके हानि-कारक विचार करने (पमायायरिय) प्रमादाचरण करना अर्थात् धार्मिक कार्योंको परित्याग करके अन्य कार्योंमे परिश्रम करते रहना तथा घृतादिके वरतन अयत्नसे रखना (हिंसप्पयाणे) हिंसाकारी वस्तुओंका दान करना जसे शस्त्रदान इत्यादि (पावकम्मोवएसे) अन्य आत्माओंको विना ही प्रयोजन पापकर्मोंका उपदेश करना जिसके द्वारा वह पापकर्ममे लग जावे (एहवा) ऐसे (अनर्थदंड) अनर्थदंडके (सेववाना) आसेवन करनेका (पच्चक्खाण) प्रत्याख्यान (जावजीवाय) यावत् जीव पर्य्यन्त (दुविहं) द्विकरण और (तिविहेणं) तीन योगोंमे (न करेमि) स्वय अनर्थदंडको सेवन न करू (न कारवेमि) नाहीं अन्य जीवोंसे अनर्थदंड सेवन कराऊ (मणसा) मनसे (वयसा) वचनसे (कायसा) कायसे (एहवा) ऐसे (आठवा) अष्टम (अनर्थदंड विरमण व्रतना) अनर्थदंड विरमण व्रतके (पत्र) पांच (अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य तो है किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं है, (तज्जहा) तद्यथा (ते) उनकी (आलोउ) आलोचना करता हू (कदप्पे) कामको जागृत करनेवाली कथाये की हो, (कुक्कुइए) कुचेष्टा की हो जैसेकि—भाडकी तरह विकृति भाव किया हो (मोहरिए) विचाररहित होकर वार्तालाप किया हो, तथा मुखारिवत् वर्त्ताव किया हो (संजुताहिगरणे) अधिकर-णका सयोग किया हो अर्थात् विना परिमाण शस्त्रादिका सग्रह किया हो (उवभोग परिभोग अइरत्ते) उपभोग वस्तुओमे वा परिभोग वस्तुओमे अति मूर्च्छित हो गया हो, तथा परिमाणसे अधिक सग्रह किया हो तब पाठ (उवभोग परिभोग अइरत्ते) ऐसे पढा जाता है (जो मे देवसि अइयारो कउ) जो मेने दिनमें अतिचार किए हुए है (तस्स मिच्छा मि दुक्कड) उन अतिचाररूप पापोंका फल निष्फल हो ॥

भावार्थ—आठवें अनर्थदंड विरमण व्रतमें बिना प्रयोजन काम करनेका परित्याग है जिसके करनेसे कर्म्मोंका महा बंध न हो और कार्य-सिद्धि कुछ भी न हो, जैसे अपध्यान करना, अथवा घृतादिके भाजनोंकी पूरी रक्षा न करनेसे पिपीलिकादि जीवोंकी हिंसा हो जाती है और इस व्रतके भी पांच ही अतिचार हैं जैसेकि—कन्दर्पका वार्ता करनी १ कुचेष्टा करना २ विचारमें शून्य होकर भाषण करना ३ अधिकरण (शस्त्रों)का संग्रह करना ४ उपभोग परिभोग पदार्थ प्रमाणसे अधिक सेवन करने तथा प्रमाण युक्तमें ही अति मूर्छित होना ५ इन पांचो ही अतिचारोंका परित्याग करके अष्टम व्रतको शुद्ध पालन करे, अनर्थदंड कदाचित् भी सेवन न करे ॥

अथ नवम व्रत विषय ॥

नवमु सामायिक व्रत सावज्जजोगनुं वेरमणं जाव नियमं पज्जुवासामि दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा एहवा सद्दहणा परूपणा करिये तिवारे फरसनाये करी शुद्ध एहवा नवमा सामायिक व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तज्जहा ते आलोउं मणदुप्पणिहाणे वयदुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे सामाइयस्स (सइविहुणे) अकरणियाए सामाइयस्स अणवुट्ठियस्स करणियाए जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

हिंदी पदार्थ—(नवमु) नवमा (सामायिक व्रत) समतारूप भाव

(सावंज्जजोगनु) पापयुक्त योगोसे (वेरमण) निवृत्ति करना (जाव-) यावत् काल पर्यन्त (नियम) सामायिकका नियम है तावत्काल पर्यन्त (पज्जुवासामि) पर्युपासना करता हू अर्थात् सामायिकके कालको सेवन करता हू (दुविह) द्विकरण (तिविहेण) तीन योगोसे जैसेकि--(न करेमि) सावद्य योगोंको सेवन न करूं (न कारवेमि) नाहीं आसेवन कराऊ (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (एहवा) इस प्रकारके (सद्दहणा) सामायिककी श्रद्धा [रुचि] (परूपणा) विवेचना (करिये तिवारे फरसनायें करी शुद्ध) जब करी जाये अर्थात् सामायिक स्पर्श की जाये तब ही शुद्ध होती हे (एहवा) ऐसे (नवमा) नवमे (सामायिक व्रतना) सामायिक व्रतके (पच) पाच (अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जानने योग्य तो हैं किन्तु (नसमायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं हैं (तउजहा) तद्यथा (ते) उनकी (आलोउ) आलोचना करता हू (मणदुप्पणिहाणे) मन दुष्ट वर्ताया हो (वयदुप्पणिहाणे) वचन दुष्ट उच्चारण किया हो (कायदुप्पणिहाणे) कायका योग दुष्ट धारण किया हो (सामाइयस्स अकरणियाए) शक्ति होने पर भी सामायिक न करी हो, तथा, सामायिक करके सामायिकके कालको विस्मृत कर दिया हो फिर (सामाइयस्स) सामायिकको (अणवुट्ठियस्स करणियाए) विना काल पार लिए हो (जो मे) जो मैं ने (देवसि) दिवस सम्बन्धि (अइयारो कउ) अतिचार किए हुए हैं (तस्स मिच्छा मि दुकड) उन अतिचार रूप पापोंका फल निष्फल हो ॥

भावार्थ—नवमे सामायिक व्रतको द्विकरण तीन योगोसे धारण करके पाचो ही अतिचारोको छोडे। सम, आय, इक, इनकी सधि करनेसे सामायिक शब्द सिद्ध होता हे, जिसका अर्थ ही यह है, कि जिसके करनेसे शान्तिका लाभ होवे उसीका ही नाम सामायिक व्रत हैं अपितु सावद्य योगोंका परित्याग कर फिर उस कालको शुभ क्रियामे ही व्यतीत करे ॥

अथ दशम व्रत विषय ॥

§ दशमुं देसावगासिक व्रत दिन प्रते प्रभात थकी प्रारंभीने पूर्वादिक छ दिशे जेटली भूमिका मोकली राखी छे ते उपरांत सइच्छाये कार्यें जइने पांच आस्रव सेववाना पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तथा जेटली भूमिका मोकली राखी छे ते मांहिज जे द्रव्यादिकनी मर्यादा कीधी छे ते भोगववी ते उपरात उवभोग परिभोग भोग निमित्ते भोगववाना पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं एगविह तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा दशवा देशावकाशिक व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तज्जहा ते आलोउ आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे,

§ वर्तमान कालमें सवर करनेकी प्रथा निम्नलिखितानुसार है—

द्रव्य थकी पाच आस्रव सेवनेका पच्चक्खाण, क्षेत्र थकी लोक प्रमाण तथा यावन्मात्र प्रमाण करना हो । काल थकी यावत्काल पर्यन्त बैठा रहु तथा मुहूर्त्तादि प्रमाण पर्यन्त । भाव थकी उपयोग सहित । गुण थकी निर्जराके हेत । दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भन्ते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ १ ॥

फिर पाच नमोकार मन्त्रको पढ़कर इसे पार लेते हैं ॥

सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, वहिया पुग्गल पक्खेवे जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(दशमु) दशवा (देसावगासिक व्रत) देशावकाशिक व्रत जिसका अर्थ है कि जो प्रथम व्रतोंमें वहुतसे पदार्थ अतीव विस्तारपूर्वक रक्खे हुए हैं उनको दिन प्रतिदिन संक्षिप्त करते रहना उसीका नाम देशावकाशिक व्रत है जैसेकि—(दिन प्रते प्रभात थकी प्रारभीने पूर्वादिक छ दिशे जेटली भूमिका मोकली राखी छे) दिन प्रति प्रात कालसे आरभ करके पूर्वादि पट् दिशाओंमें यावत् परिमाण गमन करना रक्खा हुआ है (ते उपरान्त) उसके विना (सइच्छार्ये) स्व इच्छा करके वा (कायाये) काय करके (जइने) जाकर (पाच आस्रव सेववाना पच्चक्खाण) पाच आस्रव [हिंसा, असत्य, चौर्य कर्म, मैथुन, परिग्रह, इनके] आसेवन करनेका प्रत्याख्यान (जाव) यावत् (अहोरत्तं) दिन और रात्रि पर्यन्त (दुविह) द्विकरण और (तिविहेण) तीन योगोसे जैसेकि—(न करेमि) स्वय आसेवन न करू (न कारवेमि) अन्य आत्माओंसे आसेवन न कराऊ (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काया करके (तथा जेटली भूमिका मोकली राखी छे) तथा यावत् भूमिका परिमाण युक्त है (ते माहीजे द्रव्यादिकनी मर्यादा कीधी छे) उसमें जो द्रव्यादिका परिमाण किया हुआ है (ते भोगववी) वही ग्रहण करने (ते उपरान्त) उनके विना (उवभोग) जो एक वार आसेवन करनेमें आवे वा (परिभोग) वारम्वार ग्रहण करनेमे आवे (भोग निमित्ते) भोगनेके वास्ते (भोगववाना) भोगनेका—आसेवन करनेका (पच्चक्खाण) प्रत्याख्यान (जाव) यावत् (अहोरत्त) दिन रात्रि पर्यन्त (एगविह) एक करण और (तिविहेण) तीन योगोसे जैसें कि—(न करेमि। न करू (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काय करके (एहवा) ऐसे (दशमा देशावकाशिक व्रतना) दशवें देशावकाशिक व्रतके (पच) पाच (अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जानने

योग्य तो है, किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं है (तज्जहा) तद्यथा (ते आलोउ) उनकी आलोचना करता हू (आणवणप्पओगे) परिमाणयुक्त भूमि हे उससे परेकी भूमिकासे आज्ञा देकर वस्तु मगवाई हो, (पेसवणप्पओगे) इसी प्रकार परिमाणसे बाह्य भूमिकामे वस्तु भेजी हो अर्थात् परिमाणसे नाह्य क्रय विक्रय करना (सद्दाणुवाइ) शब्दानुपाति अर्थात् सीमसे बाहिरके पुरुषोंको शब्द करके अपना ज्ञान करवा दिया हो इसी प्रकार (रूवाणुवाइ) अपना रूप दिखलाके काम सिद्ध किया हो (वहिया पुग्गल पक्खेवे) किसी वस्तुका पुद्गल प्रक्षेप करके बनलाया हो वा परिमागसे बाहिर पुरुषोंको पुद्गलादि द्वारा बुलाया हो (जो मे देवसि अइयारो कउ) जो मेरा दिन सम्बन्धि अतिचार किया हुआ है (तस्स मिच्छा मि दुक्कड) उन अतिचार रूप पापोंका फल निष्फल हो ॥

भावार्थ—दशवें देशावकाशिक व्रतमे प्रतिदिन भूमिका वा द्रव्यों का प्रमाग करे, फिर अतिचारोसे रहित होकर दशवें व्रतको शुद्ध पालन करे ओर चतुर्दश नियम भी इस व्रतके ही अन्तरगत रहते हैं। परिमाण करनेसे महा कर्मोंका आगमन बंद हो जाता है किन्तु स्वल्प कर्म रह जाते हैं अपितु इस व्रतमे उपयोग विशेष करना पडता है, फिर जिस भागसे यह व्रत ग्रहण किया हो उसी प्रकार इसको पूर्ण करे ॥

अथ एकादशम व्रत विषय ॥

इग्यारमु पडिपुण्ण पोषध व्रत असणं पा[...] खाइमं साइम चार आहारनुं पच्चक्खाण अब्रभ [...] वननु पच्चक्खाण अमुक मणि सुवर्ण माला व[...] विलेवणनुं पच्चक्खाण सत्य मूसलादिक सा[...] [...] अहोरत्त पज्जुवासामि [...]

तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा एहवो सद्दहणा परूपणा करीयें ते वारें फरसनाये करो शुद्ध एहवा इग्यारमा पडिपुण्णं पोषध व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जहा ते आलोउं अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सेज्जा संथारए अप्पमज्झिए दुप्पमज्झिए सेज्जा संथारए अप्पडिले- हिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि अप्पम- ज्झिए दुप्पमज्झिए उच्चार पासवण भूमि पोसहस्स सम्मं अणणुपालणियाय जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(इग्यारमु) एकादशवा (पडिपुण्ण) प्रतिपूर्ण अष्ट याम पर्य्यन्ते (पोषध) पौषध (व्रत) व्रत उसमे (असण) अन्नादि (पाणं) जलादि (खाइम) खाद्यम पक्वानादि (साइम) स्वाद्यम लव- गादि (चार आहारनु पच्चक्खाण) उक्त चतुर् आहारोंका प्रत्याख्यान (अबभ सेवननु पच्चक्खाण) अब्रह्मचर्य आसेवनका प्रत्याख्यान अर्थात् ब्रह्मचर्य धारण करना (अमुक) जो आभूषण सुखपूर्वक उतारे नहीं जाते जैसेकि–कर्णोंके आभूषण सो उनके बिना पौषध व्रतमे (मणि) हीरा वा चंद्रकांतादि मणि (सुवर्ण) स्वर्णके आभूषण रखनेका प्रत्या- ख्यान तथा (माला) पुष्पमाला (वन्नग) सुगंधयुक्त चूर्णादि और (वि- लेवणनुं पच्चक्खाण) विलेपन चंदन कर्पूर जलादिसे सत्र्पण करके मस्त- कादिमे लगानेका प्रत्याख्यान, फिर (सत्थ) शस्त्र (मूसलादिक) मूसलादि वा काष्टादि प्रमुख (सावज्ज जोगनु पच्चक्खाण) सावद्य [पाप] रूप योगोंका प्रत्याख्यान (जाव) यावत् (अहोरत्त) दिन और रात्रि पर्य्यन्त

(पज्जुवासामि) पर्युपासना करता हूं (दुविह) द्विकरण और (तिविहेण)
तीन योगोंसे जैसेकि–(न करोमि) न करूं (न कारवेमि) अन्य आ-
त्माओंसे न कराऊं (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (का-
यसा) काय करके (एहवी) इस प्रकार (सद्दहणा) पोषध व्रत करनेकी
श्रद्धा करना और (परूपणा करीयें) प्रतिपादन करना (ते वारें फरसनाये
करी शुद्ध) जिस समय पोषध व्रतग्रहण करना तब शुद्धिपूर्वक (एहवा)
ऐसे (इग्यारमा) एकादशवा (पडिपुण्ण) प्रतिपूर्ण अष्ट याम पर्यन्त (पौ
षध व्रतना) पौषध व्रतके (पन) पांच (अइयारा) अतिचार (जाणि-
यव्वा) जानने योग्य तो हैं किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं
हैं (तज्जहा) तद्यथा (ते आलोउ) उनकी आलोचना करता हूं (अप्पडि-
लेहिय दुप्पडिलेहिय सेज्जा सथारए) अप्रतिलेखित वा दु प्रतिलेखित शय्या
सस्तारक अर्थात् जिस स्थानमें पौषध व्रत धारण किया है वही शय्या
और तृणादिका आसन किया है सस्तारक उनोको प्रथम तो देखा ही
नहीं यदि देखा है तो सम्यग् प्रकारसे नहीं इसी प्रकार आगे भी जानना
जैसेकि–(अप्पमज्जिए दुप्पमज्जिए सेज्जा सथारए) शय्या सस्तारकको
अप्रमार्जित किया हो वा दु प्रमार्जित किया हो, प्रथम तो शय्या सस्तारक
प्रमार्जित किया ही नहीं यदि किया है तो दुष्ट प्रकारसे इसी प्रकार
(अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि) प्रथम तो प्रतिलेख
नना नहीं की जैसेकि–उच्चार (पूरीष) विष्टाकी वा (पासवण) [प्रस्रवण]
मूत्रकी (वण) मलादिककी भूमि फिर (अप्पमज्जिए दुप्पमज्जिए उच्चार
पासवण भूमि) विष्टा और मूत्रकी भूमि प्रमार्जन नहीं की वा दुष्ट प्रकारसे
प्रमार्जन की है (पोसहस्स) पौषधको (सम्म) सम्यग् प्रकारसे (अण-
णुपालणयाय) पालन न किया हो जैसेकि–पौषधोपवासमे भोजनकी चिंता वा
अन्य प्रकारसे चिंता करनी (जो मे देवसि अइयारो कउ) जो मैंने दिवस
सम्बन्धि अतिचार किया हुआ है (तस्स मिच्छा मि दुक्कड) उन अतिचारो-
का पापरूप फल निष्फल हो ॥

भावार्थ—एकादश पोपधोपवास व्रतमे चतुर् आहारका प्रत्याख्यान करके फिर ब्रह्मचर्यको धारण करे। फिर शरीरके शृंगारका भी परित्याग करे, और शस्त्रादिको भी पास न रक्खे, अष्ट प्रहर पर्य्यन्त द्विकरण तीन योगोंसे सावद्य कर्मका त्याग करके धर्म ध्यानमें समय व्यतीत करे, और पाचो ही अतिचारोंको दूर करके उक्त व्रतको सम्यग् पालन करे॥

अथ द्वादश व्रत विषय ॥

वारमु अतिसिथंविभाग व्रत समणे निग्गंथे फासुयं एसणिज्जेणं असण, पाण, खाइमं, साइमेणं, वत्थ, पडिग्गह, कंवल, पायपुच्छणेणं, पाडिहारिय, पीढ, फलग, सेज्जा संथारएणं ओसह भेसज्जेणं पडिलाभेमाणे विहरामि एहवी सद्दहणा परूपणा फरसनायें करीशुद्ध एहवा वारमा अतिथिसंविभाग व्रतना पच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तज्जहा ते आलोउं सचित्त निक्खेवणिया सचित्त पिहणिया कालाइकम्मे परोवएसे मच्छरियाए जो मे देवसि अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(वारमु) द्वादशवा (अतिथि) अतिथि अर्थात् न तिथि अतिथि जिसके आनेकी तिथि नियत न हो, उसका ही नाम अतिथि है अर्थात साधु है (सविभाग व्रत) उसके साथ अपने आहारमेसे सविभाग करना सोई अतिथि सविभाग व्रत है (समणे निग्गथे) श्रमण निग्रथको (फासुय) प्राशूक अचित्त (एसणिज्जेण) एषणीय उद्गमादि दोषोसे रहित (असण) अन्न (पाण) पानी (खाइम) खाद्यम् पक्वान्नादि (साइमेण) स्वाद्यम् सुपारी आदि तथा (वत्थ) वस्त्र (पाडिग्गह) पात्र (कवल)

कवल [लोई प्रमुख] (पाय पुच्छणेण) पादपोंछन अर्थात् पादोंकी रजादिके दूर करनेवाला वस्त्रखंड (पाडिहारिय) जो वस्तु देने योग्य होती है अर्थात् जिसको विहरके साधु फिर दे सक्ता हो, जैसेकि-(पीढ) चौंकी (फलग) फलग [तख्तपोसादि] (सेज्जा) शय्या (संथारए) तृणादिका संस्तारक (ओसह) औषध (भेसज्जेग) बहुतसी औषधियोंके संयोगसे जो वस्तु निष्पन्न हुई है, उसको भेषज कहते हैं (पडिलाभेमाणे) देता हुआ (विहरामि) विचरता हूं वा विचरूंगा (एहवी सद्दहणा) इस प्रकारसे श्रद्धान वा (परूपणा) उपदेश करना (फरसनाये करी शुद्ध) वा स्पर्श करनेसे जो शुद्ध होता है (एहवा) ऐसे (बारमा) द्वादशवा (अतिथिसंविभाग) अतिथिसंविभाग (ननना) व्रतके (पंच) पांच (अइयारा) अतिचार हैं, जो (जाणियव्वा) जानने योग्य तो हैं किन्तु (न समायरियव्वा) आचरणे योग्य नहीं है (तंजहा) तद्यथा (ते आलोऊ) उनकी आलोचना करता हूं (सचित्त निक्खेवणिया) न देनेकी बुद्धिसे अचित्त निर्दोष वस्तुको सचित्त वस्तु पर रख दिया हो, जैसे दुग्धको सचित्त जलोपरि रख देना (सचित्त पिहणिया) इसी प्रकार अचित्त निर्दोष वस्तुपर सचित्त वस्तु रख दी हो, जैसे दुग्धोपरि सचित्त जल रख देना (कालाइक्कम्मे) जिन पदार्थोंका समय अतिक्रम हो गया है मुनियोको उनके देनेकी विज्ञप्ति की हो, तथा अकालमे जिस समय मुनि भिक्षाको नहीं जा सकते उस कालमे आहारके लिए प्रार्थना करनी (परोवएसे) न देनेकी बुद्धिसे अपनी वस्तु अन्यकी कह दी हो, तथा अपने हाथोंसे दान न देकर अन्यको उपदेश करना कि-स्वामीजी को तू ही अन्न पानी दे दे क्योंकि दान देनेमे ही तात्पर्य है मेरे तेरेसे क्या (मच्छरियाए) मत्सरता [ईर्ष्या] मे दान दिया हो, जैसेकि-अमुक पुरुष दानसे प्रसिद्ध हो रहा है, मैं भी वैसा हो जाऊ सो (जो मे देवसि अइयारो कउ) जो मैंने दिनमे अतिचार किए हैं (तस्स मिच्छा मि दुक्कडं) उनसे पीछे हटता हूं, दुष्कृत मेरे अकरणीय है ॥

भावार्थ—द्वादशवें व्रतमें यह अधिकार है, कि–श्रावक साधु निर्दोष अन्नपानी देवे और जो उन्होंके लेनेयोग्य पदार्थ हैं, वे भी निर्दो ही दिलवावें। फिर पांचों ही अतिचारोंको वर्जके उक्त व्रतको शुद्धतापूर्व धारण करे ॥

फिर सलेखनाका पाठ पठन करे।

अथ संलेखना विषय ॥

अपच्छिम मारणंतिय सलेहणा झूसणा आराहणा पोषधशाला पूंजी पूंजीने उच्चार पासवण भूमिका पडिलेही पडिलेहीने गमणागमणे पडिक्कमि पडिक्कमिने दर्भादिक संथारो संथरि संथरिने दर्भादिक संथारो दुरूहि दुरूहिने पूर्व तथा उत्तर दिशि पल्यंकादिक आसने बेसी बेसीने करयल संपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजली त्तिकट्टु एवं वयासी नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जावसपत्ताणं एम अनंता सिद्धजीने नमस्कार करोने जयवंता वर्तमान तीर्थंकरने नमस्कार करीने पोताना धर्माचार्यने नमस्कार करीने साधु प्रमुख चारे तीर्थ खमावीने सर्व जीव राशि खमावीने पूर्वे जे व्रत आदर्यां छे तेना जे अतिचार दोष लाग्या होए ते सर्वने अलोइ पडिक्कमी निंदा निशल्य थईने सर्व पाणाइवायं पच्चक्खामि सव्व मुसावायं पच्चक्खामि

सव्वं अदिन्नादाणं पञ्चक्खामि सव्वं मेहुणं पञ्चक्खामि सव्वं परिग्गहं पञ्चक्खामि सव्वं कोह माण जाव मिच्छा दंसण सल्ल अकरणिज्जं जोगं पञ्चक्खामि जावज्जीवाय तिविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि करतंपि नाणुजाणामि मणसा वयसा कायसा एम अठारे पापस्थानक पञ्चक्खीने सव्वं असण पाणं खाइमं साइमं चउव्विहपि आहारं पञ्चक्खामि जावजीवाय एम चारे आहार पञ्चक्खीने जंपियं इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं मणुन्न मणामं विज्जं विसासियं समयं अणुमयं वहुमय भंड करंड समाणं रयण करंडगभूय माणं सियं माणं उण्हं माण खुहा माणं पिवासा माणं वाला माण चोरा माण दंसगा माणं मसगा माण वाहिय पित्तियं कप्फियं संभिय सन्निवाहिय विविहा रोगायंका परिसहा उवसग्गा फासा फुसंत्ति एवं पीयणं चरिमेहिं उस्सास निस्सासेहिं वोसिरामि त्तिकट्ठु एम शरीर वोसिरावीने कालं अणवकंक्खमाणे विहरामि एहवी सद्दहणा परूपणा करिए तिवारे फरसनायें करी शुद्ध एहवा अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झूसणा आराहणाना पंच अइयारा पयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जहा ते आलोउं इह लोगा ससप्पओगे, परलोगा सं-

भावार्थ—द्वादशवें व्रतमे यह अधिकार है, कि–श्रावक साधुको निर्दोष अन्नपानी देवे और जो उन्होंके लेनेयोग्य पदार्थ हैं, वे भी निर्दोष ही दिलवावे। फिर पाचों ही अतिचारोको वर्जके उक्त व्रतको शुद्धतापूर्वक धारण करे ॥

फिर सलेखनाका पाठ पठन करे।

अथ संलेखना विषय ॥

अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झूसणा आराहणा पोषधशाला पूंजी पूंजीने उच्चार पासवण भूमिका पडिलेही पडिलेहीनें गमणागमणे पडिक्कमि पडिक्कमिने दर्भादिक संथारो संथरि संथरिने दर्भादिक संथारो दुरूहि दुरूहिने पूर्व तथा उत्तर दिशि पल्यंकादिक आसने बेसी बेसीने करयल संपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजली त्तिकट्टु एवं वयासी नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जावसपत्ताणं एम अनंता सिद्धजीने नमस्कार करीने जयवंता वर्तमान तीर्थंकरने नमस्कार करीने पोताना धम्माचार्यने नमस्कार करीने साधु प्रमुख चारे तीर्थ खमावीने सर्व जीव राशि खमावीने पूर्वे जे व्रत आदर्यां छे तेना जे अतिचार दोष लाग्या होए ते सर्वने अलोइ पडिक्कमी निंदा निशल्य थईने सर्व पाणाइवायं पच्चक्खामि सव्व मुसावायं पच्चक्खामि

सव्वं अदिन्नादाणं पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि सव्वं परिग्गह पच्चक्खामि सव्वं कोहं माणं जाव मिच्छा दंसण सल्ल अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि जावजीवाय तिविह तिविहेणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि नाणुजाणामि मणसा वयसा कायसा एम अठारे पापस्थानक पच्चक्खीने सव्वं असणं पाणं खाइमं साइम चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जाव जीवाय एम चारे आहार पच्चक्खीने जंपियं इमं सरीर इट्ठ कंतं पियं मणुन्न मणामं घिज्जं विसासियं समयं अणुमयं बहुमय भंड करंड समाणं रयण करंडगभूय माणं सियं माणं उण्हं माणं खुहा माणं पिवासा माणं वाला माणं चोरा माण दंसगा माणं मसगा माणं वाहिय पित्तियं कप्फियं संभिय सन्निवाहिय विविहा रोगायंका परिसहा उवसग्गा फासा फुसंत्ति एवं पीयण चरिमेहिं उस्सास निस्सासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु एम शरीर वोसिरावीने कालं अणवकंक्खमाणे विहरामि एहवी सद्दहणा परूपणा करिए तिवारे फरसनाये करी शुद्ध एहवा अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झूसणा आराहणाना पंच अइयारा पयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तंज्जहा ते आलोउं इह लोगाससप्पओगे, परलोगा सं-

सप्पओगे, जीविया संसप्पओगे, मरणा संसप्पओगे कामभोगा संसप्पओगे जो मे देवसि अइयारो कउ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

हिंदी पदार्थ—(अपच्छिम मारणंतिय) मृत्युके समीप आ जानेपर (सलेहणा) सलेखना करनी चाहिये जोकि (झूसणा) आत्माको कर्मोसे भिन्न करनेवाली है, (आराहणा) आराधना करके फिर (पोपध-शाला) पौपधशाला (पूजी पूजीने) प्रमार्जन करके (उच्चार पासवण भूमिका) उच्चार [विष्टा] (पासवण) मूत्रकी भूमि (पडिलेही पडिलेहीने) प्रतिलेखन करके (गमणागमणे) फिर आने जानेसे जो विराधना होती है उससे (पडिक्कमिने) पीछे हटके (दर्भादिक सथारो सथरी सथरीने) दर्भा-दिका आसन बिछाकर (दर्भादिक सथारो दुरुही दुरुहिने) फिर दर्भादिक सथारोपरि आरूढ होकर (पूर्व तथा उत्तर दिशि) पूर्व तथा उत्तर दिशाओंमें (पल्यकादिक) पर्य्यंकादिक (आसने बेसीने) आसन पर बैठकर फिर (करयल) दोनो हाथ (सपरिग्गहिय) जोड कर (सिरसावत्त) शिरसे आवर्त्तन करता हुआ (मत्थए अजली त्तिकट्टु) मस्तक पर दोनो हाथ जोडकर फिर ऐसे करके (एव वयासी) ऐसे कहे (नमोत्थुण) नम-स्कार हो (अरिहताण) श्री अरिहतोंको (भगवताण) भगवतोको (जा-वसपत्ताण) यावत जो मुक्तिको प्राप्त हुए हैं (एम अनना सिद्धजीने) इसी प्रकार अनन सिद्धोको (नमस्कार करीने) नमस्कार करके (पछी पोताना) फिर अपने (धर्माचार्यने) धर्माचार्यजीको (नमस्कार करीने) नमस्कार करके [साधु साध्वी श्रावक श्राविका रूप] चार तीर्थ खमावीने (साधु प्रमुख) चारो ही तीर्थोको क्षमावणा करके (पूर्वे जे व्रत आदरचा छे) पहले जो व्रत ग्रहण किए हुये हे (तेना जे अतिचार दोप लाग्या होए) उनमे जो अतिचार रूप दोष लगा हो (ते

सर्वे समारी समारीने गुर्वादिक पासे) वह सर्व स्मृति करके गुरु आदिके समीप (आलोइ) आलोचन करके (पडिकमी) प्रतिक्रमण करके (निंदी) आत्मशाक्षिसे निंदा करके (गरहि) गुरुकी साक्षिसे गर्हना करके (निशल्य थईने) फिर शल्यसे रहित होकर (सव्व पाणाइवाय) सर्व प्रकारसे प्राणातिपातका (पच्चक्खामि) मैं प्रत्याख्यान करता हू (सव्व मुसावाय) सर्व प्रकारसे मृषावादका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हू (सव्व अदिन्नादाण पच्चक्खामि) सर्व प्रकारसे अदत्तादान [चोरी] का प्रत्याख्यान करता हू (सव्व मेहुण पच्चक्खामि) सर्व प्रकारसे मैथुन कर्मका प्रत्याख्यान करता हू (सव्व परिग्गह पच्चक्खामि) और सर्व प्रकार परिग्रहका भी प्रत्याख्यान करता हू (सव्व कोह) सर्व प्रकारसे क्रोध (माण) मान (माया) छल (लोभ) लोभको (जावमिच्छा दंसण सल्ल) यावत् मिथ्या दर्शन शल्य पर्य्यन्त अष्टादश पापोको छोडता हू, तथा (सव्व अकरणिज्ज) सर्व प्रकारसे अकरणिय कृतोंका (पच्चक्खामि) मै प्रत्याख्यान करता हू (जावज्जीवाय) यावज्जीव पर्य्यन्त (तिविहं) तीन करण और (तिविहेण) तीन योगोसे जैसेकि—(न करेमि) न करू (न कारवेमि) नाही औरोसे कराऊ (करतंपि नाणुजाणामि) जो अकृत्य कार्य करते हैं उन्होंकी अनुमोदना भी नहीं करू (मणसा) मन करके (वयसा) वचन करके (कायसा) काया करके (एम अढारे पाप स्थानक पच्चक्खीने) इस प्रकार अष्टादश पापस्थानकोंका प्रत्याख्यान करके फिर (सव्व) सर्व प्रकारसे (असण) अन्न (पाण) जल (खाइम) मेवादि (साइम) मुखवास प्रमुख (चउव्विहंपि आहार पच्चक्खामि) इन चारोही आहारोंका प्रत्याख्यान करता हू (जावज्जीवाय) यावज्जीव पर्य्यन्त। फिर (जंपिय इम सरीर) जो प्रिय है यह प्रत्यक्ष मेरा शरीर (इट्ठ) इष्टकारी हे (कंत) कांतियुक्त हे (पीय) प्रीतियुक्त है (मणुन्न) मनोज्ञ हे (मणाम) अत्यन्त मनोज्ञ है (धिज्ज) धैर्य रूप है (विसासिय) विश्वा

सजन्य है (समय) सम्मत है (अणुमय) विशेष सम्मत है (वहुमयं) वहुतही मानने योग्य है (भड करड समाण) आभूपणोके करड [डव्वे] समान है (रयण करड समाण) रत्नोके कराडियेके समान है (माण सिय) न मुझको शीत लगे (माण उण्ह) न उष्ण लगे (माण खुहा) न क्षुधा लगे (माण पिवासा) नाही पियास [तृष्णा] लगे (माण वाला) नाही मुझको सर्प स्पर्श करे (माण चोरा) नाही मुझको चौरोका भय होवे (माण दसगा) नाही मुझको दश मत्सरादि खेदित करे (माण मसगा) न मुझको मशक आदि दुख देवें (माण वाहिय) न मुझको व्याधि और (पित्तियं) पित्त होवे (कफ्फिय संभियं) महान् भयकर कफ वा श्लेष्म उत्पन्न होवे (सन्निवाहिय) नाही मुझको सन्निपात रोग उत्पन्न होवे (विविहा रोगायका) नाही मुझको विविध प्रकारके रोगोका उपसर्ग (परिसहा उवसग्गा) नाही मुझको परीषहोका उपसर्ग होवे (फासा फुसत्ति) जो स्पर्श उत्पन्न होते है उनसे रक्षा करता हुआ (एव पियण) मैं ऐसे अपने प्रिय शरीरको (चरमेहिं) अतके (उस्सास निस्सासेहिं) श्वासोच्छ्वास पर्यन्त (वोसिरामि) छोडता हू (त्तिकट्टु) ऐसे कहकर (एम शरीर वोसिराविने) और इसी प्रकार शरीरके ममत्व भावको त्याग कर (काल अणवकरवमाणे) जीवन मरणकी आकाक्षा न करता हुआ (विहरामि) विचरता हू वा विचरूगा (एहवी सद्दहणा परूपणा करीए) इस प्रकारसे श्रद्धा वा प्रतिपादनता सदैव काल ही करनी चाहिये, किन्तु (निवारे फरसनायें करी शुद्ध) जिस समय सलेखना की जाए तव स्पर्शना करके शुद्ध होती है (एहवा) ऐसे (अपच्छिम) अन्तिम (मारणातिय) मृत्युके समीप (सलेहणाना) सलेखनाके (झूसणा) कर्मोंके क्षय करनेके मार्गके (पच) पाच (अइयारा) अतिचार (जाणियव्वा) जाननीय हैं (न समायरियव्वा) किन्तु आचरणे योग्य नहीं हैं (तज्जहा) तद्यथा (ते आलोउ) उनकी आलोचना करता हू (इह लोगाससप्पओगे) इस लोगमें चक्रवर्त्यादि पदवियोकी आशाका प्रयोग करना

हिंदी पदार्थ—(एम समकितपूर्वक) इस प्रकार सम्यक्त्वपूर्वक (बार व्रत सलेखणा सहित) द्वादश व्रत और सलेखनायुक्त (एहने विषय) इनके विषय (जे कोई) यदि कोई (अतिक्रम) मनके द्वारा नियम किये हुए पदार्थोंकी इच्छा करना उसका नाम अतिक्रम हे (व्यतिक्रम) जो वचनसे कहा जाए कि मै नियमको भग करूंगा उसका नाम व्यतिक्रम हे (अतिचार) जो कायद्वारा वस्तु भोगनेके लिये हाथमे ली जाये, (अणाचार) और भोग ली हो उसका नाम अनाचार हे (जाणता) जान करके (अजाणता) न जानते हुए (मन वचन कायाये करी) मन वचन काय करके (सेव्यो होय) दोषसेवन किए हों (सेवराव्यो होय) अन्य आत्माओको आसेवन करनेका उपदेश दिया हो (सेवता प्रत्ये अणुमोद्यो होय) जो अतिचारोको सेवन करते है उन्होंकी अनुमोदना की हो (ते अनता सिद्ध केवलीनी साखे) उनको अनत सिद्ध केवलियोंकी साक्षिसे (मिच्छा मि दुक्कड) उस दुष्कृतसे पीछे हटता हू ॥

भावार्थ—सम्यक्त्वपूर्वक द्वादश व्रत सलेखनापूर्वक इनके विषय यदि कोई अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जानते हुए, वा न जानते हुए मन वचन काया करके यादि आप सेवन किए हो वा अन्य जीवोको उपदेश किया हो जो आसेवन करते हैं उन्होंकी अनुमोदना करी हो तो उस अतिचार रूप दोषसे केवली भगवान् वा सिद्ध भगवानोकी साक्षिसे मैं पीछे हटता हू ॥

अठारे पापस्थानक—प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य १४ परपरिवाद १५ रति अरति १६ मायामोसो १७ मिथ्यात्व दर्शनशल्य १८

एवं १८ पापस्थानक माहेलुं जे कोई पापस्थानक महारे जीवें मनें वचनें कायायें करी सेव्युं होय सेवराव्युं होय सेवता प्रत्ये भलु जाण्युं होय ते अनंता सिद्ध केवलीनी साखें मिच्छा मि दुक्कड ॥

हिंदी पदार्थ—(अठारे पापस्थानक) अष्टादश पापस्थानकोंके भेद निम्न प्रकारसे हैं (प्राणातिपात) जीवहिंसा (मृषावाद) असत्य भाषण करना (अदत्तादान) चौर्य कर्म (मैथुन) अब्रह्मचर्य (परिग्रह) धनादिकी आकांक्षा (क्रोध) रोष करना (मान) अहंकार (माया) छल (लोभ) तृष्णाकी वृद्धि (राग) काम रागादि (द्वेष) प्रतिकूलता (कलह) क्लेषभाव (अभ्याख्यान) असत्य दोषारोपण करना (पैशुन्य) चुगली करना (परपरिवाद) अन्य आत्माओंका निंदा करनी (रति अरति) विषय विकारोंकी प्राप्तिमें हर्ष और अप्राप्तिमे शोक करना (मायामोसो) कपटसे मृषावाद बोलना (मिथ्या दर्शन शल्य) मिथ्या दर्शनका शल्य रखना (एवं अठारे पापस्थानक) इस प्रकारसे अष्टादश जो पापस्थानकोंके भेद है सो यह (माहेलु जे कोई पापस्थानक महारे जीवे मनें वचने कायाये करी) मैंसे कोई भी पापस्थानक मैंने तीन योगोंसे (सेव्या होय) सेवन किये हुए हो (सेवराव्या होय) अन्य जीवोंसे आसेवन करवाये हों, (सेवता प्रत्ये भलु जाण्यु होय) जो आसेवन करते है उन्होंकी अनुमोदना करी हो (ते अनंता सिद्ध केवलीनी साखें) उन दोषोंसे अनंत सिद्ध केवलियोंकी साक्षिसे (मिच्छा मि दुक्कड) मैं पीछे हटता हूं ॥

भावार्थ—अष्टादश पापोंको तीन करण और तीनो योगोंसे परिहार करे जो पूर्वोक्त लिखे गए हे। फिर (इच्छामि ठामि, का पाठ पढे जो पूर्व लिखा गया हे। फिर खडा होकर निम्न प्रकारसे पढे ॥

तस्स धम्मस्स केवलि पण्णत्तस्स अब्भुट्ठि

ओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए तिविहेणं पडिक्कंतो वंदामि जिण चउव्वीस ॥

हिंदी पदार्थ—(तस्स) उस (केवलि) श्री केवली (पण्णत्तस्स) भापित (धम्मस्स) धर्मके विषय (अब्भुट्ठिओमि) अभ्युत्थित [खडा] होता हू (आराहणाए) आराधन करनेके वास्ते (विरओमि) निवृत्ति करता हू (विराहणाए) विराधनासे (तिविहेण) त्रिविध मन वचन काय करके (पडिक्कतो) पीछे हटता हू और (वदामि जिण चउव्वीस) मे चौवीस तीर्थंकरोको वन्दना करता हू ॥

भावार्थ—श्री केवलीभापित धर्ममे उपस्थित होकर सयममे लगे हुए अतिचारोंसे निवृत्ति करे, और चतुर्विंशति तीर्थंकर देवोको वदना करे। फिर (इच्छामि खमासमणो) के पाठसे दो वार गुरुदेवको वन्दना नमस्कार करे और यथाशक्ति पाच पदोको वदना नमस्कार करे ॥ फिर निम्न लिखित पाठ पढे ।

अनंत चौवीसीते नमो, सिद्ध अनंता कोड़। केवल ज्ञानी थे वरसभी, वदु वे कर जोड़ ॥१॥ दो कोड़ो केवलधरा, विहरमान जिन वीस। सहस्र युगल कोड़ी नमुं, साधु वंदु निसदीस ॥ २ ॥

हिंदी पदार्थ—(अनत चौवीसीते नमो) अनत चतुर्विंशति तीर्थंकरोको नमस्कार करता हू, (सिद्ध अनता कोड) और अनत कोटि प्रमाण सिद्धोको भी नमस्कार करता हू (केवल ज्ञानी थे वरसभी) केवलज्ञानके धारक मुनि वा स्थविर पदवाले जो मुनि हैं उन सर्वोको (वदु वे कर जोड) दोनों हाथ जोडकर वदना नमस्कार करता हू॥ (दो कोडी केवलधरा) जघन्य वर्तमानकालमे महाविदेह आदि क्षेत्रोंमे दो कोटि प्रमाण केवल ज्ञानके धारी मुनि और (विहरमान जिन वीस) वर्तमान जघन्य बीस

अरिहत हैं अर्थात् जो अनरग विभूति वा बाह्य विभूतिसे विभूषित है उनको भी वदना नमस्कार करता हूं, किन्तु (सहस युगल कोडी नमु) दो सहस्त्र प्रमाण जो जघन्य पदवाले (साधु वदु निसदीस) साधु हैं उनको भी अहोरात्र वदना नमस्कार करता हू ॥

भावार्थ—अरिहत सिद्ध भगवंतोको वदना नमस्कार करे, फिर सर्व केवली सर्व स्थविर पदधारी मुनियोंको भी वदना नमस्कार करे, तदनतर जो स्तोकमे स्तोक दो क्रोड केवली तथा बीस अरिहत और दो सहस्त्र मुनि होते हैं, उनको भी वंदना नमस्कार करे॥ पुन जो ८४ लक्ष प्रमाण जीवोंकी योनिया है, उन सबोंमे निम्नलिखितानुसार क्षमावणा करे—

सप्त लक्ष पृथ्वी काया, सप्त लक्ष अप काया, सप्त लक्ष तेजु काया, सप्त लक्ष वायु काया, दश लक्ष प्रत्येक वनस्पती काया, चतुर्दश लक्ष साधारण वनस्पती काया, दो लक्ष बेंद्रिय, दो लक्ष त्रिइंद्रिय, दो लक्ष चउरिंद्रिय, चतुर्लक्ष देव, चतुर्लक्ष नारकी, चतुर्लक्ष तिर्यच पंचेंद्रिय, चतुर्दश लक्ष मनुष्य, एवं चौरासी लक्ष जीवा योनिमेसे यदि मैंने कोई जीव हनन किया हो तथा अन्यको मारनेका उपदेश दिया हो, वा हनन कर्ताओंकी अनुमोदना की हो, वे सर्व मन वचन काया करके *१८२४१२० प्रकारे तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

* जीवतत्त्वके ५६३ भेदोंको अभिहयादि दशोंके साथ गुणाकार करनेसे ५६३० भेद होते हैं। फिर इनको राग और द्वेषके साथ द्विगुणाकार करनेसे ११२६० भेद बनते हैं। फिर इन्हींको मन वचन और कायाके साथ

फिर ऐसे पढे—

खामे मि सव्वे जीवा। सव्वे जीवा खमंतु मे॥
मित्ती मे सव्व भूएसु। वेरं मज्झं न केणई॥ १॥
एवमहं आलोइयं। निंदियं गरहियं। दुगंच्छियं सम्मं
तिविहेण पडिक्कतो वंदामि जिण चउव्वीसं॥ २॥

हिंदी पदार्थ—(खामे मि सव्वे जीवा) मै खमावना करता हू सर्व जीवोंसे और (सव्वे जीवा खमतु मे) हे सर्व जीवो मेरेपर तुम भी क्षमा करो, क्योंकि (मित्ती मे सव्व भूएसु) मैत्री भाव है मेरा सर्व जीवोमे (वेरं मज्झ न केणई) वैरभाव मेरा किसी जीवके साथ भी नहीं है॥ (एवमहं) इस प्रकार मैने (आलोइय) आलोचना की (निंदिय) आत्मसाक्षिसे निंदा की (गरहिय) गुरु की साक्षिसे विशेष निंदा की (दुगच्छिय) दुर्गंच्छा की (सम्म) सम्यक् प्रकारसे (तिविहेण) तीन योगोसे (पडिक्कतो) मै पापसे पीछे हटता हू और (वदामि) वदना करता हू (जिण चउव्वीस) चतुर्विंशति तीर्थंकरोको॥

भावार्थ—सर्व जीवोके साथ क्षमावना करके पापसे सर्वथा ही पीछे हटकर चौवीस तीर्थंकरोको वन्दना नमस्कार करे॥

इस प्रकार सामायिक, चउविसथा, वदना, पडिक्कमणा, यह चार आवश्यक पूर्ण हुए। फिर "तिक्खुत्तो" के पाठसे पाचवें आवश्यककी आज्ञा लेकर निम्न प्रकारसे कायोत्सर्ग करे—

गुणाकार करनेसे ३३७८० भेद होते हैं, अपितु इनको ही तीन करणोंके साथ सयोजन करनेसे १०१३४० भेद बन जाते हैं, अपितु इनको भी फिर तीन कालके साथ गुणाकार करनेसे ३०४०२० भेद हो जाते है। फिर इनको अर्हन, सिद्ध, साधु, देव, गुरु, और आत्मा इन प्रकार छे गुणाकार करनेसे १८२४१२० भेद बनते है अर्थात् इस प्रकारसे मैं मिच्छा मि दुक्कड देता हू और फिर पाप कर्म न करनेकी इच्छा करता हू॥

आवस्सही इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसि ज्ञान दर्शन चरित्ताचरित्त तप अतिचार प्रायच्छित विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

हिंदी पदार्थ—(आवस्सही इच्छाकारेण संदिसह भगवन्) हे भगवन्! मेरी इच्छा है, अवश्य करणीय कार्यको करनेके लिए, आप आज्ञा दीजिए (देवसि) दिन सम्बन्धि (ज्ञान) ज्ञान (दर्शन) सम्यक्त्व (चरित्ताचरित्त) देशवृतिमे (तप) तपमे (अतिचार) अतिचारोके (प्रायच्छित) प्रायश्चित्तकी (विशोधनार्थ) विशुद्धिके वास्ते (करेमि) करता हू (काउस्सग्ग) कायोत्सर्गको ॥

भावार्थ—फिर अवश्य ही करने योग्य पचम आवश्यकको भगवान्‌की आज्ञा लेकर ज्ञान दर्शन चारित्राचारित्रकी विशुद्धिके अर्थ कायोत्सर्ग (ध्यान) करे। फिर नवकारका' पाठ 'करेमि भंते सामाइय' का पाठ 'इच्छामि ठामि' का पाठ 'तस्सोत्तरी करणेण' का पाठ, इनको पूर्ण पढ़कर ध्यान करे। देवसीमे चार और राईसीमें दो लोगस्सका ध्यान करे। पक्षिप्रतिक्रमणमे द्वादश लोगस्सका ध्यान और चतुर्मासी प्रतिक्रमणमें २० लोगस्सका ध्यान तथा सम्वत्सरी प्रतिक्रमणमे ४० लोगस्सका ध्यान करे। यह सम्प्रदायिक मानना है, अपितु सूत्रमें तपकी चिंत्वना ही कथन की गई है, क्योंकि अतिचारोकी विशुद्धि तपसे ही होती है। फिर नमोकार पढ़के ध्यान पारे और एक लोगस्सका पाठ पढके दो वार 'इच्छामि खमासमणो' का पाठ पढे। इस प्रकार पाचमा आवश्यक पूर्ण होता है ॥

फिर षष्टम पच्चक्खाण आवश्यक करे। यदि गुरुजी हो तो उन्होसे प्रत्याख्यान करा लेवे, नहीं तो यथाशक्ति तप आप ही ग्रहण कर लेवे ॥

॥ अथ पष्टम प्रत्याख्यान आवश्यक पाठ ॥

मुहूर्तके प्रत्याख्यानका मूल सूत्र ।

उग्गयसूरे नमुक्कार सहियं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असण पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे एक मुहूर्त प्रमाण (नमुक्कार सहिय) नमस्कार सहित अर्थात् नमोस्कारके विना पढे पारना नहीं करना इस प्रकारसे (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हू (चउव्विहंपि आहार) चतुर्विधके आहारका, जैसेकि–(असण) अन्नकी जाति (पाण) पानीकी जाति (खाइम) फलादिकी जाति (साइम) चूर्णादिकी जाति, किन्तु निम्नलिखित आगार है जैसेकि–(अन्नत्थणा भोगेण) यदि विना उपयोग वस्तु खाई जाए अर्थात् भक्षण करते समय प्रत्याख्यानकी स्मृति न रहे तो तथा (सहस्सागारेण) अकस्मात् कोई वस्तु मुखमे जा पडे जैसे दधिको मथन करते हुए तक्र [छाछ] की बिंदु मुखमें जा पडती है, सो इन दोनों आगारोसे चार प्रकारके आहारको (वोसिरामि) छोडता हू क्योंकि इन आगारोसे प्रत्याख्यान भग नहीं होता ॥

भावार्थ—उक्त पाठ मुहूर्त मात्रके प्रत्याख्यान करनेका है। यदि स्वयमेव प्रत्याख्यान करना हो तब "पच्चक्खामि" और "वोसिरामि" ऐसे शब्द कहने चाहियें, यदि गुरु करवावे तब वे "पच्चक्खाइ" और "वोसिरइ" ऐसे कहे। इस प्रत्याख्यानमे दो आगार होते हैं जैसे कि (अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग (सहसागारेण) और अकस्मात्, इन आगारोसे प्रत्याख्यान भग नहीं होता है। इसी प्रकार सर्व प्रत्याख्यानोंमे जानना चाहिये, और चतुर्विधके आहारका सर्वथा ही इस नियममें प्रत्याख्यान है ॥

अथ द्वितीय प्रत्याख्यान एक प्रहर वा सार्द्ध पौरुषीका ॥

*उग्गयसूरे पोरिसिं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भो-गेणं सहसागारेणं पच्छन्नेकालेण दिसामोहेणं[2] स-व्व समाहिवत्ति आगारेण वोसिरामि ॥ २ ॥ एवं साढ्ढपोरिसिय पच्चक्खामि । जाव वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे पोरिसिं पच्चक्खामि) सूर्यके उदय होनेपर प्रहर [एक यामका] मत्याख्यान करता हूं (चउव्विहंपि) चतु-र्विधके ('आहार) आहारका जैसेकि—(असण) अन्नकी जाति (पाण) पानीकी जाति (खाइम) खादिमकी (साइम) स्वादिमकी जाति, निम्नलि-खित आगारपूर्वक जैसेकि—(अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग (सह-सागारेण) अकस्मात्—विना इच्छा (पच्छन्न कालेण) मेघादिक होनेपर सूर्य प्रच्छन्न हो गया हो जैसे सतत वर्षाके होनेपर सूर्य दिखाई नहीं देता तब पारणा कर लेनेस प्रत्याख्यान भंग नहीं होता, (दिसामोहेण) दिशाके मूढ होनेपर जैसेकि—पूर्वको पश्चिम ज्ञात कर लिया पश्चिमको पूर्व ज्ञात किया तब खाना खाया गया तो प्रत्याख्यान अभंग है (सव्व समाहिवत्ति आगारेण) प्रत्याख्यान सर्न प्रकारकी शारीरिक समाधि होनेपर ही है। इन आगारों सहित मैं चारो प्रकारके आहारको (वोसिरामि) छोड़ता हूं॥ इसी प्रकार सार्द्ध पौरुषीका पाठ जान लेना।

भावार्थ—एक यामका प्रत्याख्यान करना हो वा सार्द्ध पौरुषीका नियम करना हो तो पूर्वोक्त पाठ पढ़े जिसमे गृहस्थिके लिये (अन्नत्थणा

---

* इन सर्व प्रत्याख्यानोंके पाठमें जो मुनियोंके लिए आगारोंके पाठ हैं वे सब दिए हैं ॥

१ साहुवयणेण । २ महत्तरागारेण ॥

भोगेण) (सहसागारेण) (पच्छन्न कालेणं) (दिसामोहेण) (सव्व समाहि वत्ति आगारेण) ये पाच आगार होते हैं ॥

अथ तृतीय पुरिमड्ढ (दो याम)का प्रत्याख्यान ॥

उग्गयसूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं पच्छन्न कालेणं दिसामोहेण§ सव्व समाहिवत्ति आगारेण वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे पुरिमड्ढ पच्चक्खामि) सूर्यके उदय होने पर दो प्रहरका प्रत्याख्यान करता हू (चउव्विहंपि आहार) चतुर्विधके आहारका जैसेकि (असण पाण खाइम साइम) अन्नपानीकी जाति खादिमकी जाति सादिमकी जाति (अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग भक्षण की जावे (सहसागारेण) अकस्मात् ग्रहण की जावे (पच्छन्न कालेण) सूर्यके प्रच्छन्न होनेपर (दिसामोहेण) दिग्मूढ होनेपर–दिशा भूलनेपर (सव्व समाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधि होनेपर (वोसिरामि) उक्त आगारों संयुक्त मै चतुर्विधके आहारको छोडता हू ॥

भावार्थ—पुरिमड्ढके प्रत्याख्यानमे चतुर्विधिके आहारके अन्यतर अन्नत्थणा भोगेण, सहस्सागारेण, पच्छन्न कालेण, दिसामोहेण, सव्व समाहि वत्ति यागारेण, यह आगार होते हैं ॥

अथ विगइ निविगइके प्रत्याख्यानका पाठ ॥

विगइओ निविगइओ पच्चक्खामि अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं* सव्व समाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥

---

§ साहुवयणेण । महत्तरागारेण ॥

* लेवालेवेणवा । गिहत्थ ससट्ठेण । उक्खित्त विवेगेण । पडुच्च मक्खिएण । परिठावणियागारेण । महत्तरागारेण ।

हिंदी पदार्थ—(विगइओ निविगइओ) विगय जो आत्माको विकृतिभाव करनेवाले हैं जैसेकि—दुग्ध, दधि, घृत, नवनीत, गुड, तैल इत्यादिके प्रत्याख्यानको निविगइ कहते हैं सो निविगइका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं तथा वर्त्तमान कालमे उक्त प्रत्याख्यानका निर्वाह छाछद्वारा किया जाता है। छाछमे रोटी डालकर आसेवन करनेकी प्रथा वर्त्तमान कालमे है। सो उक्त प्रत्याख्यानमे आगारोंकी संख्या लिखते है—यथा (सव्व समाहि वत्ति आगारेणं) सर्व प्रकारकी समाधिके होनेपर (वोसिरामि) इस प्रकारसे विगयको छोडता हूं॥

भावार्थ—विगयके प्रत्याख्यानमे पूर्वोक्त तीन आगार होते है॥

अथ विगयका एकासनयुक्त प्रत्याख्यानका पाठ॥

उग्गयसूरे निविगइ एकासणं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं[१] सव्व समाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे निविगइ पच्चक्खामि) सूर्य उदयसे निविगइका प्रत्याख्यान करता हूं, फिर (एकासण) एक आसनपर अन्नादि भक्षण करनेका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं। पुन (तिविहंपि) त्रिविधके (आहार) आहारका भी प्रत्याख्यान करता हूं जैसेकि—(असण) अन्नकी जाति (खाइम) खादिमकी जाति (साइम) स्वादिमकी जाति (अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग (सहसागारेण) अकस्मात् (सव्व समाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधि होनेपर (वोसिरामि) तीन आहारका प्रत्याख्यान करता हू॥

भावार्थ—एकासनयुक्त तीन आहारका निविगइमें प्रत्याख्यान करे,

---

१ लेवालेवेणवा, गिहत्थ संसट्ठेण, उक्खित्त विवेगेण, पडुच्च मक्खिएण, पारिठावणियागारेण, महत्तरागारेण॥

किन्तु पानी प्राशुक ही आसेवन करे । आगार सर्व प्राग्वत् ही हैं, इसमें विशेष विगयोका ही प्रत्याख्यान है किन्तु वर्त्तमान कालमे तक्रके साथ इस नियमको पाला जाता है । स्कधविगय, धारविगयके प्रत्याख्यानका विवेक होना चाहिये ॥

अथ एकासन द्विआसन करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे एगासण बियासणं पच्चक्खामि दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं[1] आउट्टण पसारेणं गुरु अब्भुठाणेणं [2]सव्व समाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (एगासणं) एकासन वा (बियासण) दो आसन, एक वार भोजन करनेको एकासन और द्विवार भोजन करनेको दो आसन कहते हैं, उनके उपरान्त (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हू । (दुविह) यदि पानी और स्वादिम ग्रहण करने होवे तो अशन और खादिमका प्रत्याख्यान करे, यदि एकासनके पीछे केवल प्राशुक पानी ही ग्रहण करना होवे तो (तिविहपि) तीन प्रकारके आहारका प्रत्याख्यान करे जैसेकि–(असण) अन्नकी जाति (खाइम) खादिमकी जाति (साइम) स्वादिमकी जाति, किन्तु निम्नलिखित आगारानुकूल जैसेकि–(अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग (सहस्सागारेण) अकस्मात् (आउट्टण पसारेण) शरीरके सकोचन [सुकेडने] और पसारनेपर क्योंकि यदि एकासनमें अगोपाग सकोचन और पसारन किये जाए तो प्रत्याख्यान भग न होगा (गुरु अब्भुठाणेण) गुरुके आनेपर यदि विनयके वास्ते उठना पडे (सव्व समाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधिके रहने पर (वोसिरामि) उक्त आगारोंयुक्त तीन आहारको छोडता हू ॥

---

१ सागारियागारेण । २ परिठावणियागारेण, महत्तरागारेण ॥

भावार्थ—एकासन वा द्विआसनमे द्विविध वा त्रिविधके आहारका प्रत्याख्यान करे किन्तु ऊपर कहे आगारोंके संयुक्त प्रत्याख्यान करे।

अथ एकलठाण करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे एगलठाण पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेण[1] गुरु अब्भुठाणेण[2] सव्व समाहिवत्ति आगारेण वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (एगलठाण) एक स्थानके विना अन्य स्थानपर गमन करके आहार करनेका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं, तथा प्रत्याख्यान करता हूं (चउव्विहंपि) चतुर्विधके आहारका जैसेकि-(असण) अन्नकी जातिका (पाण) पानीकी जातिका (खाइम) खादिमकी जातिका (साइम) स्वादिमकी जातिका, किन्तु (अन्नत्थणा भोगेण) इतना विशेष है कि—विना उपयोग आहारादि आसेवन किया जाये (सहसागारेण) अकस्मात् (गुरु अब्भुठाणेण) गुरुकी विनयके लिए खडा होनेपर (सव्व समाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधिके रहनेपर (वोसिरामि) चारो आहारोको छोडता हूं ॥

भावार्थ—एकलस्थानका प्रत्याख्यान एकासनके तुल्य ही है, किन्तु विशेष इतना ही है कि—एकासनमें अंगोपांगके संकोचन पसारनेका त्याग नहीं है, एकलस्थानमे अंगोपांगके संकोचने और पसारनेका परित्याग होता है।

अथ आविल करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे आविल पच्चक्खामि तिविहंपि आ-

---

१ सागारियागारेण। २ पारिठावणियागारेण, महत्तरागारेण ॥

हारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सह-सागारेणं* सव्व समाहिवत्ति आगारेणं पाणस्स ले-वेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा वहुलेवेण वा ससित्थे-ण वा असित्थेण वा वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (आविल) आविल ग्रहण करता हू और (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हू (तिविहंपि) त्रिविधिके (आहार) आहारका जैसेकि—(असण) अन्नकी जातिका (खाइमं) खादिमकी जातिका (साइम) स्वादिमकी जातिका (अन्नत्थणा भोगेण) अपितु विना उपयोग ग्रहण की जाए (सहसागारेण) अकस्मात् वस्तु ग्रहण की जाए (सव्व समाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधिके होनेपर (पाणस्स) पानीकी अपेक्षा इतने प्रकारके जलके भिन्न अन्य पानीका नियम जैसेकि—(लेवेण) लेपयुक्त पानी जैसे खर्जूरादिका (वा) अथवा (अलेवण) अलेप जल जैसे धोवनका पानी (वा) अथवा (अच्छेण) शुद्ध निर्मल उष्ण पानी (वा) अथवा (बहुलेवेण) बहु लेप युक्त जैसे तण्डुलोंका [चावलों]का धोवन (वा) अथवा (ससित्थेण) सीत्थयुक्त [कणसहित] जैसे चूनका धोवन (असित्थेण वा) सीथ राहित जल जैसे प्राशुक जल इनके विना अन्य प्रकारके जलोंको (वोसिरामि) छोडता हू ॥

भावार्थ—आविल उसको कहते है जो विगयादिसे रहित केवल प्राशुक जलके साथ ही रोटिया ग्रहण की जावे उसका ही नाम आविल है, किन्तु आगार पूर्ववत् ही है। केवल पानी षट्प्रकारसे वर्णन किया गया है जैसेकि—लेपयुक्त १ अलेपयुक्त २ शुद्ध उष्ण पानी ३ बहु लेपयुक्त ४ सीथयुक्त ५ असीथयुक्त ६, इनके विना अन्य जलका परित्याग करे ॥

---

* लेवालेवेण, गिहत्थ संसट्ठेण, उक्खित्त विवेगेण, पारिठावणियागारेण, महत्तरागारेण ॥

' अथ चउविहाहार उपवासका पाठ ॥

उग्गयसूरे अभ्भत्तठ पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं[1] सव्व समाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥ ८ ॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (अभ्भतठ) अभक्तार्थे अर्थात् अन्नपानीको ग्रहण न करनेके वास्ते (चउव्विहपि आहार) चार प्रकारके आहारका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हू जैसेकि–(असग) अन्नकी जाति (पाण) पानीकी जाति (खाइम) खादिमकी जाति किन्तु (अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग आहार ग्रहण किया जाये (सहसागारेण) अकस्मात् ग्रहण किया जाए (सव्व समाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधि होनेपर (वोसिरामि) चार प्रकारके आहारको त्यागता हू ॥

भावार्थ—चतुर्विधके आहारके प्रत्याख्यानमें पूर्वोक्त आगार रक्खे जाते हैं इसको चउव्विहार व्रत भी कहते है ॥

अथ तिविहाहार उपवास करनेका पाठ ॥

उग्गयसूरे अभ्भत्तठं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं[1] सव्व समाहिवत्ति आगारेणं पाणाहार पोरिसिं पच्चक्खामि अन्नत्थणा भोगेण सहसागारेणं

---

१ पारिठावणियागारेण, महत्तरागारेण.

पच्छन्न कालेणं दिसामोहेणं सव्व समाहिवत्ति आ-गारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरामि॥

हिंदी पदार्थ—(उग्गयसूरे) सूर्य उदयसे (अभत्तह) अभक्तार्थे अर्थात् उपवास करनेके वास्ते उपवासका (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं और (तिविहंपि आहार) त्रिविधिके आहारका भी प्रत्याख्यान करता हूं जैसेकि–(असण) अन्नकी जाति (खाइम) खादिमकी जाति (साइम) स्वादिमकी जाति, किन्तु निम्नलिखित आगार इसमें भी हैं जैसेकि–(अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग कोई वस्तु आसेवन की जाए वा (सहसागारेण) अकस्मात् ग्रहण की जाए तथा (सव्व समाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधिके होनेपर। और तिविहाहार उपवासमें पानीका त्याग नहीं है, यदि किसीने पानीका त्याग प्रहर वा द्विप्रहरपर्यंत त्याग कर दिया हो तो उसके लिये भी निम्न प्रकारसे आगार होते है। यथा–(पाणाहार पोरिसिं) पानीके आहारका प्रहर पर्य्यन्त वा द्वि प्रहर पर्य्यन्त (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं, परतु निम्नलिखित आगार पानीके त्यागमे भी होते है जैसेकि–(अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग पानी पिया गया हो, (सहसागारेण) अकस्मात् पानीका बिंदु मुखमे चला गया हो (पच्छन्न कालेण) कालके प्रच्छन्न होनेपर जैसेकि–बाद-लादिमे दिनकी भ्रान्ति पड जाती है (दिसामोहेण) दिग्मूढ होनेपर [दि-शा भूलनेपर] (सव्व समाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधि रहने पर, फिर (पाणस्स) पानी षट् प्रकारसे ग्रहण करे जैसेकि–(लेवेण) लेपयुक्त पानी (वा) अथवा (अलेवेण) लेपसे रहित पानी (वा) अथवा (अच्छेण) शुद्ध उष्ण पानी (वा) अथवा (बहुलेवेण) बहु लेपयुक्त जैसे चावलोंका धोवन (वा) अथवा (ससित्थेण) कण आदि सहित जैसे-

कि–चूणका धोवन (वा) अथवा (असित्थेण) प्राशुक जल (वोसिरामि) इनके विना और पानीका त्याग करता हू ॥

भावार्थ—निविहाहार उपवासमें केवल जलका त्याग नहीं होता है। सो जलके त्यागका विवर्ण मूल अर्थमें दिखलाया गया है। आगार सर्व पूर्ववत् ही हैं ॥

अथ रात्रि चउव्विहाहारं तथा भवचरमका प्रत्याख्यान करनेका पाठ ॥

दिवस चरिमं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं[1] सव्व समाहिवत्ति आगारेणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(दिवस चरिम) उसको कहते हैं जो दिनके साथ ही चार आहारका प्रत्याख्यान किया जाए, यावत् काल सूर्य उदय न हो तब तक चार आहारका त्याग ही रहे, परन्तु जब सस्तारक [अनशन] करना हो तब भवचरम कहा जाता है, सो दिवसचरममें चार प्रकारके आहारका त्याग होता है जैसेकि–(पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हू (चउव्विहंपि) चतुर्विधिके (आहार) आहारका (असण) अन्नका (पाण) पानीका (खाइम) खादिमका (साइम) स्वादिमका किन्तु निम्नलिखित आगार इसमें भी हैं जैसेकि–(अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग वस्तु ग्रहण की जाये वा (सहसागारेण) अकस्मात् वस्तु ग्रहण की जाये (सव्व समाहिवत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधिके रहनेपर (वोसिरामि) उक्त आगारोयुक्त मैं चतुर्विधिके आहारको छोडता हू ॥

भावार्थ—दिवसचरममे अथवा भवचरममें चतुर्विधिके आहारका प्रत्याख्यान किया जाता है जिसमें चार आगार होते हैं जैसेकि–अन्नत्थणा

---

१ महसत्तागारेणं ।

भोगेण, सहसागारेण, सव्व समाहिवत्ति आगारेण, इनका अर्थ पूर्ववत् ही जान लेना ॥

अथ ‡गंठिसह मुठिसह अभिग्रहके करनेका पाठ ॥

सूरे उग्गय गंठिसहियं मुठिसहियं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं* सव्व समाहिवत्ति आगारेण वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(सूरे उग्गय) सूर्य उदयसे (गंठिसहिय, मुठिसहिय) ग्रंथि सहित वा मुष्टि सहित (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हूं (चउव्विहंपि) चतुर्विधिके (आहार) आहारका जैसेकि—(असण) अन्नकी जाति (पाण) पानीकी जाति (खाइम) स्वादिमकी जाति (साइम) स्वादिमकी जाति (अन्नत्थणा भोगेण) अपितु बिना उपयोग वस्तु ग्रहण की जाये (सहसागारेण) अकस्मात् ग्रहण की जाये (सव्व स-

---

‡ जिस प्रत्याख्यानके पारणेका समय आ जाए तब निम्नलिखित सूत्र अवश्य ही पढना चाहिए। समकायेण, न फासिय, न पालिय, न तिरिय, न किट्टिय, न सोहिय, न आराहिय आणाये, अणुपालिता न भवइ, तस्स मिच्छा मि दुक्कड ॥

किन्तु जिस प्रत्याख्यानका समय पूर्ण हो उसका नाम अवश्य ही लेना चाहिए ॥ तथा जब गुरोंसे प्रत्याख्यान करा लेवे तब निम्नलिखित पाठ भी पढे ॥ सामायिक १ चउवीसत्था २ वदना ३ पडिक्कमणा ४ पचम काउसग्ग ५ षष्टम पचक्खान ६ अतीत कालकी आलोयना वर्तमान कालका सम्वर अनागत कालका पचक्खाण भगवान् और गुरोंकी आज्ञा सहित हियाय सुहाय खमाय निस्सेस्साय अणुगामिताय भविस्सइ ॥ फिर दो नमोत्थुणके पाठोंको पठन करके सामायिकके कालको पूर्ण करे ॥

* महत्तरागारेणं।

माहिषत्ति आगारेण) सर्व प्रकारकी समाधिके होनेपर (वोसिरामि) आहारको छोडता हू ॥

भावार्थ—दोरादिकी गठिका अथवा मुष्टिबन्धादिका अभिग्रह करे जैसेकि-यावत् काल गाठ न खोलूगा तावत्काल पर्य्यन्त चतुरविधिके आहारका परित्याग करता हू। इसी प्रकार मुष्टि आदिकी भी सयोजना कर लेनी चाहिये ॥

अथ चतुर्दश नियम करनेवालेको दिशावकाशिक अभिग्रह करनेका पाठ ॥

देशावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खामि अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं वोसिरामि ॥

हिंदी पदार्थ—(देशावगासिय) देशावकाशिक व्रतका प्रमाण करना हो तथा (उवभोग) जो एकवार भोगनेमे आवे तथा (परिभोग) जो पुन पुन आसेवन करनेमे आवे (पच्चक्खामि) प्रत्याख्यान करता हू, किन्तु इतना विशेष है कि (अन्नत्थणा भोगेण) विना उपयोग ग्रहण की जाये वा (सहसागारेण) अकस्मात् ग्रहण की जाये (वोसिरामि) सो इन आगारोके साथ त्याग करता हू ॥

भावार्थ—नित्यम् प्रति देशावकाशिक व्रत धारण करना हो वा उपभोग परिभोगका परिमाण करना हो तो पूर्वोक्त आगारोंके साथ करना चाहिए, जिस करके व्रतमे किसी प्रकारसे भी दोष न लगे और चतुर्दश नियम अवश्य ही ग्रहण करने चाहिये ॥

इति श्री प्रत्याख्यान सूत्र हिंदी पदार्थयुक्त सम्पूर्णम्॥

इति श्री षडावश्यक सूत्र सम्पूर्णम् ॥

अथ तीन मनोर्थ विषय ॥

यह तीन मनोर्थ सर्व श्रावक वर्गको विचारने योग्य हैं जो निम्न लिखितानुसार हैं ॥

तिहि ठाणेहिं समणोवासय महाणिज्जरे महा पज्जवसा गे भवति कयाणं अहं अप्पं वा वहुयं वा परिग्गहं चइस्सामि। कयाणं अहं मुंडे भवित्ता आगारिउ अणगारियं पव्वइस्सामि । कयाणं अह अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झुसणा झुसिते भत्त पाण पडियाखित्ते पाउवगत कालं अणवकंखमाणे विहारिस्सामि एवं समणसा सवयसा सकायसा जागरमाणे पागडमाणे समणोवासय महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति ॥ ठाणाग सूत्र ठाणा ३–उद्देश ४ ॥

अर्थ—तीन कारणोंसे श्रावक कर्मोंकी परम निर्जरा करके ज्ञानको प्राप्त कर लेता है, जैसेकि–श्रावक यह विचार ना करेकि–कब मैं अल्प वा बहुत परिग्रहका त्याग करूंगा १ और कब मैं ससारको छोडकर दीक्षा ग्रहण करूंगा २ तथा कब मैं इस अनित्य ससारको त्यागकर अनशन व्रत धारण करके पादोपगमन अनशनके साथ मृत्युको प्राप्त होउगा, सो इस प्रकारकी भावना श्रावक मन वचन कायके साथ करता हुआ महाकर्मोंकी निर्जरा करके सम्यग् ज्ञानको प्राप्त हो जाता है ॥

सो सर्व सुज्ञ श्रावक वर्गको इस भावनाके द्वारा आत्माको विभूषित करना चाहिये ॥

श्रावकोको सामायिकके ३२ दोष भी दूर करने चाहियें जो निम्न लिखितानुसार हैं—

अथ द्वात्रिंशिनो दोषाणि ॥

दश मनके दोष ॥

१ अविवेक–विवेक न करना यह प्रथम दोष है ॥
२ यशाकाक्षा दोष–यशकी आकाक्षा करना दोष ॥
३ धनेच्छा दोष–धनकी इच्छा करना दोष ॥
४ गर्व दोष–अहङ्कार करना दोष ॥
५ भय दोष–भय करे तो दोष ॥
६ नियाणा दोष–किसी वस्तुकी आशा करे तो दोष ॥
७ सशय दोष–सामायिकमें सशय करे तो दोष ॥
८ कषाय दोष–सामायिकमें क्रोध मान माया और लोभ करे तो कषाय दोष होता है ॥
९ अविनय दोष–विनय न करे तो दोष ॥
१० अपमान दोष–सामायिकका अपमान करे तो दोष ॥
सो यह दश मनके दोष हैं ॥

दश वचनके दोष ॥

१ अलीक दोष–असत्य वचनका बोलना ॥
२ सहसाकार दोष–विना विचारे भाषण करना ॥
३ असाधारण दोष–सम्यक्त्वके नाश करनेवाले शब्दोका उच्चारना ॥
४ निरापेक्षा दोष–शास्त्रसे विरुद्ध बोलना ॥
५ सक्षेप दोष–सामायिकके सूत्रको सक्षेप करना ॥
६ क्लेष दोष–क्लेष करना ॥
७ विकथा दोष–धर्मोपदेश न करना ॥
८ हास्य दोष–किसीका हास्य करना ॥
९ अशुद्ध दोष–अशुद्ध पाठ पढे ॥

१० मुम्मण दोष—कुछ स्पष्ट कुछ अस्पष्ट ऐसे पाठ पढे तो सामायिक में दोष होता है ॥ सो यह १० वचनके दोष हैं ॥

बारह कायके दोष ॥

१ अयोग्यासन—विना योग्य आसनके ऊपर बैठना ॥
२ चलासन—अस्थिर आसन करना ॥
३ चलदृष्टि दोष—दृष्टिको स्थिर न करे ॥
४ सावद्य क्रिया—सावद्य कार्य करे ॥
५ आलम्बन दोष—भींतादिकी सहायतासे बैठे ॥
६ आकुंचन पसारण दोष—विना यत्न सांगोपांग आकुंचन पसारण करे॥
७ आलस्य दोष—आलस्य करना ॥
८ मोडन दोष—शरीरको मोडे ॥
९ मल दोष—शरीरका मल उतारना ।
१० विमासन दोष—संसारकी चिंता करना ॥
११ निद्रा दोष—सामायिकमें निद्रा लेना ॥
१२ वैयावृत्य—औरसे अपनी सेवा कराना ॥ सो यह सर्व एकत्व करनेसे ३२ दोष होते हैं, किन्तु इन दोषोंसे रहित सामायिक करे अपितु दोष दूर करनेका अधिकारी होवे क्योंकि अभ्यास करनेसे ही कार्य सिद्ध हो जाता है ॥

फिर श्रावक प्रतिक्रमण करके पश्चात् १४ नियम भी यथाशक्ति धारण करे—

१४ नियम गाथा सार्थ ॥

सच्चित्त १ दव्व २ विगई ३ पण्ही ४ तंबोल ५ वत्थ ६ कुसुमेषु ७ वाहण ८ सयण ९ विलेवण १० बंभं ११ दिसी १२ न्हाण १३ भत्तेसु १४ ॥

हिंदी पदार्थ—(सचित्त) पृथ्वी आदि सचित वस्तुका प्रमाण (दव्व) द्रव्यका प्रमाग जैसे अंगुली विना जो मुखमे डाला जाय वह सर्व द्रव्य है यथा दुग्ध १ खाड २ इत्यादि (विगई) विगय प्रमाण जैसे दुग्ध १ घृत २ तेल ३ नवनीत ४ गुड ५ दधि ६ मधु ७ इत्यादि, (पण्ही) जुत्यादिका प्रमाग (तंबोल) ताम्बुलादिका प्रमाण (वत्थ) वस्त्रोंका प्रमाग (कुसुमेसु) पुष्पोंका प्रमाण (वाहग) सवारी आदिका प्रमाण यथा घोडादि (सयण) शय्यादिका प्रमाण (विलेवण) विलेपनका प्रमाण जैसे नेत्राञ्जनादि (बंभ) ब्रह्मचर्यका धारण करना अब्रह्मचर्य्यका त्याग करना (दिसी) दिशाओंका प्रमाग (न्हाण) स्नानका प्रमाण यथा एक वार द्वि-वार इत्यादि (भत्तेसु) सर्व वस्तुके वजनका प्रमाण अर्थात् विना प्रमाण न ग्रहण करे ॥

भावार्थ—उक्त सूत्रमे यह वर्णन है कि गृहस्थों नित्यम् प्रति यथाशक्ति तृष्णाका निरोध करता हुआ विना प्रमाग कोई भी वस्तु ग्रहण न करे ॥

प्रतिक्रमणका मुख्य आशय ॥

प्रियवरो ! आवश्यकका आशय यह है कि सर्व प्राणियोसे मैत्रीभाव धारण करना और निज आत्माको सम्यक् ज्ञान सम्यक् दर्शन सम्यक् चरित्रमे आरूढ करना। पुन निज स्वरूपमें अनुप्रेक्षण करके तृष्णाको निरोध करना, आत्माको सदैव काल सदाचारमें लगाना और अपने पूर्व-कृत पापोंका पश्चाताप करते रहना किन्तु नूतन पापोंसे अपनी आत्माको बचाना। फिर ऐसे प्रार्थना करना कि हे सर्वज्ञ देव मैं आपके सत्योपदेशके प्रभावमे सर्व जीवोंका हितैषी बनना हू निज आत्माको अपने स्वरूप में लगाता हू। हे अजर! आपके कथन किए हुए सत्य पदार्थोंको यथावत् ज्ञात करके भव्य जीवोंको सन्मार्गमे स्थापन करू। इत्यादि अनुप्रेक्षा करके सर्व प्राणियों पर परोपकार करना यही आवश्यकका मुख्य आशय है ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ॥

❊ गुर्वावलि ❊

॥ प्राकृत काव्यम् ॥

अणुत्तरे सहस्स गुणेहिं जुत्तो,
सायरोवरवंति दीहदंसीअहियं ।
नाइस्स सण्णा सिरि मोत्तीरामं,
आयरिय आसी विसालकित्ती ॥१॥
तस्संतेवासी पुण्णपुंज्जस्सामी,
कुम्भ इव दंतो ससीव सोमो ।
थेरे मुणि गणवइय नामं,
गणावच्छेइए जिन संघ हिएसी ॥२॥
तस्स सीस्सेय महाणुभावो,
गुरुभत्तिकारय पण्णाल धीरो ।
विक्खाय कित्ती जयराम नामं,
रत्तोव्वएसुसयाऽप्पमत्तो ॥ ३ ॥
तस्स दिक्खिओ इंगियागारमंतो,
सुहुम नाणेसु अत्थि विसारय ।
नामत्थि जेस्सिं सिरि सालिग्गामं,
तेस्सिं प्पसाएण लिहियो च ग्गंथं ॥४॥
गिहीव्वया दप्पणय संतिकत्ता,
आवस्सय सुयं अघतिमिर हत्ता ।
निच्च किच्च बोहा वीरेण पण्णत्ता,
चरित्तदाता मुक्ख मग्गनेत्ता ॥ ५ ॥
इम्मस्स सुयस्स हिंदी पयत्थं,
तहेव भावत्थ सुयम विसुद्धं ।
लिहियं च अट्ठं गुरु प्पसाओ,
उवज्झाय आयारामेण मया ॥ ६ ॥